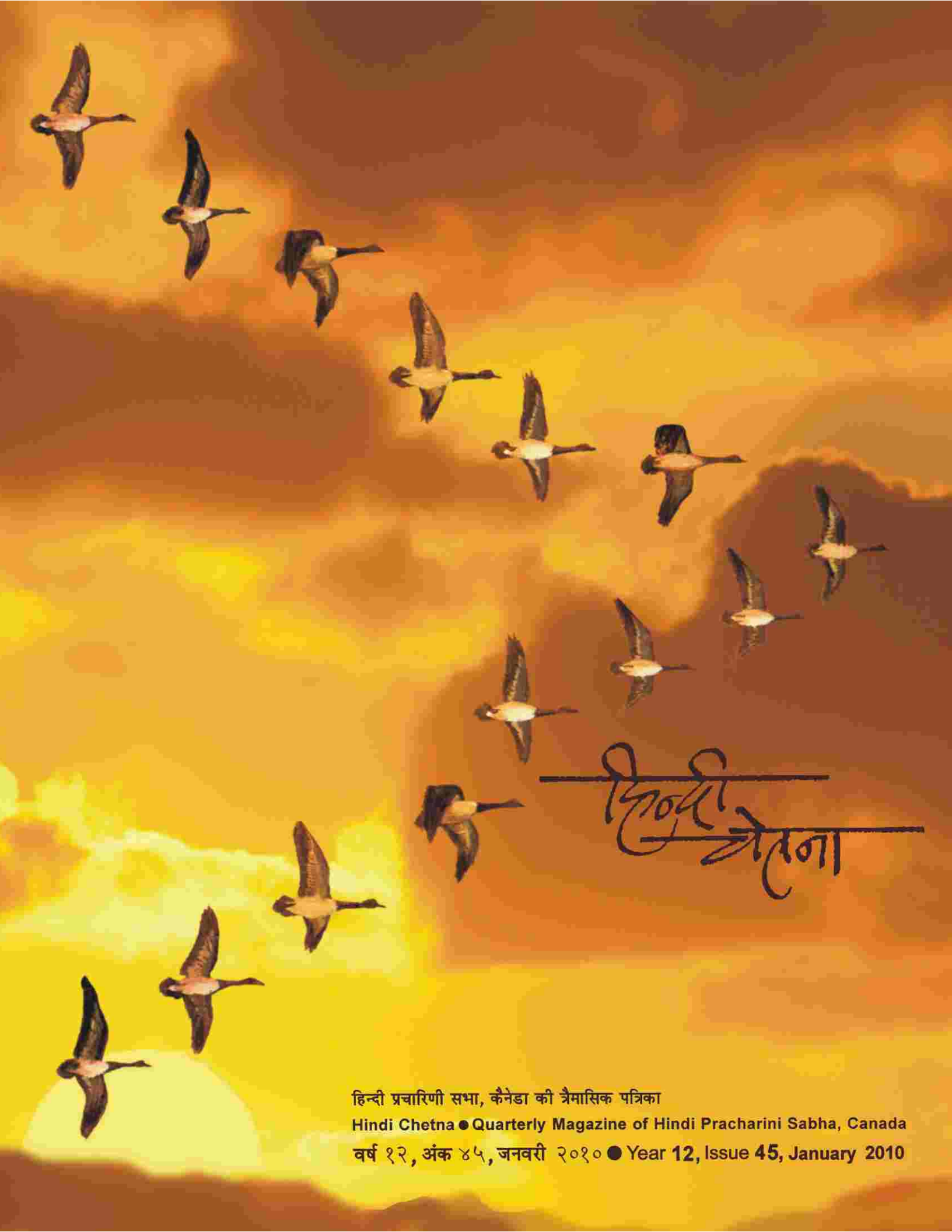

हिन्दी प्रचारिणी सभा, कैनेडा की त्रैमासिक पत्रिका
Hindi Chetna ● Quarterly Magazine of Hindi Pracharini Sabha, Canada
वर्ष १२, अंक ४५, जनवरी २०१० ● Year 12, Issue 45, January 2010

जितना आप सोच सकते हैं उससे कम में अपने अपने देश के साथ जुड़ें

Bell TV के साथ , केबल से 55% से भी अधिक कम कीमत पर[1], अपने देश से भी अधिक क्रिकेट देखने को अपना लक्ष्य बना सकते हैं। इस मौसम, खेल में शामिल हो जाओ।

दक्षिण एशियाई कोम्बो

SONY Entertainment Television

$10/MO.[2] 12 महीने के लिए

Bell TV बल्ले बाजी करने जा रहा है बड़ी विशेषताओं के साथ जैसे
. 500 से अधिक डिजिटल चैनल चुनाव के लिए अधिकाँश HD में मिलाकर
. उत्कृष्ट पिक्चर क्वालिटी नियमित केबल से 10 गुणा बेहतर
. शामिल करें चिन्ता मुक्त पूरा होम सेटप[3]

ICT North: 1 888 735-9777

Bell TV देखना अब हुआ बेहतर

Offer ends June. 30, 2009. Available where access and line of sight permit. Digital service fee ($3/mo. per account) extra. Upon early termination, price ajustment charges apply. Subject to change without notice. Taxes extra. Other conditions apply. (1) As of April. 1, 2009. Compared to Rogers' South Asian combo billed $24.95/mo. (2) With new account on a min. 2-yr. contract and subscription to South Asian combo at time of activation. Regular rates apply at the end of the promotional period. (3) Details at bell.ca/installationincluded.

इस अंक में

सम्पादकीय	03
पाती	04
घुमन्तु भारतीय का संपादक के नाम पत्र	05
लेख	07
प्रज्ञा परिशोधन	09
संस्मरण	12
हिन्दी ब्लॉग में इन दिनों	14
कहानी...	
अब के बिछुड़े - *सुदर्शन प्रियदर्शिनी*	19
मुन्ना - *डॉ. मधु संधु*	23
अमरीका वाला - *डॉ. आफ़रोज़ ताज*	27
जहां से चले थे - *मनमोहन गुप्ता मोनी*	31
लड़की थी वह - *डॉ. सुधाओम ढींगरा*	36
व्यंग्य - *समीर लाल समीर*	50
लघु कथाएं - *अखिलेश शुक्ल*	52
पुस्तक समीक्षा - *देवी नागरानी*	54
साहित्यिक समाचार	58
चित्र काव्य शाला	48
विलोम चित्र काव्य शाला	63
कविताएं...	
हमको ऐसे मिली जिंदगी - *शार्दुला नोगजा*	38
फिर कोयल को कैसे - *योगेन्द्र मौदगिल*	38
नया सबेरा - *बृजेन्द्र श्रीवास्तव उत्कर्ष*	39
नए साल की शुभकामनाएं - *देवमणि पाण्डेय*	39
मित्रता - *किरन सिंह*	41
आओ, नव वर्ष आओ - *साफिर समदर्शी*	41
सुहाने दिन - *पूर्णिमा वर्मन*	42
धर्म का मर्म - *जनक खन्ना*	42
संकल्प - *शशि पाधा*	43
नव वर्ष की बेला - *अमित कुमार सिंह*	44
नव वर्ष का चमत्कार - *किरण सिन्हा*	44
तुम्हारी और मेरी आवाज - *अभिनव शुक्ल*	47
पावन बेला - *अवनीश कुमार गुप्ता*	51
स्वागत नव वर्ष का - *भारतेंदु श्रीवास्तव*	63
नव वर्ष - *भगवत शरण श्रीवास्तव*	63

12 एक दरवाजा बंद हुआ तो दूसरा खुला

19 अब के बिछुड़े...

27 अमरीका वाला

36 लड़की थी वह

''हिन्दी चेतना'' सभी लेखकों का स्वागत करती है कि आप अपनी रचनायें प्रकाशन हेतु हमें भेजें। सम्पादकीय मण्डल की इच्छा है कि ''हिन्दी चेतना'' साहित्य की एक पूर्ण रूप से संतुलित पत्रिका हो, अर्थात साहित्य के सभी पक्षों का संतुलन। एक साहित्यिक पत्रिका में आलेख, कविता और कहानियों का उचित संतुलन होना आवश्यक है, ताकि हर वर्ग के पाठक पढ़ने का आनन्द प्राप्त कर सकें। इसीलिए हम सभी लेखकों को आमंत्रित करते हैं कि हमें अपनी मौलिक रचनाएँ ही भेजें। अगले अंक के लिए अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भेज दें। अगर संभव हो तो अपना चित्र भी साथ अवश्य भेजें।

रचनाएँ भेजते हुये निम्नलिखित नियमों का ध्यान रखें :

1. हिन्दी चेतना अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर तथा जनवरी में प्रकाशित होगी।
2. प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा।
3. पत्रिका में राजनैतिक तथा विवादास्पद विषयों पर लिखित रचनाएँ प्रकाशित नहीं की जायेंगी।
4. रचना के स्वीकार या अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार संपादक मंडल का होगा।
5. प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जायेगा।
6. पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक तथा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

•

संरक्षक एवं प्रमुख सम्पादक

श्री श्याम त्रिपाठी, कैनेडा

•

सम्पादक

डॉ. सुधा ओम ढींगरा, अमेरिका

•

सहयोगी सम्पादक

डॉ. निर्मला आदेश, कैनेडा
अभिनव शुक्ल, अमेरिका
आत्माराम शर्मा, भारत
अमित कुमार सिंह, भारत

•

परामर्श मंडल

पद्मश्री विजय चोपड़ा, भारत
मुख्य सम्पादक, पंजाब केसरी पत्र समूह
पूर्णिमा वर्मन, शारजाह
सम्पादक, अभिव्यक्ति, अनुभूति
तेजेन्द्र शर्मा, लंदन
महासचिव, कथा यू.के.
डॉ. इला प्रसाद, अमेरिका
सरोज सोनी, कैनेडा
राज महेश्वरी, कैनेडा
श्री नाथ द्विवेदी, कैनेडा
डॉ. कमल किशोर गोयनका, भारत
चाँद शुक्ला 'हदियाबादी', डेनमार्क
डायरेक्टर, रेडियो सबरंग,
अध्यक्ष, वैश्विक समुदाय रेडियो प्रसारण माध्यम

•

विदेश प्रतिनिधि

अनिल शर्मा, थाईलैंड
यास्मिन त्रिपाठी, फ्रांस
राजेश डागा, ओमान
उदित तिवारी, भारत
डॉ. अंजना संधीर, भारत
विनोद चन्द्र पाण्डेय, भारत

•

सहयोगी

सुषमा शर्मा, आलोक गुप्ता, भारत
डैनी कावल, कैनेडा

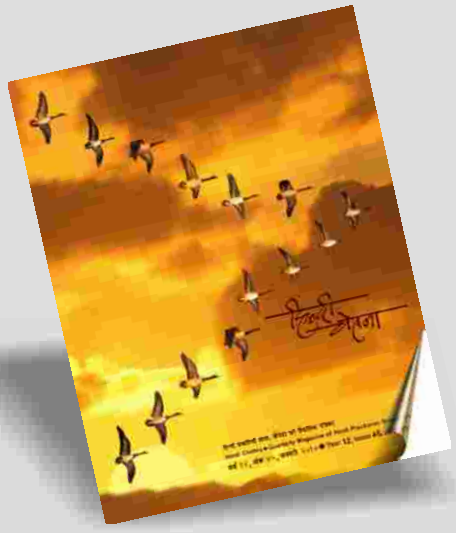

मुख पृष्ठ कलाकार : अरविन्द नराले
फोटो : डैनी कावल

हम हमेशा पंछी मुक्त गगन में, विचरे पंख पसार
पावन पालना, चन्द खिलौना, किलकें प्राण कुमार
- श्रीदेवी त्रिपाठी

माननीय पाठको!

जैसा कि आपको विदित है, हर वर्ष ''हिन्दी चेतना'' किसी न किसी महान साहित्यकार पर विशेषांक निकालती है। इस वर्ष का विशेषांक श्रद्धेय मदन मोहन मालवीय जी पर केन्द्रित है। आपकी रचनाओं का स्वागत है। रचनाएँ शीघ्र भेजने का अनुरोध है।

श्याम त्रिपाठी
(प्रमुख संपादक)

''अधेड़ उम्र'' में थामी कलम के अन्तर्गत आगामी अंक में आप कृपाल कौर और मालती सत्संगी की रचनाएँ पढ़ेंगे। आप भी कुछ कहना चाहें, उम्र की ओर ध्यान मत दीजिए। बस कलम उठा लें - और लिख डालें जो आपके मन में है।

– श्याम त्रिपाठी

Hindi Chetna is a literay magazine published quarterly in Toronto, Ontario under the editorship of Mr. Shiam Tripathi. Hindi Chetna aims to promote the Hindi language, Indian culture and the rich heritage of India to our children growing in the Canadian society. It focuses on Hindi Literature and encourages creative writers, young and old, in North America to write for the magazine. It serves to keep readers in touch with new trends in modern writing. Hindi Chetna has provided a forum for Hindi writers, poets and readers to maintain communication with each other through the magazine. It has brought many local and international writers together to foster the spirit of friendship and harmony.

HINDI CHETNA
6 Larksmere Court, Markham, Ontario, L3R 3R1
Phone : (905) 475 - 7165 Fax : (905) 475 - 8667
e-mail : hindicehetna@yahoo.ca

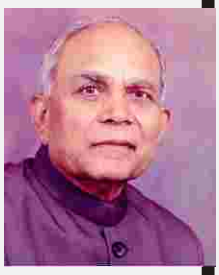

पाठको!

नव वर्ष का अंक आप को सौंपते हुए, मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है. 'हिन्दी चेतना' में नए-नए प्रतिभासंपन्न साहित्यकारों का संगम हमारे लिए गौरव की बात है. आज विदेशी धरती पर हिंदी के कई पुष्प खिल रहे हैं. कनाडा, अमेरिका में अनेक लेखक विभिन्न विधाओं में अपनी लेखनी के बल पर आश्चर्यजनक कार्य कर रहे हैं. हमारा प्रयास है कि हम उनके कृतित्व को आप तक पहुँचाएँ. उनके लेखन से आपको लाभान्वित कराएँ और इस पत्रिका को एक नया रूप-रंग दें. आपके सहयोग के बिना यह संभव नहीं. हम आपके लिए नए स्तम्भ लेकर आये हैं, आप उन्हें पढ़े और अपनी प्रतिक्रियाएं भेजें. यूँ तो 'हिन्दी चेतना' का हर अंक अपने आप में भिन्नता लिए होता है, किन्तु वर्ष में एक अंक किसी न किसी साहित्यकार पर विशेष होता है. २००८ में डॉ. नरेन्द्र कोहली और २००९ में डॉ. कामिल बुल्के पर हमने विशेषांक निकाले. हमें ख़ुशी है कि साहित्य के इन निर्माताओं से हम आपको मिला पाए. मॉरीशस सचिवालय से प्रकाशित होने वाले 'विश्व हिंदी समाचार' ने हिन्दी चेतना के कामिल बुल्के विशेषांक को उल्लेखित किया, इसके लिये हम सचिवालय के बहुत आभारी हैं.

हम पिछले अंक में आपको सूचित कर चुके हैं कि २०१० के अंत में हम मदनमोहन मालवीय जी पर विशेषांक निकालेंगे. हमें आशा है विश्व के हर कोने से हिंदी के बुद्धिजीवी इसमें भाग लेंगे.

हाँ एक बात जो मेरे मन को चुभती रहती है कि हमारी युवा पीढ़ी हमारी भाषा और संस्कृति से अलग होती जा रही है, हम उसे किस प्रकार बचाएँ, यह हर प्रवासी की समस्या है, इस पर विचार करना बहुत ज़रूरी है.

दूसरी बात आपके लिए ख़ुशी की सूचना है कि 'हिन्दी चेतना' की संरक्षक संस्था 'हिंदी प्रचारणी सभा' अब चैरिटवल संस्था हो गई है, अतः इस स्टेटस के अनुसार आपको कई परिवर्तन इस अंक में मिलेंगे.

'हिंदी चेतना' परिवार की ओर से आप सभी को नव वर्ष की शुभकामनाएँ. नया वर्ष आप सबके लिये ढेर सारी ख़ुशियाँ लेकर आये. विश्व में शांति हो और उच्च कोटि के साहित्य का सृजन हो, साहित्यकार सत्यम, शिवम्, सुन्दरम की भावना को लेकर साहित्य सर्जन करें.

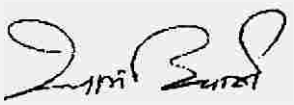

आपका
श्याम त्रिपाठी

हिन्दी चेतना को पढ़िये, पता है :
http://hindi-chetna.blogspot.com

हिन्दी चेतना की समीक्षा अवश्य देखें :
http://KathaChakra.blogspot.com

घर बैठे पुस्तकें प्राप्त करें :
http://www.pustak.org

हिन्दी चेतना को आप
ऑनलाइन भी पढ़ सकते हैं :
Visit our Web Site :
http://www.vibhom.com
or home page पर
publication में जाकर

पाती

आदरणीय सुधा जी,

आपका 'हिंदी चेतना' का ये अंक पूरा पढ़ गया हूँ. आपको और आपकी पूरी टीम को ढेरो बधाई. 'संस्कार शेष' (कृष्ण बिहारी) की कहानी काफी विचारोतेजक है और साथ ही पठनीय भी. रूपसिंह चंदेल का संस्मरण कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं की और इशारा करता है, साथ ही चाँद शुक्ल की गज़लें हमेशा की तरह नए अहसास लेकर आती हैं अपने पाठको के लिए... लघु कथाएँ अच्छी हैं और आत्माराम शर्मा का ब्लॉग चर्चा अभी पढ़ा नहीं है. पढ़ कर जरुर लिखूंगा. इतने अंक के लिए आपको एक बार फिर बधाई.

चंद्रपाल,
मुंबई

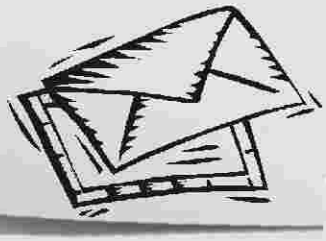

सुधा जी जब लिखने बैठती हैं, तो जिन छोटी-छोटी बातों को, यादों को, भावनाओं को जिस कोमलता से छूती हैं, वो सीधा मन के भीतर उतर जाता है, वो मौसी, वो खटिया, वो चाँद, वो खुला आसमान, वो आँचल की गर्माहट, मन के भीतर उतरकर मन की गहराई को नाप लेती है, फिर सीधा उसे आत्मा से जुड़ा देती है. शायद इसी लिए आपका नाम सुधा है. आपके लेखन में कोमलता है, गहराई है, नपे-तुले सधे शब्द हैं और इक लावा है, जो जीवंत धधकता है. मैं आपके जादुई लेखन के लिए आपका अभिनन्दन करती हूँ और बधाई देती हूँ.

रेखा भाटिया
शार्लट , साउथ कैरोलईना

आदरणीय त्रिपाठी साहब,

आज अचानक इंटरनेट सर्फ करते-करते आपकी हिन्दी पत्रिका - हिन्दी चेतना - का अक्टूबर 2009 अंक पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ. मैं अपनी प्रसन्नता को यहाँ शब्दों में बयान नहीं कर सकता. हिन्दुस्तान से बाहर रहकर आप जिस प्रकार से हिन्दी की सेवा कर रहे हैं वह वाकई साधुवादिता का कार्य है. आपको इस कार्य के लिए मेरी शुभकामनाएँ.

हिन्दी की सेवा करने का मैं भी इच्छुक हूँ और जब भी मौका मिलता है इस कार्य को करते हुए अपने को धन्य अनुभव करता हूँ. हिन्दी चेतना पढ़कर यह भी पता चला कि इसमें सब लोग अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं. आगामी जनवरी अंक के लिए मैं भी अपनी कुछ रचनाएँ भेजूंगा. यदि प्रकाशन योग्य हों तो पत्रिका में स्थान दीजिएगा.

एक बार पुन: आप सभी को हार्दिक धन्यवाद. शुभकामनाएँ और नमन. जय भारत, जय हिन्दी.

आपका ही
रजनीश दीक्षित, भारत

किन्हीं अपरिहार्य कारणों से पिछले अंक में घोषित यू.के. के श्री प्राण शर्मा जी का इंटरव्यू हम नहीं दे पा रहे हैं. **सं.**

◆ लक्ष्मीनारायण गुप्त

भारतीय संस्कार एवं संस्कृति के पुरोधा प्रवासी भारतीय

भारतीय मूल के भारत से दूर रहने वाले भारतीय इस मायने में बहुत सौभाग्यशाली हैं कि वे जिस देश में रह रहे हैं वहाँ प्रतिबद्धता के साथ उस देश की उन्नति में अपना सहयोग देने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के प्रचारक के रूप में अपना योगदान कर रहे हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना का प्रचार-प्रसार एवं सब सुखी और तनरागी होने की कामना करती भारतीय संस्कृति के संवाहक भारतीय मूल के परिवार जहाँ भी हैं अपना प्रभाव छोड़ते देखे गये हैं। इसके पीछे के कारणों में अन्य कारणों के साथ-साथ भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों का प्रमुख योगदान स्पष्ट दिखायी देता है। विदेश में नये-नये बसे भारतीय नागरिक एवं स्थापित हो चुके विदेश में नागरिकता प्राप्त भारतीय चाहे वे दक्षिण, उत्तर, पूर्व, पश्चिम में कहीं के भी रहे हों सबके संस्कारों में मानवीय मूल्य की छाप स्थाई रूप से जीवन्त रहती है। गंगोत्री से गंगा जल भरकर रामेश्वरम में भगवान शिव का अभिषेक करने की परम्परा, नर्मदा (रेवा) नदी की परिक्रमा के दौरान मार्गस्थ स्थानीय निवासियों से मिलने वाली आत्मीयता, बोलचाल की भाषा भिन्न होते हुये भी अन्तरंगों-सा प्रेम व्यवहार एवं हर प्रकार की सहायता करने को उद्यत लोगों में आतिथ्य देवो भव की भावना देखने को मिलती है उसी भावना का प्रचार-प्रसार भारतीय मूल के लोग करते रहे हैं। भारतीय संतों एवं मनीषियों के माध्यम से भारतीय जीवन दर्शन के विदेशों में हुये प्रचार विस्तार को स्थिर बनाये रखने एवं भारतीयता की मशाल जलाये रखने में प्रवासी भारतीयों का योगदान रहा है।

भारत छोड़कर विदेश में बसने वाले भारतीयों को वहाँ की चुनौतियों का सामना करने की शक्ति भारतीयों के मन में बसी इच्छा-शक्ति के द्वारा प्राप्त होती है। भारत में रहते हुये कुछ करने की इच्छा-शक्ति भारतीय को विभिन्न क्षेत्रों में विशेष योग्यता दिलाती है और वही परिपक्व इच्छा-शक्ति उन्हें अपने देश के बाहर चुनौतियों का सामने करने का साहस प्रदान करती है और वे अपने में विशेषज्ञ के रूप में स्थापित होते हैं।

> **आत्मा के अमरत्व एवं पुनर्जन्म की स्थापित मान्यताएँ जहाँ प्रवासी भारतीयों को भोग के साथ योग से जोड़ती हैं वहीं दानशीलता, आतिथ्य सत्कार, लोकोपकार एवं कर्तव्यनिष्ठा से जुड़ी सत्यकथाएँ भारत में रहने वालों की अपेक्षा विदेशों में बसे भारतीयों में अधिक सक्रियता से कार्य करती दिखाई देती हैं।**

भारतीयों को प्रेरणा देने वाली एवं उनका सर्वांगीण विकास करने वाली दूसरी शक्ति को आत्मिक शक्ति के रूप में गिनाया जा सकता है। आत्मिक शक्ति का संबंध नैतिक मूल्यों के साथ-साथ कर्तव्य भावना से जुड़ा है। आत्मा के अमरत्व एवं पुनर्जन्म की स्थापित मान्यताएँ जहाँ प्रवासी भारतीयों को भोग के साथ योग से जोड़ती हैं वहीं दानशीलता, आतिथ्य सत्कार, लोकोपकार एवं कर्तव्यनिष्ठा से जुड़ी सत्यकथाएँ भारत में रहने वालों की अपेक्षा विदेशों में बसे भारतीयों में अधिक सक्रियता से कार्य करती दिखाई देती हैं। अपने पूर्वजों के देश में अशिक्षा एवं गरीबी का संवेग जितना प्रवासियों को चिन्तित करता है उतना तो भारतीय नेतृत्व करने वालों को भी चिन्तित नहीं करता। भारतीय विचारशील नागरिक इस बात से चिन्तित हैं कि देश की प्रतिभा को भारत में उचित सम्मान न मिलने के कारण उनका पलायन हो रहा है। विचारवान लोगों की बात गलत नहीं है किन्तु वसुधैव कुटुम्बकम का भाव व्यक्त करने वाली संस्कृति के उद्घोषकों को संतोष करना चाहिये कि उनके देश का खून वही कर रहा है जो उनकी संस्कृति की सोच है। जहाँ तक संस्कार की बात है विदेशों में रहने वाले भारतीयों में स्थानीय पर्यावरण एवं जलवायु के

कारण पहनावे या खानपान में कुछ बदलाव देखने में आया है किन्तु मातृ-पितृ, पिता-पुत्र, भगनी-भ्रात, पति-पत्नी आदि के रिश्तों में प्रेम एवं समर्पण के भाव में कमी के स्थान पर प्रगाढ़ता ही दिखाई देती है। पारम्परिक उत्सवों या सामाजिक कार्यक्रमों के अवसरों पर प्रवासी भारतीयों के भारतीय वेष के पहनावों में देखकर गर्व से हमारा सर ऊँचा हो जाता है। हमें यह कहने में संकोच नहीं है कि एक ओर जहाँ भारत में ही भारतीय संस्कार एवं संस्कृति पर कुठाराघात हो रहा है वहीं विदेशों में भारतीय संस्कारों की ध्वजा को अन्यत्र बसे भारतीयों ने संभाले ही नहीं रखा अपितु अपनी संस्कृति की ओर अन्यों को भी आकर्षित किया है।

सर्वे सुखिन: सन्तु का संबंध सम्पन्नता से है। विदेशी भारतीय सुखी हैं तथा निरोगी हैं यह हमारे लिये खुशी की बात इसलिये भी है कि उनका ध्यान हमारी खुशी के लिये उनके प्रयासों के साथ जुड़ा है। भारत में स्थित ईमानदारी से शिक्षा, सामाजिक सुधार एवं धार्मिक क्षेत्रों में कार्यरत संस्थाओं को प्रत्येक संस्कारित प्रवासी का योगदान मिलता रहा है किन्तु क्रिश्चियनों द्वारा वित्त पोषित चर्चों द्वारा धर्मान्तरण के लिये चलायी जा रही संस्थाओं की तुलना में प्रवासी भारतीयों का योगदान अल्प है। ऐसा नहीं कि भारत में दानदाताओं की कमी है और उनका ध्यान इस ओर नहीं है, पर प्रश्न है सुपात्र की खोज करने का। लम्बी परतंत्रता अथवा राजनीति-सामाजिक क्षेत्र में असामाजिक तत्वों की घुसपैठ ने यह सुनिश्चित करना कठिन कर दिया है कि सुपात्र कौन है ? भारत में विकास एवं व्यक्ति निर्माण की प्रक्रिया जारी है। इसमें समय तो लगेगा ही किन्तु यह निश्चित है कि भारत अन्तोगत्वा वर्तमान परिस्थितियों से उभरेगा एवं भारत से बाहर रहने वाले भारतीयों एवं शुभचिन्तकों के सपनों का भारत बनेगा। भारतीय मूल के विदेशों में रहने वाले सहृदयी शुभचिन्तक जहाँ रह रहे हैं वहाँ पूर्ण प्रतिबद्धता से उस देश के साथ-साथ भारत का नाम भी ऊँचा कर रहे हैं, यह भारत के लिये गौरव की बात है।

Indo-Canada

Income Tax Services Ltd.

Income Tax / Book keeping Experts
Management Consultants

905-264-9599

905-264-9587

15 Ayton Crescent, Woodbridge, Ontario L4L 7H8

◆ *मृदुल कीर्ति*

वैचारिक ऊर्जा

आ नो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत: - यजुर्वेद 25, 4
सभी दिशाओं से हमें शुभ विचार प्राप्त हों.
जिसके पास अच्छे विचार नहीं, उसके पास कुछ नहीं.
बिना अच्छे विचारों के आप अच्छे हो ही नहीं सकते.
जब हम खाते अच्छा हैं, पहनते अच्छा हैं तो विचार अच्छे क्यों नहीं रखते ?

विचार स्रोत

'माननेन मनुष्य:' जो मनन कर सकता है वही मनुष्य है. मन से मनुष्य का आदि-अंत रहित, आंतरिक सम्बन्ध होता है, जो सदा था और सदा रहेगा. विचार, ब्रह्माण्ड का बृहत्तम-सूक्ष्मतम ब्रह्म अंश है जो, 'अणु-अणियाम, महतो-महियाम' (कठोपनिषद 1.2.20) किन्तु केनोपनिषद में जिज्ञासा, व्याकुल और अन्वेषी होकर प्रश्नायित होती है.

ॐ केनेषितं पतति प्रेषितं मन: (केनोपनिषद 1.1)
है कौन मन का नियुक्ति कर्ता, कौन संचालक यहाँ ?
'तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते' (केनोपनिषद 1.5)
परब्रह्म शक्ति के अंश से, मन में मनन सामर्थ्य है.
परब्रह्म की मीमांसा को बुद्धि मन असमर्थ है.

जैसे बीज में चैतन्य छुपा हुआ है वैसे ही विचारों में समग्र जीवन दर्शन समाहित है. यह समग्र जगत और जीवन मन के संकल्पों और विकल्पों का खेल है. सब कुछ जहाँ का तहाँ ही तो रहता है, केवल विचारों से सब रूपांतरित होता रहता है. दृश्यमान जगत से अधिक वास्तविक वैचारिक जगत है. सारा दृश्य-अदृश्य से ही तो सृजित है. वैचारिक जगत स्थूल जगत से अधिक वास्तविक है. स्थूल शरीर के पीछे सूक्ष्म शरीर है, सूक्ष्म शरीर के पीछे कारण शरीर है और कारण शरीर के पीछे 'वैचारिक शरीर' ?. आपने देखा होगा कि कोई व्यक्ति स्वभाव से उदार (पर्याप्त धन न भी हो तो भी) होता है, कोई कृपण और अनुदार (धन होने पर भी) होता है, कोई क्रोधी तो कोई शांत आदि विभिन्न चारित्रिक स्वभाव होते हैं. इसके पीछे स्व-भाव (अपना भाव) ही वस्तुत: स्वभाव है, स्वयं के स्वरुप में स्थित भाव ही स्वभाव है, जिसे हम बहुधा आदत के रूप में लेते है. पर इसका संकेत स्व-भाव की ओर ही है. जब बात अंतस में बैठ जाती है तो वह भूलती नहीं, इसके पीछे कोई अभ्यास या प्रयास नहीं केवल मन की स्वीकृति है जो हमारा स्वभाव बन जाती है. यही वह मूल प्रवृति है जो हमारे जीवन में, व्यवहार में स्वभाव बन कर हमें संचालित करती है और यही वैचारिक प्रधानता हमारे 'वैचारिक शरीर' का निर्माण करती है और यही हमारे जन्म निर्धारण का आधार भी है. जिसे श्री कृष्ण गीता में अर्जुन से कहते हैं : शरीरं वायुर्गंधानिवाशयात.

यहि तत्व गहन अति सूक्षम कि,
जस वायु में गंध समावत है.
तस देहिन देह के भावन को,
नव देह में हू लई जावत है.

यह देह का भाव ही 'वैचारिक शरीर' है अथ सत्य का केंद्र भीतर है. मन में अमोघ शक्ति है. यदि सही दिशा में लग जाए तो ब्रह्म से मिला दे. मन में ही पाँचों इन्द्रियां हैं. इन्द्रियों में मन नहीं है. मन में सब इन्द्रियों का निवास नित्य है, तब ही तो स्वप्न में भी इन्द्रियों के विषयों का आभास होता है. मन की चार अवस्थाएं हैं - मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार. अत: सजग रहना है कि मन को वश करना, निर्मल करना और जड़ों तक निर्मल करना. सदा दिव्य भाव में रहो, ईश्वरीय चेतना में रहो, वैचारिक चिंतन ही हमारे भाव, भाषा और भावना में भावित होते हैं, भवितव्य बनाते हैं, वर्तमान संवारते हैं और सकल जीवन चक्र को निखारते है. हम सोते, जागते और सुषुप्ति तीनों ही अवस्थाओं में 'शिव संकल्पित' चित्त मन वाले हों.

ॐ यज्जाग्रतौ दूर मुदैति देवं तदु सुप्तस्य तथैवती, दूरं गमं ज्योतिसाम ज्योति रेकं, तन्मे मन: शिव संकल्प मस्तु. - यजुर्वेद

आज विश्व को यही शिव संकल्पित मन-चित्त की ऊर्जा चाहिए. विकारी मन तो विध्वंस की और अमानवीयता की सभी सीमाएं पार कर चुके हैं. मात्र शिव शुभ विचार ही विश्व में शांति ला सकते हैं. इतिहास साक्षी है कि कलिंग युद्ध के बाद 'बुद्धं शरणम् गच्छामी' विचार का ही परिणाम है.

स्वयं के स्वरुप में स्थित भाव ही स्वभाव है, जिसे हम बहुधा आदत के रूप में लेते है. पर इसका संकेत स्व-भाव की ओर ही है.

विचार सृजनात्मक शक्ति है.

विचार चैतन्य ऊर्जा है. संकल्पित मन जो चाहे कर सकता है. विद्युत की गति 1,86,000 मील प्रति सेकेण्ड है. जबकि विचारों की गति का तो अनुमान ही नहीं लग सकता. समस्त विचारों की भीड़ में यदि एक महान विचार थाम लो वह सत्य केंद्र तक ले जाएगा.

विचार जीवंत ऊर्जा है, जिसमें अथाह शक्ति और सामर्थ्य है, यदि सही दिशा में लग जाए तो ब्रह्म से मिला दे, दूषित विषयों में लग जाए तो विनाश कर दे. हमारी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक क्षमता, हमारे जीवन की सफलता और हर्ष जो हम अपने सानिध्य से दूसरों को देते हैं - यह सभी हमारे विचारों की गुणवत्ता पर ही तो आधारित हैं. विचारों से चारित्रिक दृढ़ता और शक्ति आती है. एक-एक शुभ विचार यदि हर किसी के मन में हों तो विश्व बदल जाए. विचार बदलते ही दुनिया बदल जाती है. विचारों से प्रेरित होकर हम कर्म करते हैं अथ हर कर्म पहले विचारों में सूक्ष्म रूप में घटित हो चुका होता है, स्थूल रूप में तो उसका अंतिम स्वरुप है. हर महान कर्म के पीछे एक महान विचार होता है. हर महान योजना के पहले उसकी परिकल्पना विचारक में घटित हो चुकी होती है, तदनुसार वह तो बस स्वरुप देता है.

भाषा में विभिन्नता है पर विचारों में मानसिक छवि सबकी एक है. विचार बदलते भी हैं, संक्रमित भी होते हैं और करते भी हैं. कितने ही संतों ने विचारों से युग बदले हैं, मानसिकताएं बदली हैं. राष्ट्रीय चेतनाएं कितनी ही क्रांतियों की साक्षी हैं, युग परिवर्तन की साक्षी हैं.

अब तो आत्म दृष्टा बन कर स्वयं की चिंतन शैली को 'सर्वे भवन्तु सुखिन: में' रूपांतरित करने की युग की माँग है. कहीं जाना नहीं बस स्वयं को जानना है. विचारों के परिमार्जन, शुद्धिकरण और सर्व जन-हिताय में रूपांतरण होते ही भाषा, भाव, व्यवहार, आचरण, चरित्र और अंतस बाह्य सबका ही रूपांतरण हो जाता है. विचारों की अथाह शक्ति, ऊर्जा और सामर्थ्य चैतन्य का प्रसाद है.

◆◆◆

संदर्भ : कठोर अनुशासन

◆ लेखिका : इन्द्रा (धीर) वडेहरा

प्रश्न : हम पाँच बहनें और एक भाई हैं। हमारे पिताश्री संयमी, सत्यवादी और कठोर अनुशासन में ढले हुए विवेकी एवं बुद्धिमान इन्सान थे। आज वह इस दुनियाँ में भी नहीं हैं, फिर भी एक बात दिल से नहीं जाती। उनका मेरे छोटे भाई के प्रति कठोर अनुशासन आज तक भी मैं अपने गले से नहीं उतार पाई हूँ। एक ओर उन्होंने हमें ऐसे संस्कार दिए हैं कि मेरा हृदय उन्हें लगभग ईश्वर तुल्य मानता है और दूसरी ओर उनका मेरे छोटे भाई के प्रति कठोर अनुशासन मेरी आँख नम कर जाता है। एक तरफ़ देखती हूँ कि मेरा भाई उदार, नम्र, समाज सेवक एवं निखरे हुए व्यक्तित्व का मालिक है तो पिताश्री को नमस्कृत होती हूँ फिर भी रह-रह कर उनका कठोर अनुशासन ध्यान में आता है। अपने छोटे भाई के प्रति अपने पिताश्री का कठोर अनुशासन गटक पाऊँ, आप मेरी मदद करें।

– आशा खिंदड़ी, भारत

उत्तर : आशा जी, सबसे पहले मैं यह कहना चाहूँगी कि आप थोड़े से शब्दों में ही अपने पिताश्री का एवं अपने छोटे भाई का सुन्दर व्यक्तित्व मेरे अन्तरपट पर उघाड़ गई हैं। आपका यह प्रश्न ही सराहनीय है। एक ओर चरित्र-निर्माता की श्लाघा और दूसरी ओर उनकी कठोरता देख उन्हीं से प्रश्न। आप अपने पिताश्री को काफी हद तक पहचान पाईं, इसके लिए मेरा अभिनंदन स्वीकार करें।

अपने बड़ों के विशिष्ट चरित्र की विशेषता पहचानने के लिए अपना स्तर भी ऊँचा होना चाहिए।

अक्सर बच्चे माँ-बाप की धन-वैभव संपन्नता और सामाजिक स्तर को ही पहचान पाते हैं। इसमें कोई बड़ी बात नहीं, समाज उन्हें उनके इसी रूप से पहचानता है, इसलिए बच्चे भी उन्हें वैसा ही पहचानते हैं, लेकिन अपने बड़ों के उच्च स्तरीय वरिष्ठ जीवन की विशेषता पहचानने के लिए अपना व्यक्तित्व निखरा हुआ और अपना चरित्र सधा हुआ होना चाहिए। आपके प्रश्न ने आपके परिवार की जो तस्वीर मुझे दी है उसके लिए आपका पूरा परिवार ही बधाई का पात्र है। नमस्कृत हूँ मैं आपके पिताश्री की आत्मा को जिन्होंने कटु अनुशासन में अपने बच्चों को ढाला।

आशा जी, आपकी भावना का भी मेरे दिल में सम्मान है। आपके पिताश्री चले गए हैं, अपने छोटे भाई के प्रति आपका कोमल हृदय अपने पिताश्री से उनके चले जाने के बाद आज भी, 'एक आँख दुलार की, दूसरी सुधार की' रखी होती यह माँग करता है।

आपके पिताश्री होते तो इस बात का उत्तर भी आपको मिल जाता कि इतना कठोर अनुशासन क्यों ?

आपके प्रश्न का उत्तर देने से पहले यदि मैं निम्नलिखित पौराणिक कथा का उल्लेख दूँ तो उत्तर देने में कुछ आसानी होगी।

शोधन : राजकुमारों की शिक्षा पूरी हो चुकी थी और राजा उन्हें लेने आए। चलते समय आचार्य बोले - 'एक बात सिखाने को रह गई, सो वह भी सीखते जाओ।' उन्होंने एक छड़ी मँगाई और दोनों राजकुमारों के हाथ पर दो-दो छड़ी कस कर जमा दी। राजकुमारों ने पूछा - 'यह क्या शिक्षा हुई?' आचार्य बोले - 'तुम्हें बड़े होकर राजशासन चलाना है। किसी निर्दोष को दंड मिलने पर उसे कैसा लगता है इस सिद्धांत का परिचय दिया है।'

कहानी कहने का तात्पर्य यही है - जितनी अधिक जिम्मेदारियाँ उतना कठोर अनुशासन। पाँच बहनें और एक भाई, भारतीय संस्कृति के अनुसार पाँच बहनों का अकेला भाई होना ही बड़ी भारी जिम्मेदारी समझी जाती है।

कुछ अनुशासन गटक लेने कठिन हैं लेकिन उनका असली रूप और महत्व जान लेने पर उनकी हम तारीफ ही करने लगते हैं।

आप एक और बात ध्यान में लाएँ, कठोर अनुशासन गुरुकुल की परंपरा रही है।

संत कबीर इसी अनुशासन की कसौटी को बहुत ही सुंदर शब्दों में व्यक्त करते हैं :

'हीरा पाया पारखी, घन महं दीना आन।
चोट सही फूटा नहीं, तब पाई पहचान।।'

कबीर जी के शब्द उद्धृत करने से मेरा अभिप्राय यह है कि आपके पारखी पिताश्री ने आपके भाई को पहचाना और उसे कठोर अनुशासन में ढाला। आपके पिताश्री की कठोरता ही सही, आपके भाई को अपनी सही पहचान मिली और वह एक सच्चे-सुच्चे व्यक्तित्व का मालिक बना।

सोना, चांदी, हीरा, यह सब के सब अपनी शुद्ध पहचान प्राप्त करने से पहले अपनी-अपनी कठिनाइयों से गुजरते हैं। हीरे को खरी पहचान बनाने के लिए चोट सहन करनी पड़ती है। सोने और चांदी को शुद्ध हो जाने के लिए जलन सहनी पड़ती है तथा बालक को सचरित्र बनने के लिए कठोर अनुशासन में ढलना पड़ता है। प्रामाणिकता की कसौटी पर खरे चढ़े तो पहचान बनाई, नकली चढ़े तो बदनामी लेकर उतरे।

अंत में केवल यही कहना चाहूँगी कि कुछ अनुशासन गटक लेने कठिन हैं लेकिन उनका असली रूप और महत्व जान लेने पर उनकी हम तारीफ ही करने लगते हैं। अति उत्तम प्रश्न भेजने के लिए धन्यवाद।

◆◆◆

Beacon Signs
1985 Inc.

7040 Torbram Rd. Unit # 4, Mississauga, ONT. L4T 3Z4

Specializing In:

Illuminated Signs awning & pylons

Channel & Neon letters

Banners

Architectural signs

VEHICLE GRAPHICS

Engraving

Silk screen

Silk screen

Design Services

Precision CNC cutout plastic, wood & metal letters & logos

Large format full Colour imaging System

SALES – SERVICE - RENTALS

Manjit Dubey

दुबे परिवार की ओर से हिन्दी चेतना को बहुत बहुत शुभकामनायें

Tel: (905) 678-2859 Fax: (905) 678-1271

E-mail: beaconsigns@bellnet.ca

अहमदाबाद से अमरीका तक

एक दरवाजा बंद हुआ तो दूसरा खुला

◆ *डॉ. अंजना संधीर*

बात सन् 1995 की है, जब भरा-पूरा सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक जीवन जीने के बाद अमरीका की इस स्वप्न-सुन्दरी नगरी न्यूयार्क में शादी के बाद आना हुआ। यहाँ अकेले बैठे सोचती रहती, कितने ही अलबम के दृश्य दिन-रात आँखों में खुलते, बंद होते रहते थे। कॉलेज का विदाई समारोह, उत्तरायण के उड़ते पतंग, घर के लोगों से विदा लेने के दृश्य, माता जी की सिसकियाँ और सिर पर रखा हाथ... कवि-मित्रों की विदाई और अपने जीवन की व्यस्त दिन-चर्या, जनसत्ता के सामने का टी-स्टॉल, जहाँ शाम, सब पत्रकारों के साथ खड़ी चाय पीती थी... अहमदाबाद के जे.पी. चौक का वो वृक्ष जिसे हम बोधि-वृक्ष कहते थे क्योंकि शहर के सब पत्रकार-कलाकार, तकरीबन शाम को वहाँ आया करते थे। चाय, कॉफी का दौर चलता रहता था। बीच-बीच में कोई फ्लॉपर दे जाता या प्रेस-नोट पकड़ा जाता... मौसम कोई हो, यह सभा चलती ही रहती थी। सीनियर, जूनियर पत्रकार, फोटोग्राफर सब यहीं मिलते। फिर अपनी-अपनी प्रेस में चले जाते... मिलने-मिलाने के लिये भी इसी जगह का पता दिया जाता था।

अहमदाबाद में आखिरी बार का वह कवयित्री सम्मेलन, जिसका संचालन मित्र नथमलजी केड़िया के कहने पर मैंने किया था, एक मीठी याद के रूप में दिल में बसा हुआ है। केड़ियाजी की पुत्र-वधू सुषमा केड़िया तब 'लायनेस क्लब ऑफ कर्णावती' की अध्यक्षा थी।

अहमदाबाद में आखिरी बार का वह कवयित्री सम्मेलन, जिसका संचालन मित्र नथमलजी केड़िया के कहने पर मैंने किया था, एक मीठी याद के रूप में दिल में बसा हुआ है। केड़ियाजी की पुत्र-वधू सुषमा केड़िया तब 'लायनेस क्लब ऑफ कर्णावती' की अध्यक्षा थी। आयोजन उसी क्लब की तरफ से अनुष्ठित था। उसके कुछ दिनों बाद तो मुझे अमेरिका आना ही था। वह अहमदाबाद का पहला कवयित्री सम्मेलन था। दिसंबर का महीना था। वैसे तो उस समय अहमदाबाद में इतनी ठंड नहीं होती लेकिन कश्मीर में बर्फ पड़ते ही जो शीत लहर शुरू होती है, उसका यहाँ असर दिखाई पड़ता है। सर्दियों की वो रंगीन शाम, आज भी आँखों में झूमती है तो आनन्द की एक लहर मन में छा जाती है। श्रोताओं में शहर के तमाम विद्वान, कवि, लेखक, पत्रकार, कलाकार सामने बैठे थे और मंच पर थीं हिन्दी की कवयित्रियाँ। फूलों के गुलदस्ते और खुशबू के झोकों से महकता श्रोताओं से खचाखच भरा हाल... सुषमाजी ने फूलों का गुलदस्ता दिया और लाल रंग का सुनहरी तारों से बना बॉर्डर वाला शाल ओढ़ा कर मेरा मंच पर स्वागत किया था तब भर आये थे आँखों में आँसू कि इस फिजां को छोड़कर जाऊँगी तो आगे, उस अनदेखे देश में, क्या पता ऐसी काव्यमयी बहार हो न हो... मैंने बहुत कार्यक्रमों का आयोजन, संचालन किया था पर इस कार्यक्रम में संचालन व कविता-पाठ का मेरा रंग ही कुछ और था... बहुत से श्रोताओं का ऐसा कहना था और मैं भी कुछ ऐसा ही महसूस कर रही थी। शायद ये अन्दर की पीड़ा थी कि इसके बाद कविता-पाठ या संचालन का ऐसा अवसर वहाँ न मिले तो आन्तरिक प्रतिभा मुखर होकर सामने आई हो। कभी-कभी मैंने महसूस किया कि जब ज्यादा परेशानी में होऊँ या कुछ ऐसी स्थिति में तो काम ज्यादा अच्छा होता है।

कवि सम्मेलन अपनी जवानी पर था। बीच-बीच में मंच पर चाय, पानी, मिश्री, लौंग, इलायची की ट्रे भी घूम रही थी। श्रोता भी इतना आनन्द ले रहे थे कि मंच से उसी जोश में जवाब मिलता। मैं भी उसी रंग में थी। श्रोताओं में किसी ने जो भी टिप्पणी की उसका तुरन्त मंच से उसी जोश में जवाब... मंच और श्रोता साथ-साथ चल रहे थे। किसी ने किसी कवयित्री के लिये कहा (अब मुझे नाम याद नहीं है) कि उनके गुरु भी श्रोताओं की पहली पंक्ति में बैठे हैं मैंने तुरन्त जवाब दिया था- 'गुरुजी आज गुरु नहीं श्रोता हैं और कवयित्री को गुरु की छाया से मुक्ति है, पढ़ने दीजिये उन्हें अपने स्वाभिमान के साथ...' और श्रोताओं व मंच दोनों में हँसी का फव्वारा छूटा और 'बहुत खूब'... 'बहुत खूब' की आवाजें आने लगीं।

आज दस साल बाद इस वाक्य को लिख रही हूँ लेकिन सारे दृश्य ऐसे ही जीवंत हैं आँखों के सामने। सबने विदाई दी और शुभकामनाएँ। नये जीवन के लिये तब साहित्यिक-सहयात्री मित्र नथमल केडियाजी ने कहा था- 'अंजना, भई कमाल कर दिया आज तुमने। लोग कभी नहीं भूल पायेंगे इस कार्यक्रम को और तुम्हें। बस तुम ऐसे ही जीवंत रहना। देश कोई भी हो, तुम्हारे जैसे लोग, लोगों को जिंदा रखते हैं।'

अमरीका आने पर भी उनसे ऐसा ही संबंध बना रहा है। एक पत्र में मुझे याद है शुभकामनायें देते हुये उन्होंने लिखा था- 'बहुत लोग विदेश जाते हैं, पैसा कमाते हैं, तरक्की करते हैं, लेकिन याद रखना एक वह व्यक्ति भी अमरीका गया था जिसका नाम स्वामी विवेकानन्द था और तुम उस संस्कृति का दूत हो...' उनके ये शब्द संजीवनी रहे हैं मेरे लिये। यहाँ आकर 'प्रवासी हस्ताक्षर' काव्य-संकलन मैंने तैयार किया जिसमें अमरीका के २२ हिन्दी कवि बन्धुओं की कवितायें हैं उसकी भूमिका उन्होंने लिखी। कश्मीर पर हिन्दी में अमरीका से कविताओं का संकलन 'ये कश्मीर है' सम्पादित किया तो उसमें भी उनकी शुभकामनायें मिली। अहमदाबाद में थी तो मेरे आपेरा हाउस के दफ्तर में उनसे मुलाकातें, साहित्यिक चर्चा व मित्र मंडली की शामें... बहुत सुखद यादें हैं। वे जब भी अहमदाबाद आते गोष्ठियाँ आयोजित होतीं... अब, जब भी भारत जाती हूँ वे कलकत्ता से आये हों तो मुलाकात होती जरूर है, आयोजन भी अन्यथा, टेलीफोन पर बातें होती रहती हैं।

इस बार की भारत यात्रा में उन्होंने फोन पर कहा था- 'अर्चना' साहित्यिक संस्था के पचास साल हो रहे हैं। ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। आपको कुछ लिख भेजना है, जरूरी। वादा तो कर लिया लेकिन यहाँ आते ही गृहस्थी, यूनिवर्सिटी की नौकरी और बच्चों के स्कूली चक्करों में ऐसी फँसी कि याद ही नहीं रहा। नये साल पर जब उन्हें शुभकामना का फोन किया तो बोले- 'भई तुम्हारा लेख नहीं

पहुँचा, ग्रंथ प्रकाशन की तैयारी में है, संस्मरण लिखो, भेजो शीघ्र।' उनसे वादा तो किया लेकिन... उनके शब्द कानों में गूँजते रहे, 'संस्मरण लिखो, भेजो शीघ्र... तुम्हारी शैली में गजब की शक्ति है- इंतजार है।' इन शब्दों ने मुझे बेचैन कर दिया। पिछले दिनों हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. कमल किशोर गोयनकाजी न्यूयार्क आये हुये थे। टेलीफोन पर उनसे अक्सर बातें होती रहती थीं। वे भी कहते रहते- 'अंजनाजी! अब आप यहाँ के संस्मरण लिखिये...' मैं भी सोचने लगी थी इस बारे में, लेकिन केडियाजी के शब्दों ने आग में घी का काम किया। मुझे फिर याद आने लगा कि उस आखिरी कवयित्री सम्मेलन के लिये भी उन्होंने भारपूर्वक कहा था कि आपको ही संचालन करना है कविता-पाठ तो करना ही है, जाने की तैयारियाँ तो होती रहेंगी। हम सब मित्रों का भी यही मानना है और विशेष रूप से सुषमा का कहना है- 'अरे भई, फिर जाने कब तुम्हें इस तरह सुन पायेंगे?' और अब फिर बरसों बाद उन्होंने कहा है... ऐसे वरिष्ठ साहित्यिक मित्रों ने मेरे जीवन को जीवंत रखा है वरना यहाँ के मशीनी-जीवन में मशीन बन गई होती मैं...। ◆◆◆

एक टिप्पणी दीजिए!

◆ आत्माराम शर्मा

हिन्दी ब्लॉग की दुनिया दिन-ब-दिन समृद्ध होती जा रही है. रोजनदारी की बातें हों, स्थानीय मुद्दे हों या फिर राष्ट्रीय महत्व की घटनाएँ. यहाँ आप लगभग हरेक बात और मुद्दे पर गंभीर विचार-विमर्श पायेंगे. हिन्दी ब्लॉग जगत के लिए यह अच्छी खबर ही कही जायेगी. हर रोज सैकड़ों ब्लॉगों पर पाठकों की हजारों प्रतिक्रियाएँ पढ़कर यह सुखद एहसास और पुख्ता होता जाता है कि हिन्दी पढ़ने और लिखने वालों के बीच अब जीवंत संवाद का माहौल बन रहा है।

इसके अलावा तब और अच्छा लगता है जब यूनिकोड में टाइप किया हुआ कोई शब्द या विषय गूगल में सर्च करने पर उससे जुड़े दर्जनों पेजों की सामग्री हाज़िर हो जाती है. हालाँकि यह सुविधा अभी प्रारंभिक दौर में है और गुजरते समय के साथ ब्लॉगों की सामग्री का सटीक संदर्भ पेजों के तौर पर इस्तेमाल होने में अभी समय लगेगा.

गुजरे साल में हिन्दी के वरिष्ठ पत्रकार प्रभाष जोशी को हमने खो दिया. ब्लॉग जगत में उनके व्यक्तित्व को उजागर करते सैकड़ों पन्ने दर्ज किये गये. संजय पटेल ने ***http://joglikhisanjaypatelki.blogspot.com*** *'उड़ गया.... कागद कारे करने वाला हँस अकेला!' के जरिये प्रभाषजी को यूँ याद किया*

गुजरे साल में हिन्दी के वरिष्ठ पत्रकार प्रभाष जोशी को हमने खो दिया. ब्लॉग जगत में उनके व्यक्तित्व को उजागर करते सैकड़ों पन्ने दर्ज किये गये. **संजय पटेल** ने http://joglikhisanjaypatelki.blogspot.com 'उड़ गया....कागद कारे करने वाला हँस अकेला!' के जरिये प्रभाषजी को यूँ याद किया : वरिष्ठ हिन्दी पत्रकार श्री प्रभाष जोशी के अवसान का समाचार सुना. यूँ लगा जैसे मालवा का एक लोकगीत ख़ामोश हो गया. उनके लेखन में मालवा रह-रह कर और लिपट-लिपट कर महकता था. नईदुनिया से अपनी पत्रकारिता की शुरूआत करने वाले प्रभाषजी के मुरीदों से बड़ी संख्या उनसे असहमत होने वालों की है. लेकिन वे असहमत स्वर भी महसूस करते रहे हैं कि पत्रकारिता में जिस तरह के लेखकीय पुरूषार्थ की ज़रूरत होती है, प्रभाषजी उसके अंतिम प्रतिनिधि कहे जाएंगे. आज पत्रकारिता में कामयाब होने के लिये जिस तरह के हथकंडे अपनाए जा रहे हैं, प्रभाषजी उससे कोसों दूर अपने कमिटमेंटस पर बने रहे. दिल्ली जाकर भी वे कभी भी मालवा से दूर नहीं हुए. बल्कि मैं तो यहाँ तक कहना चाहूँगा कि श्याम परमार, कुमार गंधर्व, प्रभाष जोशी और प्रहलादसिंह टिपानिया के बाद मालवा से मिली थाती को प्रभाषजी के अलावा किसी ने ईमानदारी से नहीं निभाया; यहाँ तक कि अब मालवा में रह कर पत्रकारिता, कला, कविता और संगीत से कमा कर खाने वालों ने भी नहीं. जनसत्ता उनके सम्पादकीय कार्यकाल और उसके बाद के समय में जिस प्रतिबध्द शैली में काम करता रहा है उसके पीछे कहीं न कहीं प्रभाषजी का पत्रकारीय संस्कार अवश्य क़ायम है. राहुल बारपुते जैसे समर्थ पत्रकार के सान्निध्य में प्रभाषजी ने अख़बारनवीसी की जो तालीम हासिल की उसे ज़िन्दगी भर निभाया. आज पत्रकारिता क्राइम, ग्लैमर और राजनीति के इर्द-गिर्द फ़ल-फूल रही है, कितने ऐसे पत्रकार हैं जो कुमार गंधर्व के निरगुणी पदों का मर्म जानते हैं, कितने केप्टन मुश्ताक अली या कर्नल नायडू की धुंआधार बल्लेबाज़ी की बारीकियों को समझते हैं, कितने ऐसे हैं जो अपने परिवेश की गंध को अपने लेखन में बरक़रार रख पाते हैं; शायद एक-दो भी नहीं. राजनेताओं से निकटता आज पत्रकारिता में गर्व और उपलब्धि की बात मानी जाती है. प्रभाषजी जैसे पत्रकारों ने इसे

RAI GRANT INSURANCE BROKERS

Business • Life • Auto • Home

ENOCH A. BEMPONG, BA (Econ)

Account Exexutive

140 Renfrew Drive, Suite 230, Markham, ON L3R 6B3

Tel: 905-475-5800 Ext. 283 • 1-800-561-6195 Ext. 283

Fax: 905-475-0447 • ebempong@raigrantinsurance.com

Cell: 905-995-3230 • www.raigrantinsurance.com

सम्पादक
यतेन्द्र वार्षनी

गर्भनाल

garbhanal@ymail.com

GARBHANAL

प्रवासी भारतीयों की मासिक ई-पत्रिका

आपको हिंदी बोलनी आती है? तो फिर हिंदी में ही बात करिये

आप कुछ लिखने चाहते हैं? तो फिर हिंदी में लिखिये

अपनी बोली-बानी में बात करने का मंच है गर्भनाल ई-पत्रिका, जो हर माह नियमित तौर पर आपके ईमेल बॉक्स में पहुँच जाती है. इसे पढ़ें और परिजनों, मित्रों को फॉरवर्ड करें.

GARBHANAL

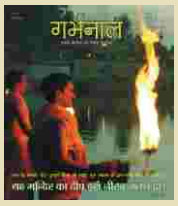

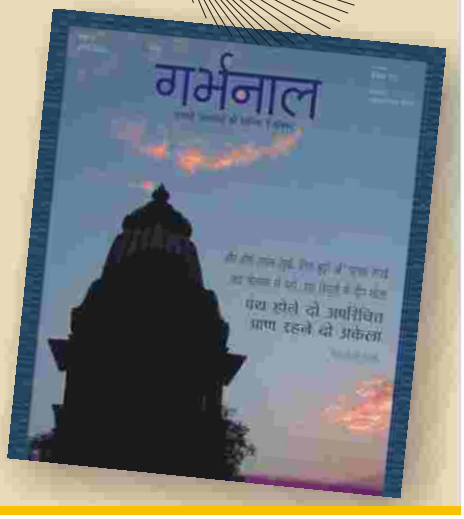

गर्भनाल के पुराने सभी अंक www.garbhanal.com पर उपलब्ध है.

बहरहाल... हिन्दी पत्रकारिता ही नहीं हिन्दी जगत में भी आज का दिन एक दु:ख भरे दिन के रूप में याद किया जाएगा क्योंकि हिन्दी की धजा को ऊंचा करने वाले प्रभाष जोशी आज हमारे बीच नहीं रहे हैं. प्रभाष दादा क्या आप आज भी कुमार जी का यह पद सुन रहे हैं. उड़ जाएगा हँस अकेला.

हमेशा हेय समझा बल्कि मुझे तो लगता है कि कई राजनेता उनसे सामीप्य पाने के लिये लालायित रहे लेकिन जिसे उन्होंने ग़लत समझा; ग़लत कहा... किसी व्यक्ति से तमाम विरोधों के बावजूद यदि प्रभाषजी को लगा कि नहीं उस व्यक्ति में कमज़ोरियों की बाद भी कुछ ख़ास बात है तो उसे ज़रूर स्वीकारा.अभी हाल ही में उन्होंने इंदिराजी की पुण्यतिथि पर दूरदर्शन के एक टॉक-शो में शिरक़त की थी और इंदिराजी की दृढ़ता और नेतृत्व -क्षमता की प्रशंसा की थी जबकि उन्हीं इंदिराजी को आपातकाल और उसके बाद कई बार प्रभाषजी ने अपने कागद-कारे में लताड़ भी लगाई थी.

बहरहाल... हिन्दी पत्रकारिता ही नहीं हिन्दी जगत में भी आज का दिन एक दु:ख भरे दिन के रूप में याद किया जाएगा क्योंकि हिन्दी की धजा को ऊंचा करने वाले प्रभाष जोशी आज हमारे बीच नहीं रहे हैं. प्रभाष दादा क्या आप आज भी कुमार जी का यह पद सुन रहे हैं. उड़ जाएगा हँस अकेला.

महिलाएँ भी हिन्दी ब्लॉग को समृद्ध बनाने में किसी से पीछे नहीं हैं. वे गंभीर मुद्दों के जरिये खम ठोंककर अपनी बात रख रही हैं. ऐसी ही एक पोस्ट **प्रीति टेलर** ने अपने ब्लॉग http://beshak.blogspot.com पर लगाई. शीर्षक था : 'एक चिट्ठी औरत के नाम...' गौर करें : आज एक ख़त औरत का ख़ुद के नाम : प्रिया, हाँ ! मैं तुम्हे प्रिया ही कहूँगी. क्योंकि जब तक मैं ख़ुदकी प्रिया न बनू इस जहाँ की प्रिया कैसे बन पाऊंगी ? तुम्हारे जन्म पर माँ के मुख मंडल पर क्या भाव थे ? याद तो नहीं ही होगा पर क्या हो सकते है ये अब जान ही गई होगी. नहीं ये सब बातें तो पुरानी हो गई सखी. एक नई बात करें ?

ये दुनिया ढोल पिट रही है औरत स्वावलंबी बननी ही चाहिए. हँसी आती है. ये दुनिया हर जगह पैसे के अलावा कुछ सोच नहीं पाती. पहले तो बेटी को पढाओ. हाँ अब तो लड़कियां पढ़ लिख रही है. पर ये हवा शहरों में बह रही है. गाँव की हवा तो अभी ताजी है पर विचारों की ताजगी कहाँ ? फ़िर शुरू हुआ पैरों पर खड़े होने का सिलसिला. छोटी बड़ी नौकरी करके आर्थिक स्वावलंबन का मतलब मिला. अच्छा है. पर डियर, क्या हम स्वतन्त्र हैं ? नहीं दोस्त. अब तो दोहरी जिम्मेदारी निभाने की. ऑफिस से आकर पाँव पसर कर चाय पीने की आज़ादी कहीं है ? किचन की पुकार तो आखरी ऑफिस के घंटे में आती है. अरे आया को रखा है बच्चे सँभालने को और फ़िर बुढापे में उम्मीदें करेंगे की बेटे बहू सेवा करें. क्या ये मुमकिन होगा ? ये भी घिसी हुई कहानी हो चुकी है... चल आज एक बात करूँ दोस्त, उ क्या तुझे आज़ादी है की एक दिन सुबह को दस से बारह बजे के घर के बिजी समय में तू सुस्ताने को किसी अपनी बचपन की सहेली को किसी को बिना कुछ बताये चुपचाप चली जाए... और फ़िर वापस आए तब ? बस-बस ये तुम्हें और मुझे सब पता है... बिना कुछ कहे कहीं एक दिन भी हम कहीं जाने के लिए आजाद नहीं है... इत्तिला देनी ही देनी है... क्या हमारे बच्चे और पति ऐसा नहीं करते ? बस ये हम क्या नहीं कर सकते ?

बस सखी इतना ही कहूँगी पढ़ी हो या अनपढ़, शहर की हो या गाँव की औरत अपने लिए एक दिन जीने की आज़ादी पा सकेगी ?

आधुनिक हिन्दी कविता में मुक्तिबोध किस पायदान पर हैं - इस पर बहस हो सकती है, लेकिन हिन्दी कविता में उनके अवदान को भुलाया नहीं जा सकता. **प्रिया कुमार** ने http://anahadnaad.wordpress.com 'ब्रह्मराक्षस का सजल उर शिष्य : मुक्तिबोध' के मार्फ़्त मुक्तिबोध को अलग तरीके से याद किया. पढ़िये : छायावादोत्तर प्रगतिशील कविता की एक परम्परा केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन और त्रिलोचन की है तो दूसरी परम्परा के वाहक हैं मुक्तिबोध. बीसवीं सदी की हिंदी कविता का सबसे बेचैन, सबसे तड़पता हुआ और सबसे ईमानदार स्वर हैं गजानन माधव मुक्तिबोध. मुक्तिबोध की कविता जटिल है और उसकी जटिलता के कारण है. भगवान सिंह ने उनकी कविता की जटिलता का बयान कुछ इस तरह किया है, वे सरस नहीं हैं सुखद नहीं हैं. वे हमें झकझोर देती हैं, गुदगुदाती नहीं. वे मात्र अर्थग्रहण की मांग नहीं करतीं, आचरण की भी मांग करती हैं. तारसप्तक में मुक्तिबोध ने स्वयं कहा है, ये मेरी कविताएं अपना पथ ढूंढने वाले बेचैन मन की अभिव्यक्ति हैं. उनका

गौतम सचदेवा ने कोपेनहेगन के बहाने जलवायु परिवर्तन से गंभीर विषय को अपने ब्लॉग ***http://bhadas.blogspot.com*** *पर 'कोपेनहेगन का छ्द्म' के जरिये यूँ उठाया : प्रत्येक सजग मानव को आज भलीभांति जलवायु परिवर्तन की जानकारी है.*

सत्य और मूल्य उसी जीवन-स्थिति में छिपा है. 'ब्रह्मराक्षस' और 'अंधेरे में' वे प्रतिनिधि कविताएं हैं जिनसे मुक्तिबोध की कविता और उनकी रचना प्रक्रिया को समझा जा सकता है. कुबेरनाथ राय ने लिखा है, जैसे 'टिण्टर्न ऐबी' और 'इम्मॉर्टलिटी ओड' को पढ़कर वर्डवर्थ को या 'राम की शक्तिपूजा', 'बादल राग' और 'वनवेला' को पढ़ कर निराला को पहचाना जा सकता है वैसे ही इन दो कविताओं को पढ़कर मुक्तिबोध के कवि-व्यक्तित्व को समझा जा सकता है.

गौतम सचदेवा ने कोपेनहेगन के बहाने जलवायु परिवर्तन से गंभीर विषय को अपने ब्लॉग http://bhadas.blogspot.com पर 'कोपेनहेगन का Pain' के जरिये यूँ उठाया : प्रत्येक सजग मानव को आज भलीभांति जलवायु परिवर्तन की जानकारी है. जलवायु परिवर्तन के कटु सत्य को हम झुठला नही सकते. हम सीधे शब्दों मे कह सकते हैं कि हमारी आवश्यकता ही समस्या बनती जा रही है. मुझे बचपन की एक कहावत याद आती है - आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है. वो दिन दूर नही जब लोगों कि आवश्यकता ही नहीं बचेगी क्योंकि लोग ही जीवित ही नही रहेंगे. क्या ऐसा हो सकता है? यह प्रश्न आज हर व्यक्ति के मन में कौंध रहा है. विश्व औसत से कहीं अधिक तेजी से हिमालय पिघल रहा है. यह अगले चालीस साल में पिघल कर समाप्त हो जायेगा. यह तो महज एक अनुमान है. सच इससे भी कहीं ज्यादा दिल दहलाने वाला है. पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं. अंटार्कटिक की बर्फ की चादर की मोटाई कम होती जा रही है आख़िर इसका उपाय क्या है. कोपेनहेगन में चल रही बैठक की मूल व्यथा यही है. विश्व के तमाम वैज्ञानिक इस बात पर माथापच्ची करने के लिए एक जुट हुए है और ये सब हो रहा है हमारी आपकी ज़रूरतों के कारण समुद्रों का जलस्तर दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है. वैज्ञानिक जुटे हैं ऐसे तरीक़े खोजने में जिससे ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम किया जा सके. आख़िर इस समस्या से कैसे निजात पाया जाए ?

मानसी ने http://manoshichatterjee.blogspot.com 'मैं छोटे, बड़े सभी को सही सम्मान दूँगा' के जरिये उम्दा मुद्दा उठाया. बात की शुरूआत वे यों करती हैं : वो स्कूल के आफ़िस के सामने, अन्य बच्चों के साथ, फ़र्श पर बैठा अपनी मां के आने का इंतज़ार कर रहा था. मुझे उसकी आँखों से दो बूँद आँसू ढुलकते दिखाई दिये. मैं उसे उसकी कक्षा में नहीं पढ़ाती पर, उसे स्कूल में रोज़ देखती हूँ. सो, मैं उसके पास जाती हूँ और कहती हूँ, 'क्या बात है बेटे? तुम ठीक हो न? तुम्हारी मां अभी आती ही होंगी। वो मेरी तरफ़ नहीं देखता, और धीरे से कहता है, 'मैं आपको देख कर मुस्कराया, आप वापस नहीं मुस्कराईं?' आइ ऐम सो सारी बेटे, मैंने तो तुम्हें देखा ही नहीं.' फिर मैं उसके साथ एक छोटा-सा खेल खेलती हूँ, 'चलो दोनों साथ मुस्करायें'. और फिर दोनों के अलावा तीनों साथ मुस्कराते हैं. मैं अपने पीछे खड़ी उसकी अभी पहुँची मां को भी मुस्कराता पाती हूँ. सवाल है कि बच्चे कह पाते हैं. लेकिन हम क्यों नहीं कह पाते? पिछले दिनों मेरे बचपन के स्कूल के एक सीनियर ने आर्कुट पर कुछ तस्वीरें लगाईं. वह साउथ अफ्रीका में वह स्टेशन घूम आया जहाँ महात्मा गांधी को ट्रेन के फ़र्स्ट क्लास कम्पार्टमेंट से उतार दिया गया था. उस घटना ने उनकी ज़िंदगी बदल दी और उन्होंने दुनिया को बदलने का सोच लिया. अचानक ही फिर से जैसे उस काले, पतले, सीधे-साधे आदमी के लिये एक बार श्रद्धा उमड़ आई मेरे मन में. कितनों में होती है हिम्मत?

और अंत में **अपूर्व** ने अपने ब्लॉग पर http://dafaatan.blogspot.com पर 'समय की अदालत में' शीर्षक से मार्मिक कविता लगाई जो चेहरे के सामने आईना रख देती है। गौर करें : *क्षमा कर देना हमको / ओ समय! / हमारी कायरता, विवशता, निर्लज्जता के लिये / हमारे अपराध के लिये / कि बस जी लेना चाहते थे हम / अपने हिस्से की गलीज जिंदगी / अपने हिस्से की चंद जहरीली साँसें / भर लेना चाहते थे अपने फेफड़ों मे / कुछ पलों के लिये ही सही / कि हमने मुक्ति की कामना नही की / बचना चाहा हमेशा / न्याय, नीति, धर्म की परिभाषाओं से / भागना चाहा नग्न सत्य से.*

BEST WAY CARPET & RUGS INC.

$50.00 Off All wall to wall Carpet with purchase up to 300 sq. ft.
10% Off all Area Rugs

Free delivery under pad Installation

• Residential • Commercial • Industrial • Motels & Restaurants

Free Shop at Home Service Call: (416) 748-6248

• Broadloom • Area Rugs • Runners • Vinyl & Hardwood • Blinds & Venetian Custom Rugs • All kind of Vacuums

Interest Free 6 months No Payment OAC

7003, Steeles Ave. Unit 8
Etobicoke
ON M9W OA2
Ph: 416-748-6248
Fax: 416-748-6249

1 Select Ave, Unit 1
Scarborough
ON M1V 5J3
Ph: 416-321-6248
Fax: 416-321-0929

अब के बिछुड़े...

✍ सुदर्शन प्रियदर्शिनी

आज तुम्हें तुम्हारे असली नाम से पुकार कर तुम्हें कैसे अपने पास बुला लूँ। देखती हूँ तुम्हारी दृष्टि में भी एक शून्य लटका हुआ है जो कुछ भी नहीं पहचानता शायद, जो मेरी पहचान में भी बाधा बनकर खड़ा हो गया है। आज तुम्हें लेकर सारा बचपन क्यों आँखों में उतरा आ रहा है।

रजत! आज न जाने कहाँ से और कैसे तुम मेरी ही बस में पिछली सीट पर आ बैठे थे। समय का कितना बड़ा अंतराल बीच में से फिसल चुका है। लेकिन आज तुम्हें पहचान कर पुकार भी नहीं सकती। तुम्हें पुकारने के खुलेपन से अपने सामाजिक दायरों के तंग होने का भय भी समा गया है मन में...

तुम्हारी बैलोस ठहरी हुई दृष्टि... उन्नत भाल और सौंदर्य का वही अभिराम रूप... जहाँ सारी कल्पनायें फीकी पड़ जाती हैं।

आज तुम्हें तुम्हारे असली नाम से पुकार कर तुम्हें कैसे अपने पास बुला लूँ। देखती हूँ तुम्हारी दृष्टि में भी एक शून्य लटका हुआ है जो कुछ भी नहीं पहचानता शायद, जो मेरी पहचान में भी बाधा बनकर खड़ा हो गया है। आज तुम्हें लेकर सारा बचपन क्यों आँखों में उतरा आ रहा है। कहाँ तुम्हारा घर बार-बार बादलों-सा हृदयाकाश में घुमड़ने लगा है। वही घर, जिसकी खिड़की पर मैं एक दिन यूँ ही बिना किसी भावना के, अपनी उम्र के कच्चेपन को लिये तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही थी... पर यह बहुत बाद की बातें हैं।

उससे भी पहले अपने उन साथ-साथ सटे हुये घरों की वह कतार याद आती है जिसके विशालकार आँगन में हम लुका-छिपी खेलते थे। क्वार्टरों के बीच बने कम्युनिटी हाल के टेढ़े स्प्रिंगदार दरवाजों की ओटों में लकीरों वाले खेल खेलते थे। जो दूसरों की खिंची हुई लकीरों को ढूँढ़ नहीं पाता था, उसे सजा मिलती थी। कभी आँख पर पट्टी बाँध कर तो कभी उसकी पीठ पर पक्के-पक्के धौल जमा कर...

तुम भी कभी-कभी हमारे साथ खेलते थे... तुम हम सबसे कुछ बड़े थे और उसे बड़े होने से ज्यादा तुम्हें अपने बड़प्पन और आठवीं क्लास का अहम था। हमारी उम्र अभी नंगे बरामदे में गीटे और स्टापू खेलने की थी। वह छोटी-सी अनजान उम्र जिसमें कभी-कभी तुम अपने पूरे रौब के साथ आकर खड़े हो जाते थे और कहते थे गोरी मेम... उठ यह खेल नहीं खेलेंगे। छुक-छुक रेलगाड़ी वाला खेल खेलते हैं और बाकी सबके मना करने पर भी मैं बंधी-सी तुम्हारे खेल में शामिल हो जाती थी। तुम सीटी बजाते और इंजिन बनकर कहते - सब डिब्बे अपनी-अपनी जगह पर जुड़ जाओ... इंजिन के साथ फर्स्ट क्लास का डिब्बा लगेगा और झट से निकर में से खींच कर पीछे से अपनी कमीज का छोर मेरे हाथों में थमा देते और चालू हो जाते छुक-छुक... आज सोचती हूँ क्या तुम जानबूझकर अपने डिब्बे से मुझे जोड़ लेते थे? क्या वह फर्स्ट क्लास का डिब्बा में थी...

मुझे गिलहरियों की तरह पेड़ पर चढ़कर कचली-कचली खुमानियाँ और आडू कुतरने का बेहद शौक था। यह नाम भी तुम्हारा ही दिया हुआ था गिलहरी। सभी पेड़ के नीचे खड़े हुये मेरी कुतरी हुई जूठी खुमानियाँ उठाते और गालियाँ देकर फेंक देते थे। वे जूठे शबरी के बेर या तुम खाते थे या मेरी बहनें... मैं लड़की थी और कहती थी तुम क्यों खाते हो मेरी जूठी खुमानी... फेंको इसे और तुम खुमानी को और भी दाँतों में भींच कर कटर-कटर कर खाने लगते थे। सभी तुम्हें गंदा-गंदा कह कर चिढ़ाते भी थे पर तुम चिकने घड़े से खी-खी कर हँसते रहते और खाते रहते...

कभी-कभी हमारी पूरी टोली की टोली नीचे खड्डों में उतर जाती। सभी तितर-बितर होकर कोई खेतों में तो कोई खेतों की मेड़ों पर बैठे सूखे पत्ते बटोरकर गेहूँ की बालियाँ सेंकते, तो कभी मक्की के मौसम में मक्की के भुट्टे और तुम मेरे पास, उन सबसे निर्लिप्त होकर आकर खड़े हो जाते और कहते चल हम खड्ड में से रत्तियाँ

तोड़कर लाते हैं। हम दोनों रत्तियाँ तोड़ने चले जाते। उचक-उचक कर रत्तियाँ तोड़कर तुम मेरी मुट्ठियाँ भर देते। कितनी प्यारी होती थी वह रत्तियाँ... लाल-लाल और काली छोटी-छोटी बुंदकी वाली... लगता है जैसे जिन्दगी का सारा गुलाल हाथों में भर देते थे तुम। पर समझ ही कहाँ थी... इन बातों की उस उम्र में... तुम बताते इन्हें खाने से आदमी मर जाता है। इनमें जहर होता है मिनी... मैं कहती मैं जरूर उन्हें खाकर देखूँगी कि मैं मरती हूँ या नहीं और तुम झटके से सारी रत्तियाँ मुझसे छीन लेते और मारते सो अलग... हम दोनों इसी झगड़े में वापिस सबके पास पहुँच जाते। दोनों की आँखें लाल होती - तुम्हारी गुस्से से और मेरी आँसुओं से... रजत! उन लाल रत्तियों का जहर मुझे तो पीने न दिया लेकिन स्वयं अकेले आज तक पीते चले आ रहे हो...

एक दिन कम्युनिटी हाल के एक अंधेरे कमरे में हम लोग ड्रामा खेल रहे थे... तुम बने राम और मैं सीता... एकाएक तुम मुझे खींचकर अंदर ले गये और झटपट बाहों में पकड़कर अपने निकट खींच लिया और मेरे ओठों पर जोर से काट खाया और कहा- सीता की बच्ची बड़ी प्यारी लग रही है। मैं उस समय यह सब नहीं जानती थी और जोर से चिल्ला पड़ी थी... और बाद में इसे तुम्हारी शरारत समझ कर माफ भी कर दिया था। लेकिन रजत आज पूछती हूँ तुम यह सब तब भी जानते थे और सब कुछ जानबूझ कर करते थे है न!

उसके बाद हम दस वर्ष के अंतराल पर मिले। तब मेरी उम्र 18-19 बरस की हो गई थी और तुम शायद 26-27 के थे। यों यह मिलना तुमसे साक्षात न हुआ। पर हुआ तुम से ही केवल तुमसे... तब भी अगर जान पाती तो शायद तुम्हारे अनकहे प्यार से झनझना उठती। किन्तु एक बार भी - तब भी नहीं, आज तक भी नहीं कहा कि मिनी तुम मेरी हो... एक बार कहते तो मन की साफ-स्फटिक स्लेट पर तुम्हारा नाम ही तो खुदता। वह नाम तो आज तक यों भी खुदा है... वह कब कैसे मालूम नहीं हुआ। पर तुम्हारे नाम की इबारत मैं कभी न पढ़ सकी रजत... जब पढ़ने की अक्ल आई तब तक उस पर जमाने की तमाम खाक पुत चुकी थी। तारकोल की तरह काली और मजबूत...

दस साल बाद अकस्मात जब मैं तुम्हारे घर गई तो तुम वहाँ नहीं थे। मैं शाम तक तुम्हारे कमरे की खिड़की में बैठकर तुम्हारी राह देखती रही। उस नीचे से आने वाली पगड्डी पर न जाने कितने लोग चढ़े-उतरे लेकिन नहीं खिला तो वह एक लाल कनेरका फूल... आज तक मैं समझ नहीं पायी कि बगिया में इतने फूल खिलते हैं - कितने रंग अलग-थलग पर मन एक ही फूल, एक ही रंग पर उम्र भर के लिये क्यों ठिठक जाता है। उसके बाद सारे रंग फीके और उदास हो जाते हैं। उस एक रंग की तलाश में उम्र गर्क कर देता है इंसान। आज मेरी अपनी बगिया में भी क्या नहीं है लेकिन फिर भी आज यहाँ तुम्हें देखने के बाद लगता है कि कोई कोना, क्या उम्र भर

रीता-रीता ही नहीं रह गया...

उस दिन तुम्हारी माँ ने सरसरे ढंग से कहा और मैंने सरसरे ढंग से सुना। संजीदगी की उम्र भी अपनी-अपनी होती है। वह कह रही थीं- रजत बहुत देर से और कई बार बीती रात गये लौटता है। आकर भी अपनी कूचियाँ और रंग लेकर बैठ जाता है। फिर कब रात ढलती है और कब सबेरे उगती है कुछ पता नहीं चलता है। बावला हो गया है। मुझे लगता है अंदर ही अंदर किसी को प्यार करता है - पर कह नहीं पाता... मैं चाहती हूँ, तुम आज यहीं ठहरो और उसे समझाओ। तुम उसकी बचपन की सहेली हो, शायद तुम्हें कुछ बताये।

इसी एवज में तुम्हारी माँ ने मुझे तुम्हारे कितने ही चित्र दिखाये। मैं तुम्हारी सारी सौन्दर्यानुभूति को उन चित्रों में अनुभूत करती रही थी। कैसे-कैसे एक-एक भावना उभरकर एक-एक लकीर से अपना अर्थ खोल रही थी। जो आज स्पष्ट हो रहे हैं। उस समय तो मैं केवल एक दर्शक होकर, उन रंगों की अभिरामता में खोई हुई, उनकी प्रशंसा करती रही थी। तुम्हारे एक चित्र में मेघदूत की परिकल्पना अद्‌भुत थी। प्यासा बेहाल बादलों के समक्ष गिड़गिड़ाता हुआ युग चित्रित किया गया था। आज लगता है वह तुम्हीं थे। क्यों तुम्हारा कोई संदेश इस सबसे पहले मुझ तक नहीं पहुँचा। मेरी कच्ची उम्र इतनी तो कच्ची न थी कि तुम कहते तो मैं न समझती। उस उम्र में भी मैंने लड़के-लड़कियाँ घर से भागते देखे हैं तो क्या मैं तुम्हारा प्यार न समझती...

तुम्हारी माँ ने भी क्यों अदृश्य रूप में ही अंदेशे दिये थे। स्पष्ट

क्यों नहीं कहा। शायद तुमने ही कभी उनसे स्पष्ट होकर किसी एक नाम पर अंगुली नहीं रखी तो बिचारी वह भी क्या करतीं।

तुम्हारी माँ ने कहा जो मैं आज समझ रही हूँ... उस दिन समझा होता तो आज जो तुम्हारे शून्य में लटकी बावरी दृष्टि मुझे बेंध रही है न बेंधती। रजत एक लड़की को प्यार करता है। उसकी शक्ल हूबहू तुमसे मिलती है। बिल्कुल तुम्हारी बहिन जैसी लगती है... तुम कहो तो मैं वे सारे चित्र तुम्हें दिखलाऊँ। लेकिन रजत! न तो उसका नाम बतलाता है, न ही वह चित्र किसी को दिखाता है। किसी एक्जीबीशन्स में भी वह उन चित्रों को नहीं ले जाता। जबकि गैलरी वालों की एकाध बार नजर उन चित्रों पर पड़ी और उन्होंने आग्रह भी किया किन्तु उसने साफ इंकार कर दिया। मैं वह चित्र देखना चाहती थी, किन्तु तुम्हारी माँ ही कह कर भूल गई थी और मैं भी संकोच के मारे आग्रह नहीं कर पाई... पर मन में दो और दो चार वाली बात फिर भी नहीं आई। सिर्फ तुम्हारी माँ को इतना ही कहा कि रजत! बहुत बड़ा हो गया है...

तुम्हारी माँ ने मेरे चित्र को छूकर कहा था- गोरी मेम तुम भी तो बहुत बड़ी हो गई हो... उनके मुँह से सुनकर अटपटा लगा। गोरी मेम शब्द से मुझे तुम्हारा चिढ़ाना याद आता है... तुम कहते थे- अंग्रेज चले गये और अपनी गोरी मेम यहीं छोड़ कर गये। अरे! तुम अंकल आंटी की बेटी थोड़े ही हो वह तो अंग्रेज जा रहे थे और जाते-जाते किसी गठरी की तरह तुम रेल की पटरी पर गिर गई और अंकल तुम्हें उठाकर घर ले आये। यह कहकर तुम तालियाँ बजाते और सबके साथ हँसते और चिढ़ाते। इस बात पर हमारी कट्टी भी हो जाती थी। क्योंकि तुम्हारे कारण बाकी भी उसी नाम से बुलाने लगते थे। रजत! तुमने एक बार भी कहा होता गोरी मेम मैं तुम्हें अपनी मेम बनाऊँगा तो शायद यौवन की देहरी पर पाँव रखते मैं पीछे मुड़कर देख लेती...

खिड़की में बैठे-बैठे शाम हो गई थी। मैं लौट आई थी तुमसे बिना मिले... पर एक बार उस दिन तुम से मिले बिना भी शायद मिल आई थी। उस दिन शायद कोई दस्तक टकराई थी... किन्तु द्वार खोलने वाला ही न था कहीं...

फिर एक दिन पता चला रजत अपनी सुध-बुध खो बैठा है। वह पागलखाने में है। उस दिन मेरा मन रोया था डूब-डूबकर... उस दिन पहली बार लगा कहीं अंदर एक हरसिंगार का पौधा था जो आज मुरझा गया है। उस दिन सचमुच कुछ अनहुआ हुआ था... जिसे शब्द देने से पहले खत्म होना पड़ा था।

तुम्हारे मन में कहीं गोरी मेम ही थी, यह बात भी बहुत बाद में तुम्हारी माँ ने मेरी माँ से कही थी। तब तक हरसिंगार झर चुका था। मैं घर, देहरी, उम्र लांघ कर किसी और की हो चुकी थी।

काश! तुम एक बार कह देते रजत! हो सकता है बात मान ही ली जाती। अगर न भी मानी जाती तो आज यह हौंस तो रहती कि हमने एक-दूसरे को आवाज तो दी थी... पर वह आवाज ही यहाँ तक नहीं पहुँची।

अब तो आज जहाँ खड़ी हूँ तुम्हारा हाल तक नहीं पूछ सकती। इतना लंबा समय का अंतराल, तुम्हारी आँखों का शून्य, अपरिचय का बीहड़, रेगिस्तान, ये सब कैसे लाँघू! और फिर यदि तुम-तुम न हुये तो रजत!

क्या ऐसा नहीं लगता तुम्हें कि तुम आज भी अगर एक बार अपनी गोरी मेम के लिये बाहें फैला दो तो गोरी मेम पिछले सारे फैलाव स्वयं समेट लेगी और चली आयेगी तुम्हारे पास... पर ऐसा कभी नहीं कर सके तुम रजत! आज ही क्या कर पाओगे...

एक बार बीच में पता चला था कि तुम ठीक हो गये हो... पर विवाह के लिये नहीं मानते हो। तुम्हारे छोटे बहिन-भाईयों की शादियाँ भी हो गई थी...

सुना है एक बार विक्षिप्त हुआ व्यक्ति कभी अपनी धुरी पर वापिस नहीं लौटता। आज तुम्हारी निर्लिप्त दृष्टि का शून्य भी इस बात की गवाही दे रहा है कि तुम वही रजत हो - पर शायद पूरे रजत नहीं हो... मैंने पीछे मुड़कर कई बार देखा है लेकिन तुम उसी तरह तटस्थ बैठे हो। किसी के लिये कहीं भी कोई भाव या पहचान तुम्हारे चेहरे पर नहीं है।

बस खड़ी है। सोलन के स्टेशन पर। सड़क के किनारे बाजार से कुछ कदम दूर... मेरी खिड़की पर इतने बरसों बाद न जाने कहाँ से एक रत्ती का पेड़ झुक आया है। जी चाहता है तुम्हारी आँखों में देखूँ और रत्तियाँ मुट्ठी में भरकर तुम्हारे हाथों में रख दूँ। तब भी क्या तुम्हारी पहचान नहीं लौटेगी।

अब तुम नीचे उतर कर चाय पी रहे हो। मैं काँच की खिड़की से तुम्हारी पारदर्शी छवि आँखों में भर रही हूँ। बिल्कुल वही हो। रत्ती भर भी अंतर नहीं आया।

रत्ती का पेड़ बैलोस बड़ा हो गया है। तुम्हारी अर्द्धविक्षिप्त-सी दृष्टि मुझे बेंध रही है और शायद कह रही है - गोरी मेम अब क्या चाहती हो। अब मैं क्या करूँ तुम्हें पहचान कर। क्या करूँ। अब इन आँखों में फूल न खिलाओ। अब इनमें सौन्दर्य की पहचान न जगाओ... मैं सब कुछ भूल चुका हूँ और भूला ही रहना चाहता हूँ...

मैं तुम्हारी नजर की क्या कहूँ रजत! मेरी आँखों के कोर गीले हैं। बस चाहती हूँ एक बार पूँछ लूँ और तुम्हारे मुँह से सुन लूँ कि तुम-तुम्हीं रजत हो - वही मेरे अपने रजत! क्योंकि अबके बिछड़े फिर न जाने कब किस मोड़ पर मिलें और मिलें भी कि न... ◆

Personalized Investment Advice

For individual Investors

Member CIPF

Edward Jones®

Serving Individual Investors

Harvinder Anand
Investment Representative

- GICS
- Bonds
- Stocks
- Mutual Funds
- RRSPS RRIFS RESPS
- Life insurance
- Disability Insurance
- Critical Illness Insurance

INSURANCES AND ANNUITIES ARE OFFERED BY
EDWARD JONES INSURANCE AGENCY

Phone No: 905-472-8300 www. edwardjones.com

280 Elson St. Unit # 5, Markham, Ont. L3S 3L1

मुन्ना

डॉ. मधु संधु

कदम कदम चलना सीख गया है मुन्ना। नन्हें-नन्हें कदमों से भागता है तो सांस रोके देखती रह जाती हूँ। पक्षियों के पीछे जाएगा। तितलियों को देखेगा और कभी रात में अगर जुगनू दिखाई दे जाएं तो चांदी है मुन्ने की।

पानी में तो उसके प्राण बसते हैं। एक दिन दरवाजे के पास जरा-सा बरसात का पानी इकट्ठा हो गया। मुन्ने के मन में तो लड्डू फूट लिए। नन्हें-नन्हें पांवों से पानी में छप-छप करता छींटें उड़ाता खिलखिलाने लगा। गर्मियों का मौसम हो तो बात ही और है। पाइप पकड़ घास को नहला देता है। क्यारियों में बाढ़ ला देता है। पेड़-पौधों की नख-शिख धुलाई कर देता है। पाइप के आगे जरा-सी अंगुली अटका दूरगामी और ऊँची बौछार बनाते उसकी मुस्कान फूट-फूट पड़ती है। नहाने के लिए जब टब में बैठ जाए तो घंटों बीत जाते हैं और निकालना मुश्किल हो जाता है।

मुन्ने ने रेसिंग साइकिल ली है। उसका मन करता है कि इसे खूब तेज चलाए और घर से बाहर चलाए। घर चार सौ गज का हो या हजार गज का - उसे सदा छोटा ही लगता है। बाहर को भागता है। सबका ध्यान दरवाजे की चिटकनी लगाने में ही अटका रहता है। ममा-पपा वाले घर की गली में हर पल कारें-स्कूटर आते-जाते रहते हैं और ममा की ममा यानी नानी यानी मॉम को भी वाहनों से, कुत्तों से डर लगता है। पर वह लाडला है। उसकी कोई भी आकांक्षा मॉम के यहां टाली नहीं जा सकती। मॉम साथ-साथ जाएंगी। यहां अपना तिपहिया वाहन चला कर मुन्ने को बहुत मज़ा आता है। दाएं मुड़ो तो आगे शापिंग काम्पलेक्स है। वह मनपसंद खरीददारी करने के बाद अपनी चीज़ें डिक्की में रख लेता है। बाएं मुड़ो तो पार्क है। मुन्ना सीसा लेता है, रेलिंग लेता है, मेरी-गो-राउंड पर मजे करता है, लटकने का यत्न करता है, झूले पर धीरे-धीरे झूलता है और फिर संतुष्ट मन से लौट आता है।

मुन्ना आग से खेलने वाला बहादुर बच्चा है। अग्नि देवता की उपस्थिति में उसके तेवर ही बदल जाते हैं। मंदिर उसे अच्छा लगता है, क्योंकि वहां उसे माचिस या लाइटर मिल जाते हैं। वहां धूप या अगरबत्ती होती है, ज्योति होती है। हवन उसे अच्छा लगता है, क्योंकि जैसे ही उसमें सामग्री या आहूति डालो, अग्नि तेज होने लगती है। जन्म दिन उसे भाते हैं, क्योंकि किसी का भी जन्मदिन हो, वर्षगांठ हो-केक की मोमबत्तियाँ जलाने का काम मुन्ने के सुपुर्द ही रहता है। उसकी दीपावली महीनों चलती है। उसके लिए कुछ शुर्लियां, कुछ फुलझड़ियाँ, कुछ चक्रियां, कुछ अनार बचा कर रखने ही पड़ते हैं।

मुन्ना आता है तो मेरे घर में, मन में उत्सव-सा उन्माद छा जाता है। मुन्ना बोलता है तो ठंडी बौछारें पड़ने लगती हैं, खिले-खिले फूलों की सुगंध हर ओर फैलने लगती है।

मुन्ने के मॉम में प्राण बसते हैं। क्योंकि ममी-पापा दिन में पचास बार कहेंगें - यह मत करो, यहां मत जाओ, इसे मत छेड़ो। बहुधा घूरना और थप्पड़ दिखाना उनके सारे लाड पर पानी फेर देता है। पर मॉम है कि मुन्ने के मन की हर बात पहले ही जान लेगी। वह उन्हें डोमिनेट कर सकता है। अपने इशारों पर नचा सकता है। कर्त्ता होने का सुख भोग सकता है।

खिलौनों के प्रति उसका स्वाभाविक आकर्षण है। अगर गुब्बारे वाले के यहां कुछ खास पसन्द आ जाए तो झट से बोल देगा, मैं अब बड़ा हो गया हूँ, गुब्बारों से नहीं खेलता। तीर-कमान से राम जी की तरह खेलूंगा। बैट बाल ठीक है। लॉन के किसी पेड़ की टहनी तोड़-मोड़ कर कंधे पर रखेगा और कहेगा- 'मैं हनुमान जी बन गया हूं। लक्ष्मण जी के लिए संजीवनी बूटी लाया हूँ।'

कुछ न पसंद आए तो यह भी बोल देगा- 'यह तो लड़कियों वाला है।'

उसके खेल नितान्त मौलिक हैं।

मुन्ना चाकलेट बेचेगा, सब्जी बेचेगा, केला बेचेगा। पूछ कर देखें-

'चाकलेट अंकल! चाकलेट कितने का?'

'दो पैसे का।'

'अंकल एक देना।'

वह झूठमूठ का चाकलेट देगा, पैसे लेकर जेब में डालेगा और कहेगा-

'यह लो बाकी पैसे।'

उसकी सर्वाधिक प्रिय गेम है- कारीगर बनना, मेकैनिक बनना और सर्वाधिक प्रिय खिलौने हैं - स्कूटर या कार के औजार। इस तरह की मकैनो भी उसे पसंद है। अपने तिपहिया वाहन को उलटा करके घंटों लगा रहेगा।

स्कूल-स्कूल खेलना और टीचर बनना उसे पसंद है। चादर में घर बनाना उसे भाता है।

'ट्रिन ट्रिन।'

'कौन है?'

'मैं हूँ! रक्षिता!'

'आइए जी, आइए जी। बैठिए।'

'नमस्ते जी।'

'क्या हाल-चाल हैं?'

'हम तो ठीक हैं बस।'

'आप कोक पिएंगे या चाय?'

मुन्ना बड़ों की तरह बोलता है।

बाजार जाने का उसे विशेषत: रहता है।

'मॉम चलो।'

'कहाँ?'

'डाक्टर सैट लेना है।'

और डाक्टर सैट उसे इतना पसंद आया कि पूछो न।

चार दिन बाद लोहड़ी थी। कहा-

'आज खेल लो, तब ले जाना।'

पर डाक्टर सेट की सुरक्षा के लिए वह इतना सतर्क हो उठा कि उसे सिर के नीचे रखकर सोया। जाते समय अटैचीनुमा वह डिब्बा अपने हाथ में ही रखा। ऐसे मौकों पर किसी पर भी भरोसा करना उसे नहीं भाता।

मुन्ने के कुछ रहस्य हैं, जिन्हें वह किसी से साझा नहीं करता और मन की सात परतों में छिपे रहस्य सिर्फ मॉम को बताएगा। घण्टों खेलने के बाद लॉन में छोटी कुर्सी पर बैठा मुन्ना गुरु गम्भीर स्वर में बोला-

'ममा मुझे मारती है।'

'पहले मारती है, फिर कहती है चौप?'

उसने तुतलाती आवाज में अपने दुख सांझे किए।

मॉम अंदर-बाहर तक हिल गई। पौने तीन साल के बच्चे के दुख। और फिर मुन्ने की ममा को समझाया गया। हिदायतें दी गई। कोमल मन पर खरोंच न पड़ जाए, ठीक-गलत का अंतर स्पष्ट किया गया। दिनों तक मॉम कभी मुन्ने से, कभी उसकी ममा से पूछताछ करती रही। स्कूल में कोई बचचा परेशान करे तो छुट्टी तक उसके चेहरे पर परेशानी खुदी रहती है। हां! ममा से बात करने के बाद उसका मन अवश्य हल्का हो जाता है।

एक नम्बर का नकलची है मुन्ना।

'मुन्ना! गुप्ता अंकल कैसे हँसते हैं?' दोनों हाथों से ताली बजा जोर-जोर से हँसेगा।

'नानू क्या कहते हैं?'

'ओ तेरा भला हो जाए।'

आपके आने पर दीदी (मौसी) क्या कहती है-

'हैलो जीजू'।

'जीजू कौन है?'

'मैं हूँ।'- वह पूरे आत्मविश्वास से बोलता है।

उसके रहस्यों की कई परतें हैं। आत्मीयता के क्षणों में बोला-

'मुझे आपका घर ममा के घर से अच्छा लगता है, पर ममा को नहीं बताना।'

अगर उसकी बात बता दो, तो गुस्से में डांट अवश्य जाएगा।

शरारतों से बाज न आने पर कभी मुन्ने को पुलिस अंकल से, कभी बोरी वाले बाबे से, कभी काक्रोच से, कभी छिपकली से डराया जाता था। पर जल्दी ही उसने इस झूठ को खेल में तबदील कर दिया। मोबाइल पकड़ पूरे रौब से बोलेगा-

'पुलिस अंकल ममा को पकड़ कर ले जाओ। मुझे तंग कर रही हैं।'

'मुझे पुलिस पकड़ कर ले जाए।' ममा ने रोने का नाटक किया।'

पर मुन्ना पूरे रौब में था- 'सॉरी बोलो।'

'सॉरी।'

'पुलिस अंकल! मत आना, ममा ने सॉरी बोल दिया है।'

कालोनी के सिक्योरिटी गार्ड से मुन्ने की दोस्ती हो गई है। उसके पास

देर तक बैठा-खड़ा बतियाता रहता है।

वह पूछेगा- 'आपका बाईक कितने का है।'

मुन्ना झट से जवाब देगा- 'दो रूपए का।'

'पेट्रोल डलवा लिया ?'

'हां ! दो हजार का पेट्रोल डलवा लिया।'

मुन्ने के कानों में अतिरिक्त श्रवण शक्ति है। दूर से आ रही बेकरी वाले की आवाज़ उसे सुन जाती हैं। वह चौकन्ना हो उठता है। उठकर अंगुली पकड़ लेता है। बाहर तक ले आता है और फिर आंखें घुमा-घुमा कर संकेत देता है कि वैफर/ चिप्स वाले अंकल आ रहे हैं।

तर्कशक्ति अकाट्य है मुन्ने की।

'खाना ऐसे फेंकते हैं ? भगवान जी होते हैं इसमें'- ममा ने डांटा।

चपाती की बाइट मुँह में डालते बोला- 'क्या मैं भगवान जी को खा रहा हूँ ?'

छिपकली और काक्रोच से मुन्ना डरता है और उसे स्पष्ट है कि इनसे डरना चाहिए। बाथरूम में एक छोटा-सा छिपकली का बच्चा देख वह भयभीत हो गया। मैंने उसे बातों में लगाना चाहा-

'छिपकली ने कपड़े ही नहीं पहने।'

वह झट से बोला- 'छिपकली कपड़े नहीं पहनती।'

'छिपकली की ममा कहां है ?'

'छिपकली की ममा नहीं होती।'

हर बात समझने और समझाने का उसका अपना तरीका है।

'आप एरोप्लेन में श्रीनगर जाओगे, तो बड़ा मज़ा आएगा। एरोप्लेन में खाना भी आता है।' मैने उसका व्यावहारिक ज्ञान बढ़ाने के लिए कहा।

'मैं ममा-पापा के साथ छुक-छुक गाड़ी पर दिल्ली गया था, तो वहां भी खाना आता था।'

चीज़ों और बातों में संगति बिठाना उसे आता भी है और भाता भी है।

पास-पड़ोस में, नाते- रिश्ते में, जान-पहचान में अनेक नन्हें बच्चे हैं, लेकिन इस मन में मुन्ने की जगह अपनी है, अपनी और अद्वितीय।

◆◆◆

Chander M. Kapur, CMA, CA

Professional Corporation
Chartered Accountant

2750 14th Avenue, Suite #201
Markham, Ontario
L3R 0B6

Tel: (905) 944-0370
Fax: (905) 944-0372
E-mail: cmkapur@rogers.com

Teachers Training

स्वातन्त्रय RYS 200 योग

Registered Yoga School

FREEDOM YOGA

Become a Yoga Alliance Registered Yoga Teacher

July 1st 2009 - July 25th 2009

September 26th 2009 - March 2010

Every Saturday – 9 a.m. - 3p.m.

What are the benefits of yoga?

- Reduces stress & tension
- Lowers fat
- Stimulates the immune system
- Creates sense of well being and calm
- Seasonal Allergies

Research shows Yoga can manage or control anxiety and depression, insomnia, arthritis, asthma, back pain, high blood pressure, carpal tunnel syndrome, chronic fatigue, diabetes, headaches, heart disease, pms and menopause symptons, multiple sclerosis, and more.

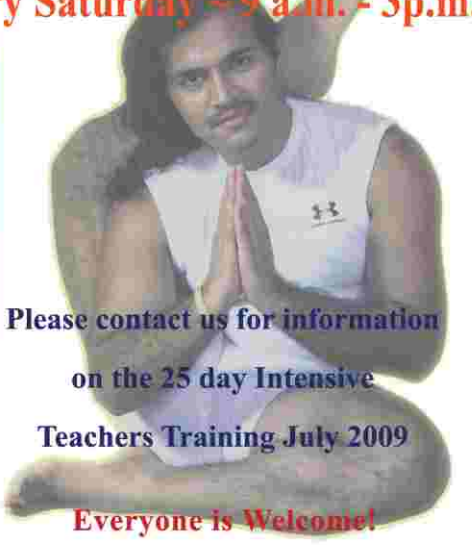

Please contact us for information on the 25 day Intensive Teachers Training July 2009

Everyone is Welcome!

Explore:

- Asana/Yoga Sutra
- Gentle & Advance Pranayama
  -Kapalabhati
  - Bhastrika
- Meditation
- Philosophy
- Yoga Kriya
  -Jal & Sutra Neti
- Yogic Diet & Lifestyle
- Ayurveda
- Hatha Yoga
- Gentle Yoga
- Family Yoga
- Kid's Yoga
- Hot Yoga
- Private Lessons
- Corporate Yoga
- Teachers Training

Freedom Yoga Gurukul
Brampton, ON
www.freedomyoga.ca
omfreedomyoga@yahoo.ca

Aacharya Sundeep Tyagi: (647) 282-2529
Haley Tyagi: (416) 402-9642

अमरीका वाला

डॉ. आफ़रोज़ ताज

मेरी चार साल की बेटी ने मेरा चेहरा अपनी गोद में ऐसे जकड़ रखा था जैसे कह रही हो कि अब कभी नहीं छोड़ूँगी डैड, कभी नहीं, अब कभी नहीं जाने दूँगी अपनी छोटी-छोटी बाहों से अलग ।

एयरपोर्ट की भीड़ बढ़ती जा रही थी बड़ी मुश्किल से अपना चेहरा अपनी बेटी के छोटे-छोटे हाथों से छुड़ाकर देख पाया, मेरी पत्नी सूज़न मेरे सामने खड़ी थी, आँखें ख़ुशी के आँसुओं में सराबोर मानो कह रही हों थैंक गाड तुम ख़ैरियत से ज़िन्दा वापस आ गये। मेरी आँखें भी फूट पड़ीं मगर आने की ख़ुशी में ही नहीं बल्कि किसी और वजह से भी। मैं ज़िन्दा तो वापस आया हूँ मगर ज़िन्दगी वहीं छोड़ आया इराक़ में। मुझे मानसिक रोगी समझकर तन और मन तो यहाँ भेज दिये हैं। मस्तिष्क कहीं छोड़ आया हूँ वहीं।

मेरा नाम स्टीव जेकबसन है। मैं यू.एस.ए. की फ़ौज का एक सिपाही बनाकर इराक़ की गलियों में भेजा गया था, अमन कायम रखने के लिये, दुखियों को उनके घरों तक पहुँचाने के लिये, मारने कम बचाने के लिये ज़्यादा। मारने का काम हो चुका है अब बचाने की बारी है, रुलाने का काम हो चुका है, अब आँसू पोंछने की बारी है।

हम सारे-सारे दिन मलबों में दबी आवाज़ों का पीछा करते। कभी कामयाब होते, कभी नहीं। फावड़ों, कुदालों और मशीनों से बड़े-बड़े महलों के ताक़ और महराबों को हटाते, हिलते हुए हाथों में हाथ देकर उन्हें अपनी ओर खींचते। कुछ ज़ख़्मी बदन सहारा देखने के बावजूद अपना हाथ हमारे हाथ से खींच लेते मानो कह रहे हों 'हमें नहीं चाहिये तुम्हारी मदद, तुम्हारी दया, तुम्हारी दोस्ती।' हम उनसे आँख से आँख मिलाकर अपनेपन और हमदर्दी का यकीन दिलाते हैं वे उसका जवाब अपनी आँखों में भरी नफ़रत से देते। लेकिन कुछ तो इतनी तकलीफ़ से गुज़र रहे थे कि उनके लिये नफ़रत या मुहब्बत में कोई फ़र्क़ न रह गया था। वे उस पीड़ा से गुज़रे थे कि अब उनके लिये एक बूंद राहत काफ़ी है ।

अचानक मेरे सामने टूटे घर के ढेर के पीछे अंधेरे कमरे से एक चार पाँच साल की बच्ची फटी अधजली मगर ख़ूबसूरत सी फ्राक पहने, सुनहरे बालों में धुआँ रचाये हुए तेज़ी से दौड़कर एक टूटी दीवार के पीछे छुप गई जैसे ख़रगोश किसी आहट के कारण एक झाड़ी से निकल कर झपक से दूसरी झाड़ी

में छुप जाता है।

भागो नहीं, हम तुम्हारी मदद करने आये हैं।

मेरे यह कहने से क्या फ़ायदा । मेरी आवाज़ मेरे पास वापस आ गई । वह इंग्लिश कहाँ समझ सकी होगी।

आज यह बच्ची हमारे कैंप में थी, डरी-डरी, सिसकती हुई। न जाने कितनी मेहनत के बाद हम उसे पा सके। लगता था वह उसी का घर था जहाँ हमने उसे पहली बार देखा था। शायद उसका घर, उसके घर वाले सब तबाही की नज़र हो गये। स्कूल से आने के बाद उसने ख़ुद को अकेला पाया और कई रोज़ तक वह वहीं खड़ी रह गई बिना पानी, बिना खाना, बिना नींद।

वह कुछ न बोलती, थोड़ा खाती और फ़ौरन सो जाती। मैंने आँखों आँखों में बातचीत शुरू की । उसने कहा 'मेरा बाप तुम जैसा था।'

मैंने कहा 'मेरी बेटी तुम जैसी है, तुम्हारी उम्र की, बिलकुल तुम जैसी।'

उसने कहा 'तुम्हारे चेहरे की मुस्कान मेरे पापा से मिलती है।'

मैंने कहा 'कहाँ है तुम्हारा पापा ?'

उसने कहा 'मालूम नहीं, हाँ इतना मालूम है कि साल भर पहले वे आफ़िस गये थे और फिर वापस कभी न आ सके, दूसरे पापाओं की तरह।'

मैंने कहा 'और तुम्हारी माँ ?'

उसने कहा 'वह भी मालूम नहीं, सुना है शायद किसी गोला बारूद की ज़द में आ गयीं और फिर...'

मैंने उसके छोटे-छोटे गालों से आँसू पोंछे। ग़म में डूबी आँखें लगातार अपनी कहानी सुनाती रहीं और मैं समझता रहा।

आँखों की कोई भाषा नहीं होती। आँखों की सारी ही भाषाएँ होती हैं। उसकी मासूम आँखों ने वह सारा कह सुनाया जो उस पर बीता और वह भी जो उसने दूसरों पर बीतते देखा और फिर धीरे-धीरे आँखें थक कर सो गयीं, मेरे सीने से लग कर, शायद राहत पाकर। मेरी राहत ? उसका भला कौन अनुमान लगा सकता है। मुझे मेरी बिछड़ी बेटी की सूरत मिल गई, मेरा घर मिल गया।

'तुम्हें एक दिन इस लड़की को भेजना पड़ेगा, वापस किसी अनाथ कैम्प में।' मेरे दोस्त माइकल ने चेतावनी दी। मैं और माइकल एक ही फ़ौजी टैण्ट में महीनों से साथ रहते आये हैं। और यहीं यह बच्ची हमारे साथ रहती है, ख़ामोश-ख़ामोश, डरी-डरी, मगर मुझसे जुड़ी जुड़ी और मेरी आत्मा उससे ।

माइकल ने फिर कहा 'सुना तुमने स्टीव, इस लड़की को भेजना पड़ेगा। इतने दिन से यह हमारे टैण्ट में है। इससे ज़्यादा दिनों तक

मैंने काग़ज़ देखा।
मेरी आँखों तले अंधेरा छा गया।
मैंने उस अंधेरे में देखा कि
लोग एक-दूसरे पर अब गोलियाँ नहीं
फूल बरसा रहे हैं।
मेरे सामने काग़ज़ पर
मेरी बेटी का नाम लिखा था
'जमीला जेकबसन।'

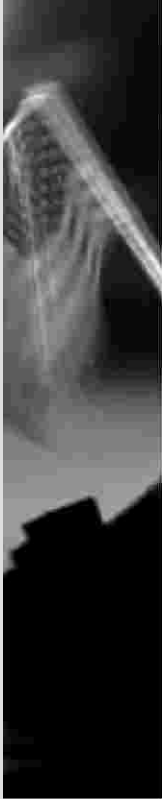

तुम इसे नहीं रख सकते। हम कहाँ तक इसकी देखभाल कर पायेंगे ? एक दिन इसको जाना होगा, किसी अनाथ कैम्प में।'

मुझसे रहा न गया 'यह अब अनाथ नहीं है। मैं इसका बाप हूँ और माँ भी।'

वह तो तुमसे एक शब्द भी नहीं बोलती।

बोलने का नाम ही रिश्ता नहीं है, माइकल।

वह मुझे सवालिया नज़रों से देखता रह गया।

मैंने उसके माता-पिता का हर जगह पता लगाया, रिफ्यूजी कैम्पों में, अस्पतालों में, गलियों में, कूचों में। कहीं कोई सुराग़, कोई सिरा नहीं मिला, चारों ओर धुआँ ही धुआँ, अंधेरा ही अंधेरा। जितना-जितना मैं तलाश करता उतनी-उतनी न उम्मीदी बढ़ती जाती। मगर बड़ी अजीब बात है कि अंदर-अंदर ख़ुशी बढ़ती जाती, अनजान ख़ुशी। उस बच्ची का कोई न पाकर उसके पाने की ख़ुशी। उसका कोई अपना न पाकर, उसको अपनाने की ख़ुशी। इनसान का मस्तिष्क एक अजब गुत्थी है। मानव के मन में क्या डोलता है, यह मानव भी नहीं जानता। बाहर से मैं उस बच्ची की बेहतरी चाहता था परंतु भीतर से यह भय कि कहीं उसका कोई अपना न मिल जाये जो मुझसे उसे छीन ले। यह भय मेरे अभ्यंतर में कहाँ छुपा था, यह मुझे पता न था। मुझे उसके अपनों के न मिलने का दुख और मिल जाने का डर दोनों खाये जा रहे थे। लेकिन एक दिन वही हुआ जिसका मुझे डर था। माइकल ने मुझे बताया कि बसरा के किसी शरण कैम्प में कोई औरत होश आने पर बता रही थी कि उसकी एक बच्ची है जमीला, कोई चार साल की। हुलिया वही है जो इस बच्ची का है।

उफ! मेरे मन का एक कोना अंदर से रोने लगा और ऊपर से मेरी

ख़ुशी का ठिकाना न रहा। मैंने आवाज़ दी 'जमीला।'

और वह एक पल में मुझसे लिपट गई। मेरी ओर देखा जैसे वह कह रही हो 'क्या बात है पापा?'

आज शाम बाहर दूर से गोलियों की आवाज़ें करीब होती जा रही थीं। बच्ची ने सर मेरे सीने में छुपाया हुआ था। यह कोई नई बात न थी। यह एक फ़ौजी कैम्प ही तो था। हाँ मगर यहाँ बड़ी सिक्युरिटी थी। किसी का यहाँ तक पहुँचना मौत के मुँह में आना था।

मैं बच्ची के लिये चावल बनाता जा रहा था और सोच रहा था कि मैं इसे एक दिन गोद ले लूँगा। माइकल से कहूँगा कि किसी को ख़बर न हो।

'हो सकता है कि इसकी माँ न हो?' मैंने माइकल से पूछा ।

'अरे भाई, उस औरत के सारे सबूत साफ़ हैं। बच्ची का नाम, पता, वग़ैरा वग़ैरा।'

मैंने मन में सोचा माइकल तुम्हारी एक न चलेगी। मैं इस बच्ची को किसी को न दूँगा चाहे वह माँ ही क्यों न हो।

किन्तु मेरी एक न चली। माँ को ख़बर मिल गई कि उसकी बेटी ज़िन्दा है, कहीं किसी फ़ौजी की हिरासत में। किसने ख़बर भेजी, कैसे पहुँची, कौन जाने? मैं इतना जानता था कि वह मुझसे छिन रही थी। वह नन्हा मेहमान अब चंद रोज़ मेरे साथ था। किसी दिन कोई आ सकता है मेरा दिल मेरे सीने से निकालने के लिये।

उस रात वह मेरे बराबर सो रही थी, बेख़बर। मेरा हाथ उस फ़रिश्ते के हाथ में था। मगर मैं बेचैन था। अपनी पीड़ा का दूसरों की पीड़ाओं से तुलना करता रहा। कभी जीतता रहा कभी हारता रहा। करवटें बदलता रहा। उस रात गोलियों की आवाज़ें सोने नहीं दे रही थीं और मन की थकान जागने नहीं दे रही थी। गोलियों और गोलों की आवाज़ें कभी घटतीं कभी बढ़तीं। चारों और अंधकार ही अंधकार। टैण्ट के एक तरफ़ से माइकल के हल्के-हल्के ख़र्राटों की आवाज़ आ रही थी। धीरे-धीरे अंधेरा रोशनी में बदलने लगा। शायद सुबह के पाँच ही बजे थे। अचानक एक गोली करीब से चली। बच्ची उछल पड़ी। मैं उठ बैठा।

गार्ड अंदर टैण्ट में दाख़िल हुआ और बोला 'सर मुबारक हो। आपकी जान बच गई। एक इराकी औरत न मालूम कैसे यहाँ तक आ गई और आपके टैण्ट में जाने ही वाली थी कि हम ने काम कर दिया।'

मैंने बच्ची की ओर देखा। शायद वह मेरी आँखों की भाषा समझने की कोशिश कर रही थी।

'मुझे गले नहीं लगाओगे स्टीव?' मेरी पत्नी सूज़न की आँखों से प्रतीक्षा और अभिनन्दन के आँसू उमड़ पड़े।

मैं भी सूज़न से गले लगकर छोटे बच्चों की तरह रो पड़ा। उसके आँसू मैं समझता था पर मेरे आँसू कौन जाने?

आज सोमवार का दिन था। खिड़की से पेड़ों के लम्बे कद हवा से झूलते बड़े अच्छे दिख रहे थे। काफ़ी दिन के बाद आज सर्दी की धूप झाँक रही थी। किचन से कुछ ख़ुश्बूएँ आ रही थीं। शायद सूज़न कोई केक बना रही थी। चारों ओर वातावरण में शान्ति थी। यकायक मैं उछल पड़ा। मेरी बच्ची और सूज़न ज़ोर से चीखे,

'हैपी बर्थडे!'

दोनों हंस पड़े बच्चों की तरह। बच्ची के हाथ में केक और सूज़न के हाथ में तोहफ़ा। तीनों ने मिलकर केक खाया। बड़ा स्वादिष्ट था ।

'मेरे लिये तोहफ़ा भी है?'

'एक नहीं, दो तोहफ़े', सूज़न ने कहा 'एक यह काग़ज़ और दूसरा यह पैकट। इस काग़ज़ पर हस्ताक्षर कीजिये। आज हमारी बेटी पहली बार स्कूल जा रही है?'

मैंने काग़ज़ देखा। मेरी आँखों तले अंधेरा छा गया। मैंने उस अंधेरे में देखा कि लोग एक-दूसरे पर अब गोलियाँ नहीं फूल बरसा रहे हैं। मेरे सामने काग़ज़ पर मेरी बेटी का नाम लिखा था 'जमीला जेकबसन।'

मेरी पत्नी की आँखों ने मुझसे कहा 'हाँ, हमने बेटी का नाम बदल दिया है। तुम्हारा दोस्त माइकल मुझे सब लिखता रहता था।'

मेरे अतीत की गोलियां फूलों में बदलने लगीं और मैं फूलों में ढकता चला गया। छोटे-छोटे बच्चे अपनी-अपनी माँओं की गर्दनों में झूल गये। मेरा खोया हुआ मस्तिष्क मेरे मन से आन मिला।

मैं भरी-भरी आँखों से अपना तोहफ़ा खोलने लगा। देखा तो मेरे सामने रबीन्द्रनाथ टैगोर की कहानियों का संग्रह था 'काबुलीवाला।'

◆◆◆

Maharani Fashions

- Ladies Designer Suits
- Sarees
- Salwar Kameez
- Men's Suiting
- Imitation Jewellery

An Exciting Collection of The
Latest in Festive Fashions!!!

1417 Gerrard Street East, Toronto,
Ontario M4L 1Z7
Tel: 416-466-8400

हरियाणा साहित्य अकादमी
द्वारा पुरस्कृत

जहां से चले थे

मनमोहन गुप्ता मोनी

मुझे आज भी वो वैसी ही लगी थी। तीस वर्ष पूर्व की बिन्दु और आज की बिन्दु में कोई विशेष अंतर नहीं था। कनपटियों के पीछे के बालों और पहरावे पर गौर न करें तो कोई कह ही नहीं सकता था कि बिन्दु पचपन के आसपास होगी। जिसे बचपन में चाहा और जिंदगी के इस पड़ाव में आकर उससे भेंट हो जाए, तो समय लौट-सा आता है। मन उसी प्रकार उछलने लगता है जैसा कभी बचपन में होता था। लेकिन ओढ़ी हुई मर्यादा किसी ओज़ोन की परत-सी फैल जाती है। बिन्दु पहले तो मुझे देखती रही। शायद इस इंतजार में थी कि चुप्पी तोड़ूं परंतु मैं बात का सिरा ढूंढने में ही लगा था कि वह बोल पड़ी-

'इत्ते दिन बाद दिखाई दिए ?'

मेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं था। अगर वो यह न पूछती तो शायद मैं भी उससे यही सवाल पूछता। लेकिन उसने पहल कर डाली थी। सो, उत्तर भी मुझे ही देना था। मैं उससे बस यह कह पाया-

'तुम्हारा कुछ अता-पता होता, तो न ?'

अब उसके पास इसका कोई उत्तर नहीं था। उसने मेरी उंगलियों को देखा। मेरा हाथ पलटा और कहने लगी-

'राहुल, नाखून अभी भी चबाते हो।'

'कुछ आदतें जाते-जाते ही जाती हैं। लेकिन कुछ तो जाती ही नहीं।'

'ऐसी और कौन-सी आदतें हैं जो पहले भी थीं अब भी हैं।'

'अभी भी रात को देर रात तक जागता हूँ। कभी-कभी तो दो भी बज जाते हैं।'

'अब भी ?' बिन्दु को आश्चर्य हुआ था।

'हाँ, पत्रकार हूं न। अखबार की नौकरी में तो यह सब चलता ही है। अकसर रात की ही ड्यूटी रहती है।'

'मैं समझी थी कि...'

'क्या समझी थी ?'

'कुछ नहीं।'

'यह आदत तुम्हारी पहले भी थी। बात शुरू करके बीच में ही छोड़ देने की।'

'मुझे अच्छा लगता है इसमें।'

'ऐसा अच्छा तो तुम्हें पहले भी लगता था।'

'अभी भी इतनी रात तक जागते हो, उल्लू की तरह।'

और वह खिलखिला पड़ी थी। उसकी आंखों के कोर से आंसुओं की बूंदें छलछला आयी थीं। मैं यह अनुमान नहीं लगा पाया कि ये आंसू खुशी के हैं या... मैं चाह रहा था कि आज बिन्दु से इस थोड़े समय में उसके इन तीस सालों का खुलासा पूछ लूं। लेकिन वह एक के बाद एक प्रश्न किये जा रही थी। जब मैंने उससे पूछा कि घर में और कौन-कौन हैं। इस पर वह उठ खड़ी हुई। मेरा हाथ पकड़ कर कहने लगी- आफिस में ज्यादा देर बैठना ठीक नहीं। चलते हैं। मैं भी यंत्रवत उसके साथ-साथ चलने लगा। चलते-चलते उसने ढेर सारी अपनी बातें कह डाली थीं। मुझे उसके साथ चलते हुए ऐसा लग रहा था मानो मैं थकने लगा हूं। मुझे अपने पैर बोझिल लगने लगे थे। एक-एक कदम उठाते हुए मुझे बहुत कष्ट हो रहा था। कालेज के दिनों में जब हम

दोनों इसी प्रकार निकलते तो मैं आहिस्ता ही चलता था। बिन्दु की तेज चलने की वो आदत आज भी वैसी ही थी। तब भी वह मुझसे पूछती कि तेज क्यों नहीं चलते। मैं कह देता कि तुम्हारा साथ अच्छा लगता है। मैं नहीं चाहता कि रास्ता जल्दी कट जाए। फिर वह मेरा हाथ पकड़ कर मुझे घसीटती हुई चलती थी। कभी-कभी अपने पर्स में से मूंगफली निकाल कर उन्हें छील कर दाने अपनी हथेली पर रखकर कहती थी कि उठाओ। मैं अगर आहिस्ता से उठाता तो अपनी मुट्ठी में मेरी दो उंगलियां कैद कर लेती और मानो एक कविता ही कह डालती-

'अगर तुम्हें कोई अच्छा लगता है तो क्या उसे छूने का मन नहीं करता?'

मैं उसकी ऐसी बातों का उत्तर कम ही दे पाता था। यह बात नहीं कि मैं उत्तर देना नहीं जानता था। समस्या यह होती थी कि प्रश्न पूछने के बाद वह इतना समय ही नहीं देती थी कि उत्तर दे पाऊं। वह तुरंत उत्तर भी स्वयं ही दे डालती थी या फिर दूसरा प्रश्न उछाल देती थी। मेरे मन में सैकड़ों प्रश्न कुलबुला रहे थे। लेकिन वह बारी की प्रतीक्षा में थे। आज भी उसने जब मेरा हाथ पकड़ा, तो मुझे अच्छा लगा। लेकिन न जाने क्यों मैंने अपना हाथ पीछे खींच लिया था।

शायद इस बात का उसने कोई नोटिस नहीं लिया और कहने लगी-

'तुम्हारे हाथ अभी भी गुनगुने रहते हैं।'

मैं नहीं चाहता था कि आज कोई भी प्रश्न निरुत्तर रहे। इसलिए इससे पहले कि वह अन्य कोई प्रश्न करे या उत्तर दे मैं बोल पड़ा था। मैंने उसी का बरसों पुराना उत्तर दे डाला था-'विश्वास करने वाले हर व्यक्ति के हाथ गर्म होते हैं।'

मेरी बात खत्म होते ही उसने पूछ लिया।

'मेरे हाथ कैसे लगे?'

मैं तो सोच भी नहीं सकता था कि वो यह प्रश्न भी पूछ सकेगी। यह ज़रूरी नहीं कि इनसान की उम्र बढ़ने के साथ उसकी सोच भी बदल जाए। मैं तो यह महसूस ही नहीं कर सका था कि उसके हाथ कैसे हैं। उसे कहता भी कैसे कि पता ही नहीं चला कि उसके हाथ गर्म हैं या ठंडे। इस बार भी मैं निरुत्तर हो गया था और मात्र मुस्करा दिया। वह कहां चूकने वाली थी। 'तुम्हारी आदतें अब भी वैसी ही हैं। हर बात का जवाब नहीं देते। अच्छा बताओ इन तीस सालों में मुझे कभी याद किया?'

'तुम्हारा साथ जिया एक-एक लम्हा मैंने संजोकर रखा हुआ है। तुम्हारे खत अभी भी मेरी किताबों में महक रहे हैं।'

'खत?' सुनकर उसका चेहरा लाल हो गया। मुझे लगा कि अब उसका जिस्म ज़रूर तपने लगा होगा। मैं उसके चेहरे के बदलते भावों को देखने लगा। अब वह आहिस्ता चलने लगी थी। मैंने उसका हाथ पकड़ कर तेज चलने को कहा। मुझे लगा कि उसके हाथ वाकई तप रहे थे। अब हम दोनों साथ-साथ चल रहे थे। मैं कुछ अधिक हांफ रहा था। वह कई बार पूछ चुकी थी कि हम कहां चल रहे हैं। मैंने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। वह यह तो सोच रही होगी कि मैं उसकी किसी भी बात का उत्तर जल्दी नहीं देता हूं। इस बार भी चुप रहा। यह बात नहीं कि मैं तय नहीं कर पाया था कि कहां जाना है। मैंने उससे कह ही दिया कि घर चलेंगे।

'किसके?'

'किसी के भी। तुम्हारे भी चल सकते हैं। जिसका घर नज़दीक होगा, उसी के यहां चलेंगे। तुम आयी कैसे हो?'

'गाड़ी है मेरे पास। ए ब्लाक में एक मैकेनिक के पास दी थी सुबह। आओ इकट्ठे चलते हैं।'

'गाड़ी तो मैंने भी ए ब्लाक पार्किंग में खड़ी की हुई है। ऐसा नहीं हो सकता कि हममें से एक अपनी गाड़ी यहीं छोड़ जाए।'

'होने को तो कुछ भी हो सकता है। परंतु मैं अपनी गाड़ी नहीं छोड़ पाऊंगी। वैसे भी तुम शहर में ज्यादा पुराने नहीं हो। मुझे रास्ते ज्यादा मालूम हैं। तुम अपनी गाड़ी निकालो, मैं यहीं आकर मिलती हूं। मेरी गाड़ी के पीछे-पीछे चलना। बहुत दूर नहीं है मेरा घर।'

इस बार भी उसकी बात को काट नहीं सका था, हर बार की तरह।

उसकी कार के पीछे-पीछे चलने से मुझे कई फायदे हुए। शहर भी घूम लिया और कार से बाहर सिर निकाल कर जगह-जगह रास्ता नहीं पूछना पड़ा। आधा घंटा बाद हम एक बड़ी-सी हवेली के बाहर थे। एक नेमप्लेट पर हर्ष कुमार लिखा था। उसने पर्स में से चाबी निकाली और दरवाजा खोलकर भीतर चली गयी। मैं भी उसके पीछे चल रहा था। एक बड़े से ड्राइंग रूम में जाकर वह एक बड़े सोफे पर पसर गयी। मुझे भी इशारे से सामने ही बैठने को कहा। हम दोनों आमने-सामने बैठे थे। थोड़ी देर में वह उठी और फ्रिज से पानी की एक बोतल निकाल लायी।

मैंने उसे गिलास लाने को कहा। वह अंदर जाने लगी। साथ ही यह भी कहती गयी कि बस यह आदत बदल गयी है तुम्हारी। पहले तो फ्रिज से बोतल निकाल कर बोतल से ही पानी पी लेते थे।

'हां, अब उतना ठंडा पानी भी कहां पिया जाता है?'

'सो तो है।'

'घर में कोई नहीं है?'

'नहीं।'

'सच'

'हां, उनको गुजरे दो साल हो गये हैं। मैं यहीं बीमा कंपनी में मैनेजर हूं। अब

आफिस जाने को मन नहीं करता। किसके लिए जाऊं? उनकी भी पेंशन मुझे ही मिलती है।'

'दीवार पर ये जो तस्वीर टंगी है।'

'हां हर्ष की है, हार्ट फेल हो गया था इन्हें कलकत्ता रेलवे स्टेशन पर।'

मैंने देखा कि आज भी बिन्दु के चेहरे पर वही गंभीरता थी जो पहले भी विकट परिस्थितियों में दिखायी देती थी। मैं इतना ही कह पाया-

'बहुत बुरा हुआ।'

'अच्छा-बुरा तो व्यक्ति के दृष्टिकोण में होता है। तुम्हें बुरा लगा यह जानकर मुझे संतोष हुआ।'

'अकेली रहती हो इतने बड़े मकान में?'

'हां, उन्होंने बड़े शौक से बनवाया था यह। जिस महीने उनकी मृत्यु हुई उसी महीने इसके लोन की किस्तें भी पूरी हुई थीं। मानो इसे चुकता करने के लिए ही वह जिंदा थे। जिस रात कलकत्ता गये थे, कह रहे थे लौट आऊं फिर मनाएंगे जश्न घर में। कहते हैं कि रिटायर होने से पहले ही जिनके मकान की पूरी किस्तें हो जाती हैं, वे बड़े भाग्यशाली होते हैं। ऐसी फिजूल की परिभाषाएं न जाने कौन लोग बना डालते हैं। अब बताओ हम दोनों में कौन भाग्यशाली है। वे चले गये या फिर मैं जो अकेली रह गयी?'

'बच्चे वगैरह...' मैंने सकुचाकर पूछा।

'तीनों अपनी-अपनी जिंदगी जी रहे हैं। बड़ी लड़की की शादी दिल्ली कर दी थी। दोनों बेटे इंजीनियर हैं। एक कलकत्ता में तो दूसरा मुम्बई में। कलकत्ता वाले के बेटे का जन्मदिन मनाने ही तो गये थे।'

'मेरी मानो तो तुम भी रिटायरमेंट लेकर किसी बेटे के पास चली जाओ।'

'सलाह तुम अब भी पहले की ही तरह देते हो।'

मैं केवल मुस्करा दिया था। लेकिन बिन्दु की स्थिति देखकर मैं बेचैन था। यह तो पता चल ही गया था कि उसकी बेटी व एक बेटे की शादी हो चुकी है। मुम्बई वाले बेटे की शादी हुई है या नहीं इस बारे में उसने कुछ नहीं कहा था। मैंने ही पूछ लिया-मुम्बई वाले की शादी हुई या नहीं।

'हां, उसने भी पिछले महीने अपनी मर्जी से शादी कर ली।'

'अच्छा।'

'तुम्हारा यह अच्छा कहना सवालिया है या कि आश्चर्यजनक।'

'न सवालिया और न ही आश्चर्य वाला।'

'उसने न तो किसी को बुलाया और न ही कोई रीति-रिवाज ही निभाए। कहता था कि अग्नि को साक्षी मानकर कसमें वादे भले ही कितने किये जाते हों, उन्हें निभाता कौन है।' मैं बिन्दु को केवल सुने जा रहा था। उसका एक-एक शब्द पीड़ा से सना हुआ था। वह बोले जा रही थी।

'और हर्ष ने भी अग्नि के समक्ष कसमें खायी थीं कि हर सुख-दुख में साथ दूंगा। सुख में तो उन्होंने पूरा साथ दिया। अब उन्हें क्या पता कि क्या बीत रही है मुझ पर। बच्चों की जिंदगी अपनी है। उसमें तो हस्तक्षेप नहीं कर सकती न। जब इनसान को पता ही है कि कसमें-वादे निभाने वाली डोर उसके हाथ में ही नहीं है तो वह वादे करता ही क्यों है?' ऐसा कह कर वह चुप हो गयी। मैं भी मौन न तोड़ सका। वह फिर आहिस्ता से बोली-

'तुमने भी मेरे साथ एक वादा किया था। निभाया था?'

मुझे लगा कि अब रात ज्यादा काली होने वाली है। मैं अधिक देर रुकने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। मैंने उससे कहा-

'मुझे अब चलना चाहिए। तुम्हारा घर तो देख ही लिया है कभी कभार आ जाया करूंगा।'

'चाय नहीं पियोगे।' बातों में ही ऐसी उलझ गयी कि चाय पूछना ही भूल गयी।

'अगली बार दो कप पिऊंगा।'

'तुमने कहां जाना है?'

'डी ब्लाक में।'

'चलो मैं भी चलती हूं। तुम्हें वहां तक छोड़ दूंगी। लेकिन अब तुम अपनी गाड़ी आगे रखोगे और मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आऊंगी गाड़ी लेकर।'

'मैं तो यही सोच रहा था कि तुम मेरे साथ चलो। तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा।'

'अब वृत्ति कुछ इस तरह की हो गयी है कि अच्छा तो कुछ लगता ही नहीं।'

'चलो तो सही।'

मैं गाड़ी ड्राइव करता हुआ जा रहा था। शीशे में बिन्दु का चेहरा दिखाई दे जाता था। मुझे कालेज समय की बिन्दु याद आ जाती है जो मेरे साथ गृहस्थी बसाना चाहती थी। आज इस मोड़ पर उसे देखकर लगा कि कुछ लोग खुशियां बांट सकते हैं। उनके हिस्से में खुशियां अधिक देर साथ नहीं चलतीं। डी ब्लाक आते ही पहले कार्नर पर मैंने गाड़ी रोक दी। बिंदु ने भी थोड़ा आगे बढ़ा कर गाड़ी पार्क कर दी। जब हम दोनों सड़क पर आ गये, वह पूछने लगी-

'यहां से कितनी दूर पैदल चलना होगा।'

मैंने उसे इशारे से बताया कि वो सामने दुमंजिला भवन है उसी में जाना है। इस पर वह बोल पड़ी।

'वो तो वृद्धाश्रम है।'

'हां, क्या वहां नहीं जाया जा सकता।' और हम दोनों उस वृद्धाश्रम में पहुंच गये थे।' मैंने अपना कमरा खोला और अंदर चला गया। बिंदु कुछ भी समझ नहीं पा रही

थी। वह एक कुर्सी पर बैठ गयी।

'तुम यहां रहते हो ?'

'हां'

'लेकिन तुमने तो मुझे बताया ही नहीं।'

'अब तुम मेरे घर आयी हो, अपने बारे में सब कुछ बताऊंगा।'

इतने में एक व्यक्ति दो गिलास पानी लेकर आ गया था। वह दोनों गिलास टेबल पर रख कर चला गया। मैंने बिन्दु से कहा-

'आज खाना यहीं खाकर जाना। तुम्हें एक सरप्राइज़ दूंगा।'

'पहले यह बताओ कि तुम यहां अकेले रहते हो।'

'अकेला कहां मेरे जैसे कई हैं यहां। जब घर में था तो अकेला जरूर था। दो बेटे हैं। उनका परिवार है। मेरी पत्नी पांच साल पहले गुजर गयी थी। एक बाप अपने दो बेटों को तो पाल सकता है पर दो बेटे और उसके परिवार एक बाप को नहीं रख सकते। अब रिटायर्ड हूं न। बोझ बन गया था उन पर। यहां के वृद्धाश्रम का इश्तिहार निकला था अखबार में। बस जगह मिल गयी और आ गया। दो कमरे मिले गये हैं। खाना भी मिल जाता है। सब सुविधाएं हैं।'

'कभी घर जाते हो।'

'अब तो यही घर है। वैसे अभी एक महीना ही हुआ है मुझे यहां आए हुए।'

वृद्धाश्रम का नौकर खाना पूछने आ गया था। मैंने तीन लोगों के लिए खाना लाने के लिए कह दिया था। साथ ही उसे यह भी कह दिया था कि कमरा नंबर आठ से मैडम को भी भेज देना। बिन्दु के चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे। वह पूछ बैठी-

'यह मैडम कौन है ?'

'इस मामले में तुम अब भी पहले जैसी ही हो।'

'वह है कौन।'

'अभी आती ही होगी। तुम उसे देखकर बहुत खुश होगी।'

इतने में दस्तक हुई और महिला ने प्रवेश किया। वह बिन्दु को देखकर भौंचक्क रह गयी। उसका हाथ पकड़ कर उसके साथ वाली कुर्सी पर बैठ गयी।

'अरे बिन्दु, कमाल हो गया। तुम भी यहां आ गयी।'

'मंजू तू। तू यहीं रहती है। क्या संयोग है। हम तीनों कालेज में भी इकट्ठे ही थे। जीवन के इस पड़ाव में भी इकट्ठे हो गये हैं।'

'हां बिन्दु, मैं कभी कह नहीं पायी थी कि मैं राहुल से प्यार करती हूं।'

'मुझे यह आज ही पता चला कि मंजू भी मुझे प्यार करती थी। लेकिन उसने ऐसा आभास नहीं होने दिया। मैं तो यही जानता था कि मंजू हमारी अच्छी मित्र है।' मैंने उससे कहा-

'वो तुमने कभी कहा ही नहीं।'

'मैं जानती थी कि तुम और बिन्दु दोनों एक दूसरे को बेहद चाहते हो। मैं यह तो नहीं जानती कि तुम दोनों की आपस में शादी न होने की क्या वजह रही। लेकिन मुझे यह पता जरूर लग गया था कि तुम दोनों की शादी अलग-अलग जगह हो गयी है। मैं कहीं और शादी करने की हिम्मत नहीं जुटा सकी। केवल शादी करना ही मेरे जीवन का मकसद नहीं था। मैं समाज सेवा में जुट गयी। लेकिन राहुल मैं तुम्हें भुला नहीं पायी। पापा की इकलौती बेटी होने की वजह से उनका सारा पैसा मुझे ही मिला। इस वृद्धाश्रम की शुरुआत मैंने ही की थी। अब तो यह काफी बड़ा बन गया है।'

मैं असमंजस की स्थिति में था। मंजू मुझसे इतना प्यार करती थी कि जिंदगी भर उसने शादी नहीं की।

'तुमने क्या सच में प्यार किया था मुझसे। अगर मुझे पता होता कि...

बिन्दु बीच में ही बोल पड़ी।

'तो क्या कर लेते। मेरा तो पता था न कि मैं तुमसे शादी करना चाहती थी। लेकिन तुमने कब सीरियस लिया ?'

मंजू इस समय को बातों में उलझाना नहीं चाहती थी। वह चाह रही थी कि जान सके बिन्दु की गृहस्थी कैसी चल रही है। लेकिन जब उसे यह पता चला कि उसके पति की मृत्यु हो चुकी है और तीन-तीन बच्चों के होते हुए भी एकाकी जीवन जी रही है तो वह उदास हो गयी। उसने आहिस्ता से बिन्दु के कंधे पर हाथ रखा।

'मैं तेरी स्थिति का अहसास जरूर कर सकती हूं बिन्दु। इनसान जब किसी को अपना बनाना चाहता है और बना नहीं पाता, उसका संताप मैं जानती हूं। परंतु किसी अपने का चला जाना कैसा हो सकता है यह भी मैं महसूस कर सकती हूं। जिंदगी का चक्र घूमता रहता है। उम्र के इस पड़ाव पर आकर ऐसा लगता है कि हम जहां से चले थे वहां आकर ठहर गये हैं। तीस साल पूर्व हम तीनों इकट्ठे होते हुए भी तो अकेले थे। तुम्हारे दोनों के बच्चे हैं लेकिन कौन साथ देता है। मनुष्य को अपनी लड़ाई खुद ही लड़नी पड़ती है।'

इतने में दस्तक होती है और नौकर खाना लाकर मेज पर रखने लगता है।

◆◆◆

Acura In Markham

Step into next generation Acura

ADVANCE

Bob Chopra
Sales Floor Manager

From SUVs to luxurious sedans and crossovers, Acura in Markham has it all under one roof. Visit us today and test drive your dream Acura.

(647) 988 2865
(905) 948 8866

We sell Certified Pre Owned Acura vehicles. Come visit us today for Certified Performance.

Six-year, 160,000-km Limited Warranty

125-quality inspection, 24 hr Roadside assistance

5201 Highway 7 East
Markham, Ontario
L3R 1N3

लड़की थी वह

◆ *सुधा ओम ढींगरा*

कड़ाकेदार सर्दी की वह रात थी. घर के सभी सदस्य रजाइयों में दुबके पड़े थे. दिन भर से बिजली का कट था, जो पंजाब वासियों के लिए आम बात है. इन्वर्टर से पैदा हुई रौशनी में खाने पीने से निपट कर, टी.वी. न देख पाने के कारण समय बिताने के लिए, अन्ताक्षरी खेलते-खेलते सब सर्दी से ठिठुरते रजाइयों में घुस गए थे. दिसम्बर की छुट्टियों में ही हम दो तीन सप्ताह के लिए भारत जा पाते हैं. बेटे की छुट्टियाँ तभी होती हैं. दूरदराज़ के रिश्तेदारों को पापा घर पर ही मिलने के लिए बुला लेते हैं. उन्हें लगता है कि हम इतने कम समय में कहाँ-कहाँ और किस-किस से मिलने जायेंगे. मिले बिना वापिस आना भी अच्छा नहीं लगता.

हमारे जाने पर घर में खूब गहमागहमी और रौनक हो जाती है. बेटे को अमेरिका की शांत जीवन शैली के उपरांत चहल-पहल बहुत भली लगती है. हर साल हम से पहले भारत जाने के लिए तैयार हो जाता है. दिन भर के कामों से थके-मांदे रजाइयों की गर्माहट पाते ही सब सो गए. करीब आधी रात को कुत्तों के भौंकने की आवाज़ें आनी शुरू हुई... आवाज़ें तेज़ एवं ऊँची होती गईं नींद खुलनी स्वाभाविक थी. रजाइयों को कानों और सिर पर लपेटा गया, ताकि आवाज़ें ना आयें पर भौंकना और ऊँचा एवं करीब होता महसूस हुआ जैसे हमारे घरों के सामने खड़े भौंक रहे हों...

हमारे घरेलू नौकर-नौकरानी मीनू-मनु साथ वाले कमरे में सो रहे थे. उनकी आवाज़ें उभरीं--

'रवि पाल के दादा जी बहुत बीमार हैं, लगता है, यम उन्हें लेने आए हैं और कुत्तों ने यम को देख लिया है.'

'यम देख कुत्ता रोता है, ये रो नहीं रहे.'

'तो क्या लड़ रहे हैं?'

'लड़ भी नहीं रहे.'

'मुझे तो ऐसा महसूस हो रहा है कि ये हमें बुला रहे हैं.'

'मैं तो इनकी बिरादरी की नहीं हूँ, तुम्हीं को बुला रहे होंगे.'

पापा की आवाज़ उभरी- 'मीनू-मनु, कभी तो चुप रहा करो.'

मेरा बेटा अर्धनिद्रा में ऐंठा-- 'ओ! गाड आई डोंट लाइक दिस.'

तभी हमारे सामने वाले घर का छोटा बेटा दिलबाग लाठी खड़काता माँ-बहन की विशुद्ध गालियाँ बकता, अपने घर के मेनगेट

'डाक्टर साहब इसे देखें,
ठीक है ना यह?'
उसकी मधुर पर उदास वाणी ने
मेरी सोच के सागर की तरंगों को
विराम दिया. अपने शाल में
लपेट कर नवजात शिशु
उसने पापा की ओर बढ़ाया–
पापा ने गठरी की तरह
लिपटा बच्चा खोला,
लड़की थी वह...

का ताला खोलने की कोशिश करने लगा. जालंधर में चीमा नगर, बड़ा संभ्रांत एवं सुरक्षित माना जाता है. हर लेन अंत में बंद होती है. बाहरी आवाजाई कम होती है. फिर भी रात को सभी अपने-अपने मुख्य द्वार पर ताला लगा कर सोते हैं. उसके ताला खोलने और लाठी ठोकते बाहर निकलने की आवाज़ आई. वह एम्वे का मुख्य अधिकारी है और पंजाबी की अपभ्रंश गालियाँ अंग्रेज़ी लहज़े में निकल रही थीं. लगता था रात पार्टी में पी शराब का नशा अभी तक उतरा नहीं था. अक्सर पार्टियों में टुन होकर जब वह घर आता था, तो ऐसी ही भाषा का प्रयोग करता था. उसे देख कर कुत्ते भौंकते हुए एक तरफ को भागने लगे. वह लाठी ज़मीन पर बजाता लेन वालों पर ऊंची आवाज़ में चिल्लाता, उनके पीछे-पीछे भागने लगा 'साले--घरां विच डके सुते पए ने, एह नई कि मेरे नाल आ के हरामियां नूँ दुड़ान-भैण दे टके.'

मेरे बेटे ने करवट बदली - सिरहाना कानों पर रखा-'माम, आई लव इंडिया. आई लाइक दिस लैंगवेज.' मैं अपने युवा बेटे पर मुस्कराए बिना ना रह सकी. वह हिन्दी-पंजाबी अच्छी तरह जानता है और सोए हुए भी वह मुझे छेड़ने से बाज़ नहीं आया. मैं उसे किसी भी भाषा के भद्दे शब्द सीखने नहीं देती और वह हमेशा मेरे पास चुन-चुन कर ऐसे शब्दों के अर्थ जानना चाहता है.

दिलबाग हमारे घर के साथ लगने वाले खाली प्लाट तक ही गया था (जो इस लेन का कूड़ादान बना हुआ था और कुत्तों की आश्रयस्थली) कि उसकी गालियाँ अचानक बंद हो गईं और ऊँची आवाज़ में लोगों को पुकारने में बदल गईं --जिन्दर, पम्मी, जसबीर, कुलवंत, डाक्डर साहब (मेरे पापा) दीदी आयें. उसका चिल्लाकर पुकारना था कि हम सब यंत्रवत बिस्तरों से कूद पड़े, किसी ने स्वेटर उठाया, किसी ने शाल. सब अपनी-अपनी चप्पलें घसीटते हुए बाहर की ओर भागे. मनु ने मुख्य द्वार का ताला खोल दिया था. सर्दी की परवाह किए बिना, सब खाली प्लाट की ओर दौड़े. खाली प्लाट का दृश्य देखने वाला था. सब कुत्ते दूर चुपचाप खड़े थे. गंद के ढेर पर एक पोटली के ऊपर स्तन धरे और उसे टांगों से घेर कर एक कुतिया बैठी थी. उस प्लाट से थोड़ी दूर नगरपालिका का बल्ब जल रहा था. जिसकी मद्धिम भीनी-भीनी रौशनी में दिखा, कि पोटली में एक नवजात शिशु लिपटा हुआ पड़ा था और कुतिया ने अपने स्तनों के सहारे उसे समेटा हुआ था जैसे उसे दूध पिला रही हो. पूरी लेन वाले स्तब्ध रह गए. दृश्य ने सब को स्पंदनहीन कर दिया था. तब समझ में आया कि कुत्ते भौंक नहीं रहे थे, हमें बुला रहे थे.

'पुलिस बुलाओ' एक बुज़ुर्ग की आवाज़ ने सब की तंद्रा तोड़ी. अचानक हमारे पीछे से एक सांवली, पर आकर्षित युवती शिशु की ओर बढ़ी. कुतिया उसे देख परे हट गई. उसने बच्चे को उठा सीने से लगा लिया. बच्चा जीवित था, शायद कुतिया ने अपने साथ सटा कर, अपने घेरे में लेकर उसे सर्दी से यख होने से बचा लिया था. पहचानने में देर ना लगी कि यह तो अनुपमा थी, जिसने बगल वाला मकान ख़रीदा है और अविवाहिता है. गरीब माँ-बाप शादी नहीं कर पाए और इसने अपने दम पर उच्च शिक्षा ग्रहण की और स्थानीय महिला कालेज में प्राध्यापिका के पद पर आसीन हुई. लेन वाले इसे संदेहात्मक दृष्टि से देखते हैं. हर आने-जाने वाले पर नज़र रखी जाती है. एक दिन पापा ने अनुपमा के बारे में बताते हुए कहा था- 'बेटी, उंगली उठाने और संदेह के लिए औरत आसान निशाना होती है. अपनी ही ज़ात की दुश्मन औरतें, उसकी पीठ ठोकने व शाबाशी देने की बजाय उसे ग़लत कहती हैं. स्त्रियों के भविष्य की रूप रेखा बदल जाए, अगर औरत, औरत के दर्द को महसूस करे... पुरुष से क्या गिला? बेटी, इसने अपने सारे बहन-भाई पढ़ाए, माँ-बाप को सुरक्षा दी. लड़की अविवाहिता है, गुनहगार नहीं.'

'डाक्टर साहब इसे देखें, ठीक है ना यह?' उसकी मधुर पर उदास वाणी ने मेरी सोच के सागर की तरंगों को विराम दिया. अपने शाल में लपेट कर नवजात शिशु उसने पापा की ओर बढ़ाया-- पापा ने गठरी की तरह लिपटा बच्चा खोला, लड़की थी वह... ◆◆◆

हमको ऐसे मिली ज़िंदगी

इक मुड़ी जीन्स में, फँस गई सीप-सी
आँधियों से भरे, एक कृत्रिम द्वीप-सी

नाखूनों में घुसी, कुछ हठी रेत-सी
पेड़ बौने लिए, बोन्साई खेत-सी

टूटी इक गिटार-सी, क्लिष्ट व्यवहार-सी
नाम भी ना रहे याद, भूले प्यार-सी

फोटो बिन फ्रेम की, बस कुशल-क्षेम-सी
बारिशों से स्थगित एक क्रिकेट गेम-सी

हाथ से ढुल गई मय ना प्याले गिरी
शाम जो रात लौटी नहीं सिरफिरी

देने में जो सरल, सस्ते इक ज्ञान-सी
भाव से हो रहित, हाय! उस गान-सी

खोल खिड़की किरण जो ना घर आ सकी
धुन ज़हन में रही ना जुबाँ पा सकी

आदतों की बनी इक गहन रेख-सी
बस जो होती बहू में ही, मीन-मेख-सी

बी.एम.आई. इंडैक्स सी, बिन कमाई टैक्स-सी
जो कि पढ़ ना सके, उड़ गये फैक्स-सी

हमको ऐसे मिली कि हँसी आ गई
फिर गले से लगाया तो शर्मा गई

ज़िंदगी प्यार के झूठे ई-मेल सी
पुल पे आई विलम्बित थकी रेल सी!

■ *शार्दुला नोगजा, सिंगापुर*

फिर कोयल को कैसे.....

बरगद की छाहों को कालोनी लील गई
सीधी सूरज किरणें देही को छील गई
अब खेत नहीं दिखते
कंकरीट के जंगल में
हरियाली तो खो दी
ईंटों के दंगल में
धन बढ़ता रहा लेकिन तन में तो ढील गई
बरगद की छाहों को कालोनी लील गई
रंग और रसायन है?
पर फलों के लाले हैं
ताज़ा सब्ज़ी खाकर
भी मुंह में छाले हैं
इन कीटनाशकों से सेहत भी सील गई
बरगद की छाहों को कालोनी लील गई
रिश्तों की हर चादर
है फटेहाल प्यारे
बजरी सस्ती लेकिन
महंगी है दाल प्यारे
डामर से पुती सड़कें जूते तक छील गई
बरगद की छाहों को कालोनी लील गई
ना मौलसिरी दिखती
ना हरा नीम दिखता
फिर कोयल को कैसे
गीतों का थीम दिखता
हर कुहू-कुहू-कूहू दीवारें लील गई
बरगद की छाहों को कालोनी लील गई
ना मौसा ना फूफा
ना ताऊ ना मामा
बच्चों को घर लगता
धारावाहिक ड्रामा
पापा को क्लब मम्मी को किट्टी लील गई
बरगद की छाहों को कालोनी लील गई।

■ *योगेन्द्र मौदगिल, भारत*

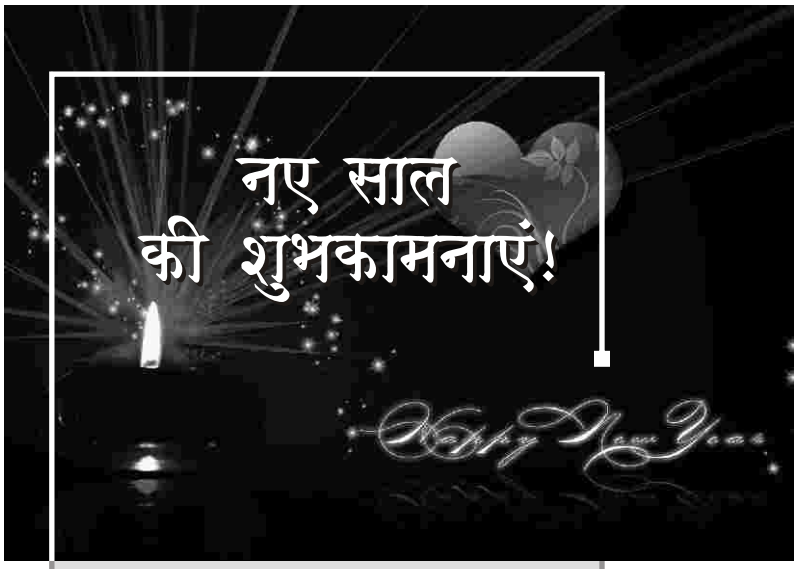

आंखों में अपनी हैं आशा की किरणें
चाहत के सुर धड़कनों में सजाएं
इक दिन मिलेगी वो सपनों की दुनिया
जादू उमंगों का दिल में जगाएं...

.....

बादल में बिजली है, सूरज में आभा
हिम्मत हवाओं में सागर में लहरें
मुश्किल नहीं कुछ अगर ज़िद है मन में
चलतें रहें बस कहीं भी ना ठहरें
नज़रों में झिलमिल सितारे सजाकर
नई रोशनी से गगन जगमगाएं...

.....

हम कौन हैं! क्या है हसरत हमारी
लाज़िम है खुद को भी पहचान लें हम
अगर हौसल है रगों में हमारी
तो मंज़िल पे पहुचेंगे, ये जान लें हम
कड़ी धूप हो, पर न पीछे हटेंगें
ये एहसास हम रास्तों को दिलाएं...

■ *देवमणि पाण्डेय, भारत*

नया सबेरा

नए साल का, नया सबेरा,
जब, अम्बर से धरती पर उतरे,
तब शान्ति, प्रेम की पंखुरियाँ,
धरती के कण-कण पर बिखरें,
चिड़ियों के कलरव गान के संग,
मानवता की शुरू कहानी हो,
फिर न किसी का लहू बहे,
न किसी आँख में पानी हो,
शबनम की सतरंगी बूँदें,
बरसे घर-घर द्वार,
मिटे गरीबी, भुखमरी,
नफरत की दीवार्,
ठण्डी-ठण्डी पवन खोल दे,
समरसता के द्वार,
सत्य, अहिंसा और प्रेम,
सीखे सारा संसार,
सूरज की ऊर्जामय किरणें,
अन्तरमन का तम हर ले,
नई सोंच के नव प्रभात से,
घर घर मंगल दीप जलें।

■ *बृजेन्द्र श्रीवास्तव 'उत्कर्ष', भारत*

FASHION IS OUR PASSION

Chunri Creations

Specialize In:

Designer Collection,
Costume Jewellery,
Bridal Lehnga, Sarees,
Lehnga Cholis, and Suits

For Wholesale Enquiry: 674-887-7445

Now Serving From 3 Locations:

Brampton
Golden Gate Plaza (Near Mavis and Williams Pkwy)
80 Pertosa Drive, Unit # 12
Brampton. L6X 5E9

Phone 905-453-6600
Open all days of the week except Monday,
Tue-Sat : 12:00 Noon to 8 PM
Sunday : 12:00 Noon to 6 PM

Vaughan
Tuscany Place (Near Vaughan Mills)
9100 Jane Street, Unit # 18
Vaughan. L4K OA4

Phone 905-669-6030
Open All days of the week except Monday,
Tue-Sat : 12:00 Noon to 8 PM
Sunday : 12:00 Noon to 6 PM

NOW SHOP ONLINE!

www.chunricreations.com

मित्रता

एक रिश्ता है ऐसा
बिल्कुल अनोखा हो जैसा
स्वार्थ से अछूता
समन्दर से गहरा हैं वो.

जात-पात के बन्धनों से परे
धर्मों के आडम्बरों से दूर है जो
कहते हैं जिसे हम मित्रता
क्या विश्वास है और कितनी
भरी है इसमें मधुरता.

सुख मे भले ना
वो दिखलाये,
पर दु:ख में हमेशा,
दोस्त काम आये.
औपचारिकता से
परे है जो,
दिल के कितने
करीब है वो.

कह ना सके जो
बात किसी से,
दोस्तों से कह जाते हैं
कितनी सहजता से उसे.

भरोसे का अटूट
आधार है जो,
मुसीबतों में खड़ा
चट्टान है वो.

जिसकी देते हैं
लोग मिसालें,
दोस्ती और दोस्त ही हैं
'किरन' मेरे यार,
जो हमारे जीवन रुपी नाटक में
अदा करते हैं,
एक महत्वपूर्ण किरदार
वो भी दोस्तों!
एक नहीं अनेकों बार.

■ *किरन सिंह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, भारत*

आओ, नव वर्ष आओ

स्वागत है, सहर्ष आओ
आओ, नव वर्ष आओ
नव उल्लास, मधुर हास,
मनहर हर्ष लाओ
आओ, नव वर्ष आओ

शांत रस प्रताप लाओ
प्रेम पथ निर्वाह लाओ
नव उत्साह, नवल चाह,
नव उत्कर्ष लाओ
आओ, नव वर्ष आओ

शांत रस प्रताप लाओ
प्रेम पथ निर्वाह लाओ
नव उत्साह, नवल चाह ,
नव उत्कर्ष लाओ
आओ , नव वर्ष आओ

वाणी में मधुरता लाओ
कर्मों में कुशलता लाओ
दृढ निश्चय, करुण निर्णय,
शुद्ध स्पर्श लाओ
आओ नव वर्ष आओ

नूतन लाओ, पुरातन लाओ
जो भी लाओ, सनातन लाओ
सद्भावना, सदकमना,
सदनिष्कर्ष लाओ
आओ नव वर्ष आओ

स्वागत है, सहर्ष आओ
आओ, नव वर्ष आओ

■ *साफिर समदर्शी, कैनेडा*

सुहाने दिन

फिर सुहाने हो गए हैं दिन
शरद की ओट लेकर

क्यारियों में रंग डूबी चुन्नियाँ हैं
झिलमिलाती ओस की कुछ पत्नियाँ हैं
फिर शहर के हो गए हैं दिन
हवा के कोट लेकर

धूप में फिर
गीत कोई गुनगुना है और
नभ के हाथ सूरज झुनझुना है
फिर गली में खो गए हैं दिन
हरे अखरोट लेकर

अब न मौसम
खिड़कियों पर चीखता है
हर तरफ़ अनुराग
मद्धिम भीगता है
फिर सयाने हो गए हैं दिन
खुशी के नोट लेकर

हवा में

हवा में घुल रहा विश्वास
कोई साथ में है
धूप के दोने, दुपहरी भेजती है
छाँह सुख की
रोटियाँ-सी सेंकती है
उड़ रही डालें
महक के छोड़ती उच्छवास
कोई साथ में है
बादलों की ओढ़नी
मन ओढ़ता है, एक घुँघरू
चूड़ियों में बोलता है
नाद अनहद का
छिपाए मोक्ष का विन्यास
कोई साथ में है

◆◆◆

दो गीत हिन्दी चेतना के लिए

■ *पूर्णिमा वर्मन, यू.ए.ई.*

धर्म का मर्म

■ *डॉ. जनक खन्ना, कैनडा*

धर्म आज एक
पहेली बन कर रह गया है
स्वार्थान्ध भ्रन्त लोगों के
कुचक्रों का
शिकार बन कर रह गया है।
धर्म का मर्म क्या है
यह तो हम समझे नहीं
धर्म के नाम पर लड़ना-लड़ाना
खून की नदियाँ बहाना
प्रेम-करुणा और सौहार्द को मिटाना
धर्म बन कर रह गया है।

हिन्दू-मुस्लिम-जैन-बौद्ध या
सिख-ईसाई की
धार्मिक आस्थाओं पर
प्रहार करना भी तो धर्म नहीं है
पूजा पाठ की बाह्य पद्धतियाँ
या कर्मकाण्ड ये भी धर्म नहीं हैं।

धर्म के नाम पर आडम्बर छलावा
धर्म बन कर रह गया है
भिन्न-भिन्न मतमतान्तरों की धारणाएँ
धर्मगुरुओं की भ्रामक-भ्रष्ट परिभाषाएँ
धर्म को संकीर्ण दायरे में बांधती सीमाएँ
धर्म का बस कर्म बन कर रह गया है।

आओ विचारें धर्म क्या है
धर्म का मर्म क्या है
धारयति इति धर्मः
लिखा है सब शास्त्रों में
किसी का गुण,
किसी की शख्सियत ही
उसका सच्चा धर्म है, धर्म का मर्म है
आग का जलना जलाना
सूर्य का तपना तपाना
मानव का निष्ठा से कर्त्तव्य निभाना
भूले-भटके को राह दिखाना
दुःखी को गले लगाना
वास्तव में धर्म है,
धर्म का मर्म है
तप त्याग, शौच क्षमा,
सत्य सहिष्णुता, आत्मसंयम
परोपकार, अस्तेय, अपरिग्रह,
अहिंसा और सत्कर्म
व्यक्ति ही नहीं समूचे समाज को
अनुशसित रखते हैं ये नियम
इन जीवन मूल्यों को अपनाना ही
सच्चा धर्म है, धर्म का मर्म है।

सच पूछें तो
सबसे बड़ा है मानव धर्म
मानव का मानव से प्यार
हर किसी से प्यार का इजहार
दूसरों के एहसास
'वसुधैव कुटुम्बकम' का आभास
बस यही धर्म है, धर्म का मर्म है।

◆◆◆

संकल्प

उदयाचल के शिखरों से आस नई ले आता कोई
आस्था और विश्वास के रंग बिखराता आता कोई
नव वर्ष नव भोर में नव लक्ष्य का संधान हो
विश्व शान्ति महामन्त्र का चहुँदिशा आह्वान हो

प्रेम सूत्र में बँधे यह जगत, मंगल हो हर भावना
नेह प्यार कण-कण से झलके, मन में हो सद्भावना
हिमाच्छादित पर्वतों का तप न भंग हो कभी
निर्मल धारा नदियों की दूषित अब न हो कभी

हरित धरा की मांग अब न कोई रक्त से भरे
युद्ध की विभीषिका से न कोई हृदय अब डरे
लुप्त हो संसार से हिंसा की कलुषित कालिमा
झलके हर आँख में अनुराग की ही लालिमा

हो चलन हर देश में एकता-विश्वास का
लुप्त हो अब विश्व से बीज ही विनाश का
पूर्ण हो हर कामना, हर मन में नव उमंग हो
धरा से आसमान तक उल्लास की तरंग हो

अखण्ड धरा अक्षुण्ण सूर्य, प्रदीप्त पूर्ण चाँद हो
अटूट बन्धन हों सभी, नयनों में स्नेह सौहार्द्र हो
शान्तिमय नव वर्ष हो, अभियान हो उत्थान का
स्वर्णिम किरणें ले आईं संकल्प नव निर्माण का।

■ *शशि पाधा, अमेरिका*

नववर्ष की बेला

बदला समय
बदल गया
कैलेन्डर,
आ गया नये साल का
उत्साह अन्दर।

लेकर नये संकल्प
और संदेश,
आओ करें हम
नये वर्ष का श्रीगणेश।

न हो अब कोई
बच्चा भूखा,
चाहे पड़े दु:ख
या सूखा।

स्वप्न यह
हमने है देखा,
सबके हाथों में
हो लक्ष्मी की रेखा।

भटकों को मिले किनारा
असहाय को सहारा
फैले चारों ओर भाईचारा,
देखो रह न जाये
फिर कोई
दु:खियारा, बेचारा।

जीवन का ये मंत्र
तुम भी अपनाना,
अपने संग एक
गरीब को
आगे बढ़ाना।

नववर्ष पर लेकर
ये पावन उद्देश्य
आओ फैलायें
हम चारों ओर
मानवता का संदेश,
मिटा कर आपस
के सारे क्लेश।

■ *अमित कुमार सिंह, टोरोंटो*

नव वर्ष का चमत्कार

यूगों-युगों से चली आई है, नये वर्ष की नई कहानी
किसी का इठलता बचपन तो, किसी की उमंगों भरी जवानी
नये वर्ष के आने पर कभी, चुपके से बचपन चल देता है
नये वर्ष के जाने से यूँ ही, जीवन भी ढल जाता है.

पर चमत्कार तो देखो क्या कभी यह कुंठित हो पाता है?
इतिहास के पुराने पन्नो पर 'नव-वर्ष' अपनी मुहर लगाता है
कोमल किसलय की लाली देख भ्रमित कोयल भी गाती है
पर क्या मानव जीवन की कल्पनाएं कभी पूर्ण हो पाती हैं?

नूतन वर्ष न आता है तो क्या मानवता कभी आगे बढ़ पाती
राम, कृष्ण, गौतम और गाँधी को, मानवता कैसे दुहराती
नई तुला पर बैठा यह नव-वर्ष, हमें भ्रमित कर जाता है
विगत वर्ष का दीप बुझाकर, आशाओं का दीप जला जाता है.

युग-युग से हम नव-वर्ष का यूँही स्वागत करते आए हैं
नये वर्ष की नई कहानी हर्षित मन से यूँही दुहराते आए हैं
वर्ष बीते, सौ वर्ष बीते, नव-युग में प्रवेश करें हम सब आज
मानवता को न झुकने देंगे, ले लें यह प्राण हम सब साथ.

अभिनंदन है नव-वर्ष तुम्हारा, मन को कितना भरमाते हो
आशा की किरणों से तुम, मानव की नई दिशा दिखलाते हो
मन सब का हो आनंदित, नव वर्ष के नित नए सूर्योदय में
फले फूले घर और संसार सभी का, चाँदनी की शीतल छाओं में.

■ *किरण सिन्हा, अमेरिका*

EKAL VIDYALAYA

एकल विद्यालय – एक अध्यापक वाला स्कूल

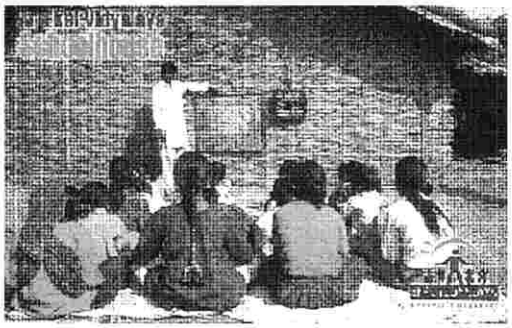

यह स्वयं सेवकों वाली योजना जो कि आदिवासी व पिछड़ी हुई जातियों के बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य से बनाई गई है। इसमें सरकार का कोई योगदान नहीं है, यह निःशुल्क है। इसका उद्देश्य आदिवासी लोगों के बच्चों को निरक्षरता से उन्मुक्त करना है। यह जनता का आन्दोलन है। जैसा कि सर्वविदित है कि आदिवासियों में साक्षरता बिल्कुल न के बराबर है। पुरुषों में 12 प्रतिशत और स्त्रियों में 5 प्रतिशत। यह आन्दोलन अभी बिल्कुल नया है किन्तु कुछ ही समय में हमने इस दिशा में आश्चर्यजनक उन्नति की है। भारत में 133,913 आदिवासियों के गाँव हैं जिनमें 10 या 12 प्रतिशत गाँवों में स्कूल हैं।

'एकल विद्यालय' के आन्दोलन से आज 24,006 पाठशालाएँ खुल चुकी हैं। ये स्कूल भारत और नेपाल के सीमावर्ती स्थानों में सेवा कर रहे हैं। इस समय 720,182 विद्यार्थी इनमें शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। हमारा विश्वास है कि 2011 के अंत तक हम 100,000 पाठशालाएँ खोल सकेंगे।

इस महान सेवा में हमें आपके सहयोग की बहुत आवश्यकता है। यह सबसे कम खर्चे वाली योजना है जिसमें एक स्कूल को चलाने के लिए लगभग 400 डालर साल में खर्च होते हैं और लगभग 25 से 40 विद्यार्थी इसमें शिक्षा ग्रहण कर सकते है। हमें आशा है कि आप हमारे इस स्वप्न को साकार कराने में हमारे साथ हैं। हम आपको आपके अनुदान के लिए टैक्स की रसीद भी देते हैं।

आओ मिलकर हम सब शिक्षा का दीप जलाएँ।
उन आदिवासियों के जीवन में आशा की किरण जगाएँ।।
जब तक अविद्या का अँधेरा हम मिटावेंगे नहीं,
तब तक समुज्वल ज्ञान का आलोक पावेंगे नहीं।

कैनेडा में एकल विद्यालय फाउन्डेशन का पता

817- 25 KINGSBRIDGE GDN.CIR.,
MISSISSAUGA, ON. L5R 4B1
EMAIL: RV1_CA@YAHOO.COM,
WWW.EKAL.ORG,
T.NO. 905- 568-5235

FAMILY DENTIST

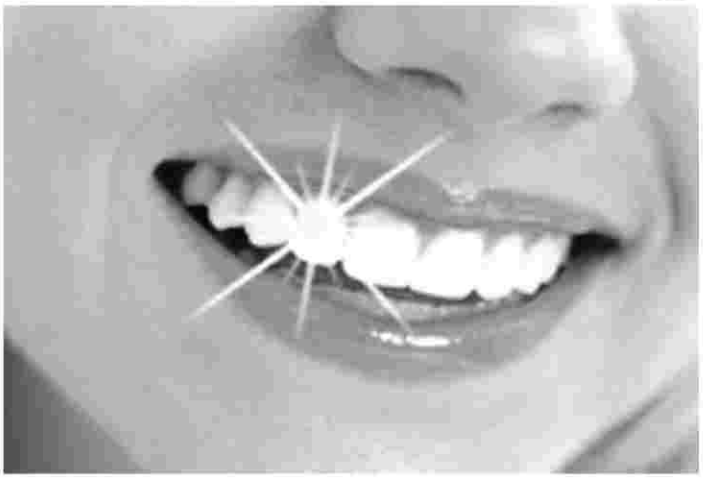

Dr. N.C. Sharma
Dental Surgeon

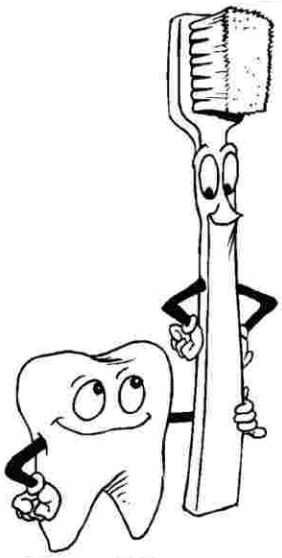

Dr. C. Ram Goyal
Family Dentist

Dr. Jyotica Ahuja
Family Dentist

Dr. Narula Jatinder
Family Dentist

Call us at: 416-222-5718

1100 Sheppard Avenue East, Suite 211, Toronto, Ontario M2K 2W1 Fax: 416-222-9777

तुम्हारी और मेरी आवाज़

अभिनव शुक्ल, अमेरिका

तुम्हारी आवाज़,
आज तुमने मुझसे पूछा कि
मुझे तुम्हारी आवाज़ कैसी लगती है
तो सुनो
तुम्हारी आवाज़ मुझे दुनिया की
सबसे मीठी आवाज़ लगती है
जब जब तुम बोलती हो
खाना बन गया है
तुम आराम करो
लाओ मैं तुम्हारे पैर दबा दूं
मुझे लगता है की मेरे कानों में
शहद घोल रही है तुम्हारी आवाज़

जब-जब तुम बोलती हो
तुम्हारे कपड़े प्रेस हो गए हैं
मैंने तुम्हारा कमरा ठीक कर दिया है
ये लो अपना टिफिन
मुझे लगता है
क्या तुमसे मीठी हो सकती है
कोई भी आवाज़

पर न जाने क्यों मुझे
कड़वी लगने लगती है तुम्हारी आवाज़
जब-जब तुम कहती हो
बर्तन माँज दो
कपड़े ले आओ ड्रायर से
बच्चे का डायपर बदल दो
मैं परहेज़ करता हूँ ऐसी आवाजें सुनने से

जब-जब तुम आदेश देती हो
टेबल पोंछ दो
चलो मेरे साथ बाज़ार
भर दो सारे बिल
मेरे कान पकने लगते हैं

कोशिश करना कि तुम्हारी आवाज़ की
मिठास
सदा उसकी कड़वाहट पर भारी रहे
ताकि मुझे सदा मीठी लगती रहे
तुम्हारी आवाज़

वैसे तुमको मेरी आवाज़ कैसी लगती है?
मेरी आवाज़
मेरे एक ज़रा से प्रश्न के उत्तर में
तुमने अपनी पूरी मानसिकता उडेल कर
रख दी
फिर भी मुझे नहीं बताया
कि मेरी आवाज़ तुम्हें लगती कैसी है

मैं बताती हूँ
कि मुझे तुम्हारी आवाज़ कैसी लगती है
सुनो!

मुझे तुम्हारी आवाज़ बहुत मीठी लगती थी
जब शादी से पहले
तुम किया करते थे उच्च आदर्शों की बातें
कहा करते थे कि
स्त्री और पुरुष में फर्क नहीं करते हो
मेरी हर ग़लती को
कोई बात नहीं कह कर टाल दिया करते
थे
मुझे लगता था
ये आवाज़ तो मैं अपने जीवन भर सुन
सकती हूँ

मुझे आज भी कभी-कभी
अच्छी लगती है तुम्हारी आवाज़
जब सुबह-सुबह तुम मुझे
जगाते हुए कहते हो, चाय पी लो
जब बिना कहे मुन्ने को कर देते हो
तैयार
मेरे खाना खाते समय जब तुम
मेरे पास बैठ जाते हो बिना किसी मान
मनौवल के
तब तब मेरे कानों में
मिसरी घोल जाती है तुम्हारी आवाज़

लेकिन
न जाने क्यों
मुझे ज्यादातर कड़वी लगने लगी है
जब जब तुम कहते हो
मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता
ये क्यों खरीदना है
मेरे पास तुमसे बात करने का समय नहीं
मुझे दुखी कर जाती है तुम्हारी आवाज़

मुझे लगती है ज़हरीली
जब तुम बनाते हो बहाने
मुझको देते हो ताने
मेरे मायके को कुछ बोलते हो जाने
अनजाने
मुझे लगता है
मैं और नहीं सुन सकती

क्या तुम कोशिश करने को तैयार हो
ताकि मुझे तुम्हारी आवाज़
हमेशा मीठी लगे।

चित्र काव्य शाला

पानी में बच्चे खेल रहे है, निश्चित है गरमी का मौसम
इनके इस आनंद के हेतु, किया किसी ने अच्छा कर्म

पास में उन महापुरुषों ने लिख दिये अपने नाम
समाज की फर्क नज़रों में, पाने को अपना सम्मान

जो निर्धन इसे पढ़ेगा वह कोसेगा भगवान को
यदि तू धनी बना देता मुझको, मैं भी पा जाता इस सम्मान को

कहते, ईश्वर के पास है, सबके कर्मो की किताब
हर प्राणी के, हर कर्म का, रखता जिसमें सही हिसाब

पर उसकी है मूक ही भाषा, मूक ही उसका सारो मर्म
युग-युग से हम देख रहे हैं, पर समझ ना उसका धर्म

सुरेन्द्र पाठक, कैनडा

करते हुए जलक्रीड़ा
लेते शीतलता का अहसास
रवि की किरणों से बचने का
क्या ही है ये सुन्दर प्रयास!

अमित कुमार सिंह, कैनाडा

●

मासूम चेहरों पर
खुशियां लाये,
तपन में शीतलता दिलाये,
परोपकार की महिमा
ये निर्मल जल कुन्ड बतलाये

किरन सिंह, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय, भारत

●

गर्मी के मौसम में
जब बच्चों को पानी दिख जाता है,
वह उसे स्वर्ग समझने लगते हैं,
पानी में उछल उछल कर
हँसने और मचलने लगते है
ईश्वर की वरदान है पानी
और धरती की अमर कहानी!

मेघा (कैनेडा)

●

धन्य हैं वे लोग जो प्याऊ लगाते हैं
गर्मियों में तरसतों को जल पिलाते है
जो पिपासु पथिक उनके पास आते हैं
शीत जल पी कर बहुत विश्राम पातें हैं
जो बचा पानी चुवच्चें में गिरा
उसमे बच्चे खेलते है औ' नहाते हैं।

जगदीशचंद्र शारदा, कैनडा

==========

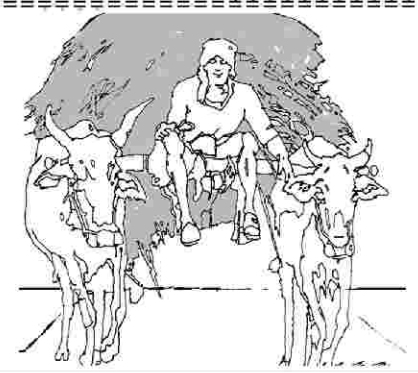

मैं भारत का हूँ प्रिय किसान
कृषि ही है मेरी आन बान
बैल गाड़ी पर है धरा धान
मेरे बैल बड़े हैं शक्तिमान
चलते पथ पर वे वक्ष तान
उनकी गति में नहीं व्यवधान
मैं भारत मां का सुत महान
करता भारत जय सदा गान!

शरण

इस चित्र को देखकर आपके मन में जो भी भाव आयें उन्हें अधिक से अधिक छः पंक्तियों के अन्दर व्यक्त करके भेजें।

Far Eastern Books

(Estd. 1976)

http://www.worldwidebookstore.net e-mail: books@febonline.com

Leading Publisher and Distributors

Books, Periodicals & Multi-Media Material In International languages

A single and reliable source for the supply of print & non-print material from the Indian sub-continent at competitive rates, including:

- *Popular titles in English*
- *Fiction & Non fiction in major regional languages such as, Bengali, Gujarati, Hindi, Punjabi, Urdu, Tamil etc.*
- *Single and dual language children books*
- *Educational material for classrooms*
- *Journals & Periodicals*
- *CD & DVD Labels.*

Tel: (905) 477-2900 Toll Free: (800) 291-8886 Fax: (905) 479-2988

250 COCHRENE DRIVE, SUITE 14, MARKHAM, ON. L3R 8E5

बिजली रानी, बड़ी सयानी

◆ *समीर लाल 'समीर'*

'मेसाचुसेटस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने प्रयोग कर दिखा दिया है कि अब बिजली के तार की जरूरत नहीं पड़ेगी. उन्होंने बिना तार के बिजली को एक स्थान से दूसरे स्थान पहुँचा कर दिखा दिया. वैज्ञानिकों ने बताया है कि यह रिजोनेंस नामक सिद्धांत के कारण हुआ है.

यह खबर जहां एक तरफ खुशी देती है तो दूसरी तरफ न जाने कैसे कैसे प्रश्न खड़े कर देती है दिमाग में. अमरीका में तो चलो, मान लिया.

मगर भारत में ?

एक मात्र आशा की किरण, वो भी जाती रहेगी. अरे, बिजली का तार दिखता है तो आशा बंधी रहती है कि आज नहीं तो कल, भले ही घंटे भर के लिए, बिजली आ ही जायेगी. आशा पर तो आसमान टिका है, वो आशा भी जाती रहेगी.

सड़कें विधवा की माँग की तरह कितनी सूनी दिखेंगी. न बिजली के उलझे तार होंगे और न ही उनमें फंसी पतंगे होंगी. जैसे ही नजर उठी और सीधे आसमान. कैसा लगेगा देखकर. आँखे चौंधिया जायेंगी. ऐसे सीधे आसमान देखने की कहाँ आदत रह गई है.

चिड़ियों को देखता हूँ तो परेशान हो उठता हूँ. संवेदनशील हूँ इसलिये आँखें नम हो जाती हैं. उनकी तो मानो एक मात्र बची कुर्सी भी जाती रही बिना गलती के. पुराने रेल वाले मंत्री की तो फिर भी अपनी गलती से गई, मगर ये पंछी तो बेचारे चुपचाप ही बैठे थे बिना किसी बड़ी महत्वाकांक्षा के. पेड़ तो इन निर्मोहि मानवों ने पहले ही नहीं छोड़े. बिजली के तार ही एकमात्र सहारा थे, लो अब वो भी विदा हो रहे हैं.

राजा राम मोहन राय ने भारत से सती प्रथा खत्म करवाई थी और यह महाशय, उत्तरप्रदेश से कटिया प्रथा समाप्त करने के लिए याद रखे जायेंगे. जब तार ही नही रहेंगे तो कटिया काहे में फसांयेंगे लोग. वह दिन कटिया संस्कृति के स्वर्णिम युग का अंतिम दिन होगा और आने वाली पीढ़ी इस प्रथा के बारे में केवल इतिहास के पन्नों में पढ़ेगी जैसा यह पीढ़ी नेताओं की ईमानदारी के बारे में पढ़ रही है.

विचार करता हूँ कि जैसे ही ये बिना तार की बिजली भारत के शहर शहर पहुँचेगी तो उत्तरप्रदेश और बिहार भी एक न एक दिन जरूर पहुँचेगी. तब जो उत्तरप्रदेश का बिजली मंत्री इस कार्य को अंजाम देगा वो राजा राम मोहन राय सम्मान से नवाज़ा जायेगा.

राजा राम मोहन राय ने भारत से सती प्रथा खत्म करवाई थी और यह महाशय, उत्तरप्रदेश से कटिया प्रथा समाप्त करने के लिए याद रखे जायेंगे. जब तार ही नही रहेंगे तो कटिया काहे में फसांयेंगे लोग. वह दिन कटिया संस्कृति के स्वर्णिम युग का अंतिम दिन होगा और आने वाली पीढ़ी इस प्रथा के बारे में केवल इतिहास के पन्नों में पढ़ेगी जैसा यह पीढ़ी नेताओं की ईमानदारी के बारे में पढ़ रही है.

थोड़ा विश्व बैंक से लोन लेने में आराम हो जायेगा. अभी तो उनका ऑडीटर आता है तो झूठ नहीं बोल पाते, जब तक तार-वार नहीं बिछवा दें कि इस गाँव का विद्युतिकरण हो गया है. तब तो दिन में ऑडीटर को गाँव गाँव की हेलिकॉप्टर यात्रा दिन में करा कर बता दो कि सौ प्रतिशत विद्युतिकरण हो गया है. तार तो रहेंगे ही नहीं तो देखना दिखाना क्या ? शाम तक दिल्ली वापिस. पाँच सितारा होटल में पार्टी और लोन अप्रूव अगले प्रोजेक्ट के लिए भी.

एक आयाम बेरोजगारी का संकट भी है. अभी भी हालांकि अधिकतर बिजली की लाईनें शो पीस ही हैं, लेकिन टूट-टाट जायें, चोरी हो जायें तो कुछ काम विद्युत वितरण विभाग के मरम्मत कर्मचारियों के लिए निकल ही पड़ता है. एक अच्छा खासा भरा पूरा अमला है इसके लिए. उनका क्या होगा ?

न तार होंगे, न टूटेंगे, न चोरी होगी. वो बेचारे तो बेकाम हो जायेंगे नाम से भी.

न मरम्मत कर्मचारियों की नौकरी बचेगी, न तार चोरों की रोजी और न उनको पकड़ने वाली पुलिस की रोटी. बड़ा विकट सीन हो जायेगा हाहाकारी का. कितनी खुदकुशियाँ होंगी, सोच कर काँप जाता हूँ. विदर्भ में हुई किसानों की खुदकुशी की घटना तो इस राष्ट्रव्यापी घटना के सामने अपना अस्तित्व ही खो देगी हालांकि अस्तित्व बचाकर भी क्या कर लिया. कौन पूछ रहा है. सरकार तो शायद अन्य झमेलों में उन्हें भूला ही बैठी है.

चलो चोर तो फिर भी गुंडई की सड़क से होते हुए डकैती का राज मार्ग लेकर विधान सभा या संसद में चले जायेंगे, जाते ही हैं, सिद्ध मार्ग है मगर ये बेकार बेकाम हुए मरम्मत कर्मचारी और पुलिस. इनका क्या होगा ?

एक तार का जाना और इतनी समस्यायों से घिर जाना. कैसे पसंद करेगी मेरे देश की भोली और मासूम जनता !

योजना अधिकारियों से करबद्ध निवेदन है कि जो भी तय करना, इन सब बातों पर चिन्तन कर लेना.

मेरा क्या, मैं तो बस सलाह ही दे सकता हूँ. भारतीय हूँ, नि:शुल्क हर मामले में सलाह देना मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है. और हाँ, मैं कवि भी तो हूँ, बहुत ज्यादा जिद करोगे तो कविता सुना सकता हूँ. नेता होता तो कुछ वादे भी कर देता :

सबको यह चौकाती बिजली
बिन तारों के आती बिजली
चोर नापते सूनी सड़कें
उनकी रोजी खाती बिजली
कभी सुधारा जो करते थे
उनको धता बताती बिजली
कटियाबाजी वाले युग को
इतिहासों में लाती बिजली
सोच-सोच कर डर जाता हूँ
कैसे दिन दिखलाती बिजली.

◆◆◆

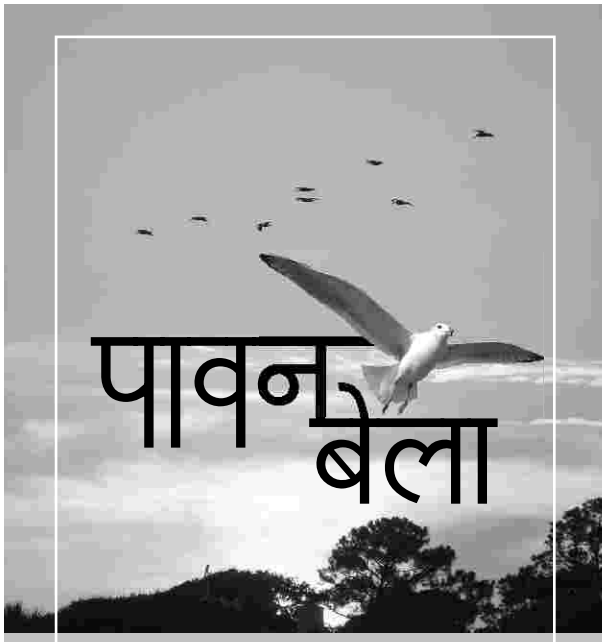

पावन बेला

नये वर्ष की पावन बेला पर
लगे मुस्काने माँ के अधर
इस बार वादा किया था
बेटा आयेगा लौट के घर
अबकी बार कसम दी थी
उसको अपने सर की
अबकी याद तो आयेगी
उसको अपने घर की
अम्मा, बापू, चाचा, चाची
सभी पुकारे फ़ोन पर
सब पर भारी पड़ गयी
डालर की विनिमय दर
बेटा बोला -
अबकी मुश्किल है में
क्या बताऊँ ये चक्कर
अगले साल करूँगा माँ
कोशिश वापस आने की घर।

■ *अवनीश कुमार गुप्ता, कैनेडा*

अखिलेश शुक्ल

जरूरत

चलो पीछे करो भाई इन सबको, दरवाजे पर भीड़ क्यों इकट्ठा कर रखी है। मरीजों को देखते हुए डॉ. प्रशांत ने अपने कम्पाउंडर से कहा। उसने डॉ. का इशारा पाते ही मरीजों को सरकारी डिस्पेंसरी के दरवाजे से बाहर धकेल दिया। उनमें से एक मरीज को डॉ. प्रशांत के पास लाते हुए वह बोला, सर, इसका इलाज तत्काल करना पड़ेगा। यह बहुत ही सीरियस है। यदि कहीं यह इलाज के बिना मर गया तो गांव की राजनीति को एक नया मुद्दा मिल जायेगा, साथ ही आपकी बड़ी फजीहत होगी। अत: इसे जरूर देख लें।

ठीक है, बुलाओ उसे। मैं देख लेता हूँ।

कम्पाउंडर ने मरीज को डिस्पेंसरी के अंदर ठेल दिया।

क्या नाम है तुम्हारा ?

जी रामू, रामू बल्द घिस्सू।

हूं , क्या तकलीफ है ?

डागदर साब, कब्ज बनी रहती है।

अच्छा, कल शाम को क्या खाया था ?

जी, कुछ नहीं।

कल सुबह ?

जी कुछ नहीं।

परसों दोनो टाईम ?

जी कुछ नहीं।

डॉ. प्रशांत ने गर्मी और भारी उमस में पसीना पौंछते हुए कहा, क्या करते हो ?

जी कुछ नहीं।

डॉ. ने आश्चर्य से प्रतिप्रश्न किया, गुजारा कैसे होता है ?

साब, गरीब आदमी हूँ। जब से फसल कटाई के लिए मशीनें आई हैं, भूखे मरने की नौबत आ गई है।

डॉ. प्रशांत ने उसका मर्ज ज्ञात कर लिया था। उन्होंने कम्पाउंडर को पचास रुपये का नोट देते हुए कहा, इसे ले जाओ भरपेट खाना खिलाओ, इसे दवा की नहीं भोजन की जरूरत है।

वह निविदा स्वीकृत हुई, निर्माण कार्य की तैयारी भी प्रारंभ हुई। लेकिन नाले का निर्माण शुरू नहीं हो सका।

वजह! सेठ जी ने नाले के किनारे, अपने विशाल भवन की चहारदीवारी के पास हनुमान जी की मूर्ति की स्थापना जो कर रखी थी।

परिश्रम का फल

एक था कौआ। बिलकुल उस प्राचीन कथा वाले कौये के समान। जिसमें प्यासा कौआ पानी पीने के लिए मिट्टी के बर्तन में स्थित पानी ऊपर लाने के लिए चौंच में कंकड़ दबाकर लाता है। कंकड़ बर्तन में डालता है। अपने अथक परिश्रम के पश्चात पानी ऊपर आने पर पीकर उड़ जाता है।

लेकिन इस बार ऐसा नहीं हुआ। गाँव के गरीब भोले-भाले एक कौये ने अपने परिश्रम के द्वारा मिट्टी के बर्तन को छोटे-छोटे कंकड़ो से भरा। बर्तन में पानी ऊपर आने पर एक अन्य राजनीति के ज्ञाता, चालाक और तिकड़मी कौये ने बलपूर्वक उसे डरा धमका कर बर्तन को अपने कब्जे में ले लिया। उसका पूरा जल पीकर अपनी प्यास बुझाई।

उड़ने से पूर्व मिट्टी के पात्र को तिपाई से गिराकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

पहला कौआ अब भी प्यास से तड़प रहा है।

स्थापना

वे नगर सेठ हैं, कई मिलों के मालिक, कारखाने चल रहे हैं, आढत है। उनका नगर में रुतबा है। स्थानीय संस्थाओं, पुलिस तथा प्रशासन में तूती बोलती है। किसी की भी क्या मजाल कि चूं चपड़ कर सके।

उस रविवार स्थानीय समाचार-पत्र में नगरपालिका का टेण्डर छपा था। उनके घर के सामने से बहने वाले अधूरे नाले के निर्माण कार्य पूर्ण करने की छोटी-सी निविदा थी वह।

वह निविदा स्वीकृत हुई, निर्माण कार्य की तैयारी भी प्रारंभ हुई। लेकिन नाले का निर्माण शुरू नहीं हो सका।

वजह! सेठ जी ने नाले के किनारे, अपने विशाल भवन की चहारदीवारी के पास हनुमान जी की मूर्ति की स्थापना जो कर रखी थी।

PUNJABI LEHRAN ENTERTAINMENT
पंजाबी लहराँ
RADIO AND TELEVISION
www.punjabilehran.com
Satinder Pal Singh Sidhwan
PRODUCER & DIRECTOR
www.punjabilehran.com
e-mail: info@punjabilehran.com
Tel: 416-677-0106 • Fax: 416-233-8617

MARKHAM
SWEETS & CATERING
LUNCH BUFFET
$8.50
PER PERSON
WE CATER TO PARTIES & SPECIAL OCCASIONS
7690 MARKHAM ROAD
UNIT 6C
MARKHAM, ONTARIO
L3S 3K1
TEL: 905-201-8085
FAX: 905-201-8976
MONDAY TO THURSDAY
10:00AM - 9:30PM
FRIDAY TO SATURDAY
10:00AM - 10:30PM
HWY 7
HWY 407
14th Street
McCowan Road
Markham Road
Highglen Road
Steeles Avenue East

ज़िन्दगी की बातें

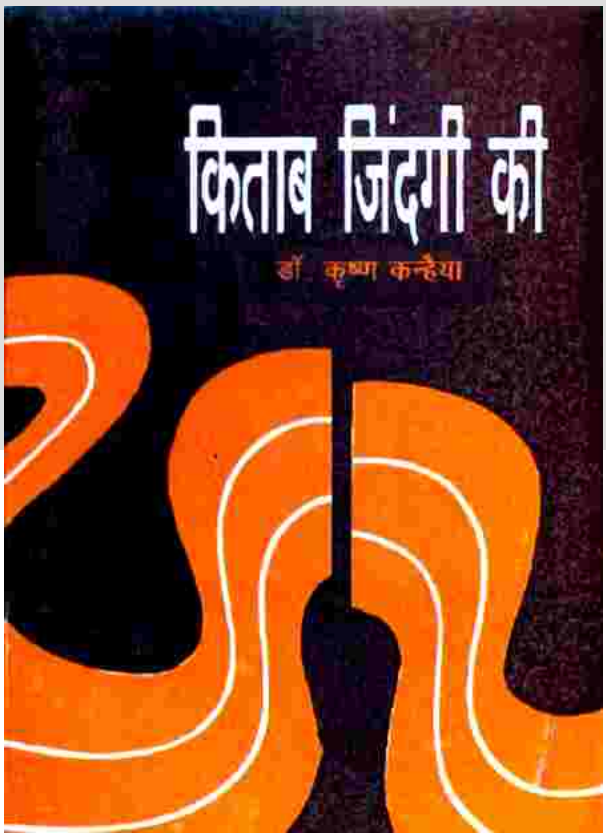

◆ *देवी नागरानी*

सोच को शब्दों में बुन कर, विचारों को भावनात्मक अंदाज़ में अभिव्यक्त करना एक सराहनीय रुझान है जो डॉ. कृष्ण कन्हैया की कृति 'किताब ज़िन्दगी की' में मिलता है. जिन्दगी तो हर कोई जीता है, पर उसे करीब से देखना, पहचानना, पहचान के उस अहसास के साथ जीना एक अनुभूति है. उस जिये गए तजुर्बात को कलम की जुबानी पेश करना लेखक के लिए एक स्वाभाविक प्रक्रिया है -- शायद कलम उसकी भावनाओं को जानकार, पहचानकर उसकी अभिव्यक्ति के साथ इन्साफ़ करती है क्योंकि वह अंतरमन की खामोशियों की जुबान है. आईये सुनते हैं उन आहटों को कलम की ज़ुबानी... *ज़िन्दगी एक बंद किताब है / जिसे खोलने की कोशिश तब सही है जब इसके पन्नों को दोनों तरफ से पढ़ा जाये.*

डॉ.कृष्ण कन्हैया जी ने सामजिक विषमताओं, राजनीतिक स्वार्थों, मानव मन की पीड़ा और विसंगतिओं पर करारी चोट करते हुये हर पहलू पर कलम चलायी है. उनमें से कुछ विषयों पर उनकी सुलझी हुई सोच दिल से दिल ताक को सन्देश पहुचाने में कामयाब हुई है, जिसमें 'समझौता, 'पैसा', 'एहसान' और 'अच्छाई' जैसे उन्वान शामिल हैं और उन्हीं में गहरे कहीं उनकी चिंतन-शक्ति और अनुभव की परिपक्वता सर्वत्र झलकती है. 'अच्छाई' में उनकी पारदर्शी विचारशैली, वस्तु व शिल्प अति उत्तम है. उनकी बानगी देखें - अच्छाई की परिभाषा : *दुनिया के मतलबी दौर में /बदलती जा रही है/ क्योंकि इसका प्रयोग लोग अपनी बेहतरी के लिए करते हैं.*

'इस्तेमाल' नामक रचना में डंके की चोट पर अभिव्यक्त किये उनके विचारों से हम रूबरू होते हैं, जहाँ लाचारगी को सियासती मोड़ पर खड़ा करते हुये वे कहते हैं- *'भले ही तुम्हारी मजबूरी है / पर औरों के लिए / रोज़गार का जरिया सियासती दाव-पेंच, या / अन्तर्राष्ट्रीय विवाद का विषय'*. इसी कविता के अंतिम चरण में बेबसी की दुर्दशा पर रोशनी डालकर किस खूबसूरत अंदाज़ में अपना विचार अभिव्यक्त करते हैं- *'पर / तुम्हें मिलेगा क्या / ज़िल्लत, बेचारगी, झूठे प्रलोभन हिकारत और असमंजस से भरी / ज़िन्दगी जीते रहने के सिवा?'* इंसान का मन अपने अन्दर दोनों भाव लिए हुये हैं - राम-रावण, गुण के साथ दोष, सच के साथ झूठ, न्याय के साथ अन्याय और उन्हीं से बनती-बिगड़ती विकृत तस्वीरों को, सामान्य प्राणी की दुर्दशा को, घर के भीतर और बाहर सियासती दखल के विवरण को उनकी कलम की नोक अपने-आपको अभिव्यक्त कर पाई है. अपने ही निराले ढंग से- *'लूट, डाका, खून, फिरौती अब / एक फैलता विकसित रोज़गार है जिसमें रक्षक और भक्षक दोनों / बराबर के हिस्सेदार हैं.'* जिन्दगी से जुड़े जटिल सवालात के सुलझे जवाब को अपनी रचना में प्रस्तुत करने में उनकी महारत प्रगतिशील है. पढ़ते-पढ़ते कहीं मन भ्रमित हो जाता है कि क्या ऐसा संभव है कि एक प्राणी, एक जीवन के दायरे में इतने सारे अनुभवों के मोड़ से गुज़रता हुआ जाये और अपने जिये गये उस तजुरबे को हंसते खेलते इन कागज़ के कोरे पन्नों पर इस माहिरता से उतारते जाये कि पाठक के सामने एक सजीव चित्र मानो चलने फिरने लगता है.

सशक्त शब्दों में समाज में फैले भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार, वाद-विवाद एवं उनकी विसंगतियों को उजागर किया है उन्होंने. सुलझे हुये विचारों से आज-कल और आने वाले कल की तस्वीर की मुकम्मल नींव रखी है. जिन्दगी का यह स्वरुप एक न्यायात्मक पक्ष प्रकट करता है. ज़िन्दगी आज, कल और आने वाले कल के तत्वों से बुनी जाती है, जहाँ 'आज' 'कल' का साक्षी था, पर वर्तमान की

बुनियाद पर टिके आनेवाले 'कल' का कौन साक्षी होगा- यह इतिहास बतलायेगा . 'घड़ी' नामक रचना भी इसी सन्दर्भ में पुख़्तगी बख्शाती है. अनजाने में रचनाकार का मन अनछुए पहलुओं को यूँ उजागर करता आ रहा है - सरल व आम बोल-चाल की भाषा में 'व्यंजन' नामक कविता को शब्दों में गिरफ्त करते हुये, एक समां बांधते हुए उनकी मनोभावना की बानगी पढ़े और महसूस करें *'बुराई का व्यंजन/ उत्तम, सबसे उत्तम भोजन है /क्योंकि जायकेदार होने के साथ-साथ सस्ते दामों पर सर्वत्र उपलब्ध है.'*

'झूठ' नामक कविता मन पर एक अमिट चित्र अंकित करती चली जाती है, शायद हर इक शख्स ने इसका ज़ायका कभी न कभी ज़िन्दगी में लिया होगा. कहते हैं सच को गवाहों की ज़रूरत नहीं पार झूठ भी अनेकों बार बाइज़्ज़त रिहा होता है. शब्दों का कलात्मक प्रयोग बहुत ही सुलझे हुए तरीके से पेश किया है.

अपनी सोच को एक शिल्पकार की तरह शब्दों में तराशकर कुछ ऐसे पेश करने में डॉ. कृष्ण कन्हैया कामयाब रहे हैं कि कभी, कहीं सोच को भी ठिठक कर सोचना पड़ जाता है, शायद सोच की भाषा बोलने लगती है, चलने लगती है, कभी तो चीखने लगती है. मन की बस्तियों के विस्तार से कुछ अंश, जो जिन्दगी जी कर आती है, वही अनगिनत अहसास, मनोभाव, उदगार और अनुभव लेखक ने खूब सजाये हैं अपनी जिन्दगी की किताब -'किताब जिंदगी की' में, जो अपने प्रयास से भी हमें अवगत करा रहे हैं कि लिखना मात्र मन व मस्तिषक का ही काम नहीं, पर सधा हुआ मनोबल भी उसमें शामिल हो तो कलम की स्याही और गहरा रंग लाती है.

उम्मीद है कि 'जिन्दगी की किताब' पाठकों से रूबरू होकर अपनी पहचान व उत्तम स्थान पायेगी.

पुस्तक का नाम : किताब ज़िंदगी की
लेखक : डॉ. कृष्ण कन्हैया
पन्नेः 104, मूल्यः 125 रु.
प्रकाशक : अक्षत प्रकाशन ए/134 हाऊसिंग कालोनी, मेन रोड, कंकरबाग़, पटना -800020, बिहार, भारत

R. Kakar Medicine Professional Corporation
Neo Unlimited Medical Assessments (NUMA)
Neo Pharmaceutical Ltd.
Neo EMR Psych

President, Consultant Psychiatrist
Dr. R Kakar M.B.B.S., M.D., L.M.C.C, F.R.C.P.(C)., M.C.S.M.E.
Voted by "Esteemed World Professional Association of Who's Who"
As Member of The Year
2008 - 2009

Address Suite 222, 3447 Kennedy Road
Agincourt, ON. M1V 3S1
Tel: 416-298-2090
416-298-2363
Fax: 416-298-3493
Cell: 647-271-4260
E-Mail: rvkakar@yahoo.ca
Office Hours
By Appointment

साभार पुस्तकें जो प्राप्त हुईं

Dr. Varsha Vyas B.D.S, D.M.D.
Dental Surgeon

Prompt Emergency care
All Aspects of Dental Care
Teeth Whitening
Evening and Saturday appointments
Hindi, Punjabi & Gujrati spoken

Please call for immediate appointment:

#6 ....55 Harvest Moon Drive, (Steeles & Birchmount)
Markham, Ont. L3R 4C3 Tel. No. : 905-947-0040

BMS graphics

Choose from a variety of
Birthday - Mundan - Janoi - Anniversary
Indian & western

Wedding Invitations
Choose your own language

शादी, मुंडन,सालगिरह, जनेऊ कोई भी हो शुभ संस्कार।
हर प्रकार के निमंत्रण के लिए हमारी सेवायें हैं सदा तैय्यार।।

21 Bradstone Square, Scarborough, (Toronto) Ontario M1B 1W1
Tel: 416.803.7949 416.292.7959 Fax: 416.292.7969
E-mail: bmsgraphics@rogers.com

भोपाल में तेजेन्द्र शर्मा का रचना पाठ एवं पुस्तक लोकार्पण

उर्मिला शिरीष

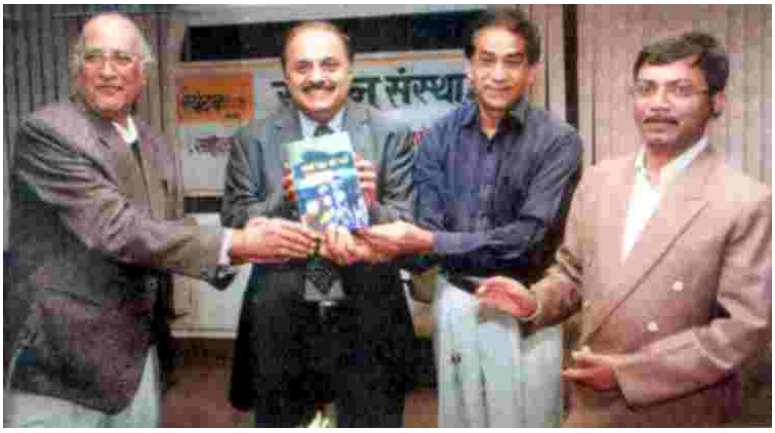

संस्कृति, साहित्य तथा ललित कलाओं के लिए समर्पित संस्था 'स्पंदन' भोपाल द्वारा विगत दिनों स्वराज भवन, भोपाल में लंदन के प्रतिष्ठित कथाकार तेजेन्द्र शर्मा की अब तक प्रकाशित संपूर्ण कहानियों के प्रथम खण्ड 'सीधी रेखा की परतें' का लोकार्पण समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तेजेन्द्र शर्मा ने इस संग्रह से अपनी बहुचर्चित कहानी 'कैंसर' का पाठ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार, चिंतक तथा शिक्षाविद् प्रो. रमेश दवे ने की। मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात व्यंग्यकार डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि थे श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव, आयुक्त जनसंपर्क मध्यप्रदेश शासन।

श्री मनोज श्रीवास्तव ने अपने लिखित आलेख का पाठ करते हुए तेजन्द्र शर्मा की कहानियों को ख़ालिस हिन्दुस्तानी कहानियां बताया। उनका मानना था कि तेजेन्द्र की कहानियां करुण हैं। उनके पात्र स्मृतियों में रहते हैं। मृत्यु की अनेक अंतरछवियां इन कहानियों में देखने को मिलती हैं।

डॉ. आनंद सिंह ने कहा कि तेजेन्द्र शर्मा सामान्य कहानीकार नहीं हैं। वे इंटेलिजेण्ट और नॉलेजेबल कहानीकार हैं। वे घटनाओं का तार्किक चित्रण करते हैं। वे ऐसी पृष्ठभूमि तथा परिवेश के रचनाकार हैं जिसकी तुलना अन्य किसी रचनाकार से नहीं की जा सकती। वे अपनी कहानियों में महीन आध्यात्मिकता का सृजन करते हैं। उनकी कहानियों में मानवता की समग्र वेदना तरल रूप में काम करती है। तेजेन्द्र शर्मा के कहानी पाठ करने के नाटकीय ढंग की भी उन्होंने तारीफ़ की।

मुख्य अतिथि डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी ने कहानी की परम्परा को विस्तार से रखा। प्रेमचन्द से लेकर नये कहानीकारों का ज़िक्र करते हुए उन्होंने प्रत्येक धारा की विशिष्टताओं को रेखांकित किया। डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी के अनुसार कहानी में किस्सागोई तथा भाषा की कलात्मकता तथा सौन्दर्यबोध होना चाहिये। तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में ये तत्व हैं। उन्होंने आगे कहा कि 'कैंसर' एक बड़ी कहानी बनते-बनते रह गयी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रतिष्ठित साहित्यकार प्रो. रमेश दवे ने कहा कि तेजेन्द्र शर्मा की कहानियां लोग और रोग के बीच कंट्राडिक्शन को सामने लाती हैं। उनकी कहानियां मृत्यु का बोध करवाती हैं। कैंसर कहानी हो या अन्य इनमें वैकल्पिक जीवन उभरकर आता है। कहानियां जो व्यक्ति और परिवार की संवेदना को लोक संवेदना में बदल देती हैं। कैंसर जैसी कहानियों में आई करुणा को ट्रांसफ़ॉर्म कर देना रचनात्मक लेखक का फ़र्ज़ बनता है। तेजेन्द्र अपनी कहानियों में मानसिक द्वन्द्वों को बख़ूबी निभाते हैं। उनकी सबसे बड़ी ताकत है भाषा का प्रयोग।

कार्यक्रम में अन्य गणमान्य अतिथियों के अतिरिक्त राजेश जोशी, हरि भटनागर, वीरेन्द्र जैन, राजेन्द्र जोशी, मुकेश वर्मा, स्वाति तिवारी, आशा सिंह तथा अल्पना नारायण भी उपस्थित थे। ◆

दीवाली उत्सव सम्पन्न

काव्य धारा, लन्दन का वार्षिक दीवाली उत्सव कंचन बैंक्विट हॉल, गेंटस हिल एसेक्स में मनाया गया। श्रीमती कंचन बक्शी ने हॉल को दीपों से सजा कर दीपों के इस त्यौहार का समां बाँधा और अनुकूल वातावरण प्रदान किया। इस उत्सव में हॉल खचाखच भरा था और कुछ लोगों को टिकट न मिलने पर निराश होना पड़ा।

इस वार्षिक उत्सव में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम का आरम्भ काव्य धारा के सचिव श्री प्रेम मौदगिल ने काव्य धारा के संक्षिप्त वर्णन से किया। काव्य धारा की अध्यक्षा पुष्पा भार्गव ने मेहमानों का स्वागत करके उनको संस्था के सभी सदस्यों से अनोखे ढंग से परिचित कराया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम लन्दन के जाने माने कवि श्री चमन लाल 'चमन' की अध्यक्षता में कवि-गोष्ठी हुई जिसमें संस्था के कवियों ने अपनी कवितओं का पाठ किया। श्रोताओं ने कविता पाठ की बहुत सराहना की। तत्पश्चात श्री चमन लाल 'चमन' जी ने अपनी रचनओं से श्रोताओं को प्रभावित किया।

इसके उपरान्त दो नन्हे कलाकार, शीना और आर्यन ने अपने नृत्य से दर्शकों का मनोरंजन किया। अंत में लन्दन के प्रसिद्ध संगीत कलाकार महेश और नीतू गढ़वी और उनकी संगत करने वाले कलाकारों ने अपने गायन और वादन से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। काव्य धारा की सह सचिव श्रीमति उर्मिला भारद्वाज ने सभी का धन्यवाद किया और दीवाली के विशेष प्रीतिभोज के पश्चात दीवाली की शुभकामनाओं के साथ यह उत्सव समाप्त हुआ।

A1 Sweets & Restaurant

100% Vegetarian Indian Cuisine

"...Where everything is A-1!"

Take-out
Dine-In
Catering

Big or Small we Cater to all!!!

Appetizers Main Dishes Side Orders Indian Breads South Indian Specialties Namkins Sweets Desserts Beverages

3300 McNicoll Avenue
(McNicoll & Middlefield)
Near Scarborough Sikh Temple

416-299-9424
1-866-422-1322

UNITED OPTICAL

WE SPECIALIZE IN CONTACT LENSES

- **Eye exams**
- **Designer's frames**
- **Contact lenses**
- **Sunglasses**
- **Most Insurance plans accepted**

Call: RAJ
416-222-6002

Hours of Operation

Monday – Friday: 10:00 a.m. to 7:00 p.m.
Saturday: 10:00 a.m. to 5:00 p.m.

6351 Yonge Street, Toronto, M2M 3X7
(2 Blocks South of Steeles)

श्रीमती साध्वी बाजपेयी जी को श्रद्धांजली

सरोज सोनी

स्वर्गीय साध्वी बाजपेयी 9 दिसम्बर 2009 को इस संसार से चली गयीं। उनका जन्म 13 फरवरी 1926 को अमृतसर में एक पारंपरिक परिवार में हुआ। वे बचपन से ही परिश्रमी, साहसी और मेधावी थीं। अपनी बहुमुखी प्रतिभा, कुशाग्रबुद्धि और कोमल स्वभाव से वे सहज रूप से एक नेता व युवा लड़कियों की मार्गदर्शक थीं तथा उन्होंने कई क्लबों का संगठन किया। 23 वर्ष की आयु में वे गर्ल गॉइड की सक्रिय अध्यक्ष बन गईं और 17 सालों तक बड़ी लगन से गर्ल गॉइड के मूल सिद्धांतों को भारत के विभिन्न गांवों, कस्बों व शहरों की युवा लड़कियों में जागृत किया। भारत तथा अन्य देशों में गर्ल गॉइड की शाखाओं का संगठन भी उन्होंने उत्साह से किया।

स्वर्गीय साध्वी जी अपने पति श्री सुशील बाजपेयी के साथ कनाडा में 1977 में आकर बस गए। शुरू के कुछ वर्ष वे मंगटन (नोवा सकोशिया) में रहे। जहाँ उन्होंने भारतीय संस्था 'भवानी जंक्शन' तथा 'नवरंग' नामक संस्था की स्थापना की जो अब भी सक्रिय है। 1982 में कनाडा सरकार ने उनके अन्तराष्ट्रीय स्तर के सामाजिक कार्यों में उत्साह व सांस्कृतिक सहयोग की सराहना की और उसी वर्ष 'कनाडा डे' के अवसर पर उन्हें 'वोमेन ऑफ़ द इयर' अवार्ड से सम्मानित किया।

1998 में स्वर्गीय साध्वी जी अपने परिवार के साथ किचनर वाटरलू (ओंटेरियो) के क्षेत्र में आकर बस गईं। यहाँ पर उन्होंने 'तरंग' नामक संस्था का संगठन किया। उन्होंने हिंदी के कई रोचक व सामाजिक नाटकों का निर्देशन, संगीत-नृत्य आदि का आयोजन किया तथा तमाम धनराशि अर्जित करके अनेकों संस्थाओं जैसे हार्ट एंड स्ट्रोक फाउन्डेशन, कैनेडियन कैंसर सोसाइटी इत्यादि को दान में दी।

पिछले कई सालों से वे अस्वस्थ थीं। उन्हें फिब्रोसिस ऑफ़ लंग्स बीमारी थी, जिस कारण वे जहाँ भी जातीं व्हील चेयर पर ऑक्सीजन के यन्त्र के साथ जाती। उनकी शारीरिक बीमारी उनके मनोबल, उत्साह, कला-सर्जन को हरा नहीं सके। उनका दृष्टिकोण धर्म निरपेक्ष और उदार था। इन्ही उदार भावनाओं से प्रभावित होकर कनाडा के जनरल ने उन्हें सन् 1995 से 'केअरिंग अवार्ड' प्रदान किया।

स्वर्गीय साध्वी जी अद्‌भुत व विनम्र, पर-हित चिन्तक, संगठनकर्ता, सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यों में पूर्ण समर्पित एवं मानवहित के लिये सबको प्रोत्साहित करने में सदा तत्पर रहती थीं। वे अपने परिवार के अलावा स्थानीय भारतीय समाज के लोगों से बहुत प्यार करती थीं। अपने भरे-पूरे परिवार को छोड़ कर साध्वी जी इस संसार से चली गई। ईश्वर उनकी आत्मा को परम शान्ति दे और शोकाकुल परिवार को यह भीष्म दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे। उनकी मधुर याद सदा रहेगी।

13 फरवरी 1926 ◆ 9 दिसम्बर 2009

Mistaan Catering & Sweets Inc.

Specializing in Bengali Sweets We do catering for Weddings & Parties

मिष्ठान की मिठाइयाँ

मिष्ठान की मिठाइयाँ
खाओ रसगुल्ले और रस मलाइयाँ

Our Daily Take-out Foods include:

Channa Bhatura	Aloo Ghobi
Malai Kofta	Matter Paneer
Channa Masala	Chicken Masala
Chicken Tikka	Tandoori Chicken
Butter Chicken	Goat Curry

& many more delicious items

अब आप बैठ कर खाने-पीने का आनन्द ले सकते हैं

460 McNicoll Avenue, North York, Ontario M2H 2E1

Visit Our Website: www.mistaan.com

Telephone: (416) 502-2737 Fax: (416) 502-0044

RAMA BAHRI

416-565-2596

Win a BMW car

When you buy or sell through me you have a chance to win a new BMW

GTA Realty Inc., Brokerage
Bus: 416.321.6969
Fax: 416.321.6963
206 - 1711 McCowan Rd., Scarborough, ON. M1S 3Y3

HomeLife GTA
GTA Realty Inc., Brokerage

स्वागत नवीन वर्ष

स्वागत नवीन वर्ष, स्वागत नूतन वर्ष!
मोदित समस्त लोग, सबमें अतीव हर्ष!
अचला, व्योम, सिन्धु, अचल सभी हों अप्रदूषित,
वनस्पति, औषधि, पशु, पक्षी, नर रहें मोड़ता,
नहीं हो देशों में परस्पर अमर्ष!
ब्रह्मांड के ग्रहों की स्वयं धुरी पर हो स्थित,
दिवाकर, प्रभाकर, उडुगन की हो निर्मल द्युति,
ज्ञान-विज्ञान में हो अति उत्कर्ष!
सब सम्प्रदाय आपस में करें सच्चा प्यार,
बर्ताव हो मानव का जैसे जग परिवार,
समस्या हल होकर विचार-विमर्श,
स्वागत नवीन वर्ष, स्वागत नूतन वर्ष!

भारतेन्दु श्रीवास्तव, कनाडा

नव वर्ष

धवल धवल धरा सकल नव वर्ष का चरण नवल
जग शांति हो अपनी सफल न भ्रान्ति हो दु:ख जाए टल
वसुधा सुधा हो बाँटती सुरभित दिशाएं हो विमल
हर अधर पर शुभ गान हो न दु:ख हो न हो गरल.

लें शपथ इस वर्ष में निज स्वार्थ को कर दें विफल
पथ सत्य का अपनाए सब मन स्वच्छ हो जैसे सलिल
आतंक का हो अंत सब लिखें प्रेम विश्व के पटल
यदि देवता न बन सकें इंसान ही बनना सफल.

करता हिया ये कामना विश्वास मेरा हो अटल
जग में सदा सौहार्द हो मेरी प्रार्थना होवे प्रवल
आये शरण सुख दें उसे दु:ख बांटके हर्षे सकल
न अश्रु हो किसी नयन में हँसते रहें जैसे कमल.

भगवत शरण श्रीवास्तव 'शरण', कनाडा

क्रमांक ५

● चित्रकार: अरविन्द नारले ● कवि: सुरेन्द्र पाठक

इक जंगल में खड़ा हुआ है, देखो बब्बर शेर
सारे जंगल में इस जैसा, कोई नही दिलेर
हाथी, घोड़े, गैंडे, भैसें, इससे ताकतवर
इसके आगे कोई न ठहरे, सबको जान का डर

छुरियों जैसे दात नुकीले, खड़ा हुवा मुँह फाड़
मौत नज़र आ जाये उसको, मारे जिसे दहाड़
नज़र पड़े जो करे शिकार, नही मानता हार
हाथ लगा जो उसको खाया, नही किसी से प्यार
कहें लोग जंगल का राजा, बिन कोई कानून
जहां दहाड़े जंगल में जा, उड़ता वहीं सुकून

चित्र उलटा कर देखो बैठा, है इसी का भाई
मृगशाला पे आसन मारे, ऊपर नजर चढ़ाई
तप करने में लगा हुवा है, आगे आग जला
हाथ रखे घटनों के ऊपर, प्रभु में ध्यान लगा
स्वभाव से हैं दोनों शेर, पर शकलें जुदा-जुदा
नहीं मौत का डर दोनों को, दोनों बेपरवाह
बेख़बर दुनियां से दोनों, इक पशु इक इन्सान
अपनी-अपनी जगह पे देखो, दोनों बड़े महान
इक मस्ती मे सोया रहता, सारा-सारो दिन
दूजा भी मस्ती मे बैठा, माया के सुख बिन
बन, पहाड़ में इनका बासा, ना वस्तु ना कोई मकान
प्रचण्ड मौसम से बचने हेतु, ढूंढे गुफा, औ' चटान
एक जीव को मार के खाये, दूजा जान बचाये
शेर न मारे, मरे भूख से, योगी धर्म निभाए
चिन्तन
भिन्न-भिन्न पशुओं के अंदर, अच्छे-अच्छे भरे है गुण
निज बुद्धि की चोंच बनाकर, इन गुणों को लो तुम चुन

CENTENARY OPTICAL

For A Better View of The World

We Offer Affordable Prices in a Wide Variety of Fashionable Frames & Lenses

Designer Frames,
Contact Lenses: Colored, Toric, Bifocal
Eye Exams on Premises,
Brand Name Sun Glasses
Most Insurance Plans Accepted

416-282-2030

2864 Ellesmere Rd, @ Neilson Scarborough, Ontario M1E 4B8

RAVI JOSHI
Licensed Optician &
Contact Lens Fitter

Learn Hindi!

सु+भाषा SU-BHASHA KIDS HINDI

Magnetic board letter set

INTRODUCTORY SET / LEVEL 1

Includes:
* 8.5" x 11" metal board
* 49 Devanagari magnatic letters
* Sound chart on back of board

For ages 4 and up

KIDS HINDI.COM
SUBHASHA.COM
spanchii@yahoo.com
Ph. 1-508-872-0012

Hindi Pracharni Sabha

Membership Form

For Donations we will provide TaxReceipt

Annual Subscription: **$25.00 Canada and U.S.A.**

U.K. 25.00 Pounds.

Donation: **$ _____**

Method of Payment: **Cash, cheques and drafts payable to "Prachani Sabha"**

Name:_____

Address: _____

_____

Telephone: Home: _____

Business: _____

e-mail: _____

_____

Contact in Canada:

Hindi Pracharni Sabha
6 Larksmere Court
Markham, Ontario L3R 3RI
Canada

e-mail: hindichetna@yahoo.ca

Contact in USA:

Dr. Sudha Om Dingra
101 Guymon Court
Morrisville, North Carolina
NC27560, USA

e-mail: ceddlt@yahoo.com

CARPET PLUS

SAVE UP TO 70%
LUXURIOUS CARPETS
ORIENTAL RUGS

Commercial &
Residential
Installations

Broadloom

F •***Installation***
R •***Underpad***
E •***Delivery***
E •***Shop at Home***

Vinyl Tiles

Tel: (416) 661 4444
Tel: (416) 663-2222
Fax: (905) 264-0212

180 Winges Rd. Unit 17-19
Woodbridge,
Ontario L4L 6C6

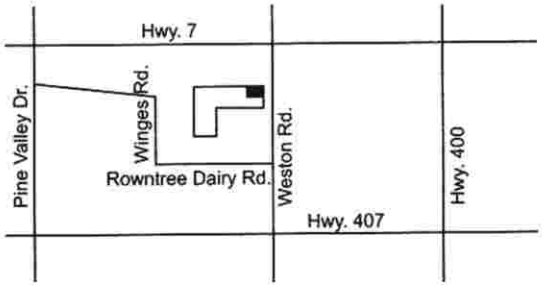

PINS FLAGS

Finest Source of :

International Flag Pins

Campaign Buttons

Friendship Pins

Embroided Crests (Patches) of All Countries

International & Provincial Flags of all sizes, Souvenirs

Mini Banners & Keychains of all countries available

Custom work available for Pins, Buttons, Crests and Flags
At Factory Direct Prices Free Set up & Shipping

We carry more than 500 Titles each of Pins, Flags & Crests in stock

Pinsnflags.com Inc., 83 Queen Elizabeth Boulevard, Toronto, Ont., M8Z 1M5

Tel: 416-599-3524 Fax: 416-599-3525

Toll Free: 1-877-322-4771 E-Mail: veena@pinsnflags.com

www.pinsnflags.com

मेरे मित्रो! हिन्दी वोलो, अपने वच्चों को हिन्दी सिखाओ! अपनी भाषा और संस्कृति को वचाओ!1